

INTERNATIONAL MAGAZINE

ब्रह्म मु दीसै ब्रह्म सुणीअै एकु एकु वखाणीअै ॥  
आत्म पसारा करण हारा प्रभ बिनां नही जाणीअै ॥

**आत्म मार्ग**



November 2019

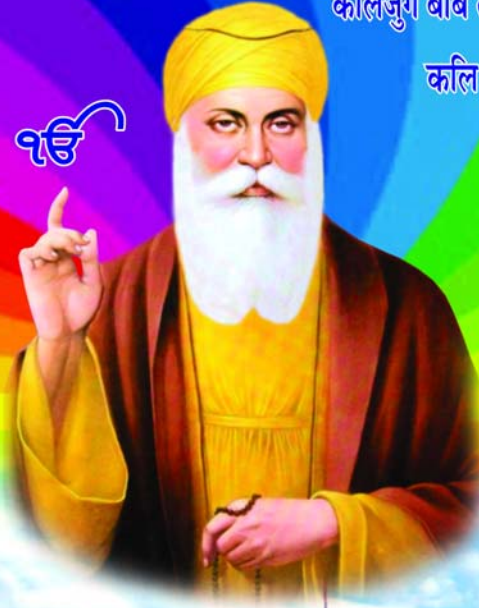
ੴ

**विशेषांक**

ੴ साहिब श्री गुरु नानक देव जी के ੴ  
550वें प्रकाश गुरुपर्व को समर्पित

कलिजुध बावे तारिआ सतिनामु पढ़ि मंत्र सुणाइआ ।

कलि तारण गुरु नानक आइआ



गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब

**महान गुरमति रूहानी समागम**  
**30-31 अक्टूबर 1-2-3 नवम्बर 2019**

**रतवाड़ा साहिब (न्यू चण्डीगढ़)**

# कार्यक्रम

नोट: 30 अक्टूबर से 3 नवम्बर तक रोजाना के कार्यक्रम

**30 अक्टूबर ( बुधवार )**

**समूह शहीदों की याद**

नाम सिमरन	ब्रह्म मुहूर्त 3.00 से 3.45
नित्तनेम	3.45 से 4.30
आसा दी वार	4.30 से 6.00
गुरु शब्द विचार - बाबा लखबीर सिंह जी	6.00 से 7.00
कथा कीर्तन तथा गुरमति विचारें	प्रातः 9.00 बजे से सायं 3.30 बजे
रात्रि का समागम	5.30 बजे से रात्रि 10.00 बजे
रहिरास, अरदास तथा गुरमति विचारें	5.30 से 6.15
कथा कीर्तन तथा गुरमति विचारें	6.15 से 10.00

**31 अक्टूबर ( बृहस्पतिवार )**

- ★ पाँचों प्यारों की पावन स्मृति ( भाई साहिब भाई दया सिंह जी, भाई साहिब भाई धरम सिंह जी, भाई साहिब भाई हिम्मत सिंह जी, भाई साहिब भाई मोहकम सिंह जी, भाई साहिब भाई साहिब सिंह जी )
- ★ श्री मान सन्त बाबा वरियाम सिंह जी रतवाड़ा साहिब वालों की पावन स्मृति

**1 नवम्बर ( शुक्रवार )**

- ★ सिक्ख इतिहास में महिलाओं द्वारा की गई सेवाएँ, सिमरन, परोपकार व कुर्बानियाँ
- ★ रतवाड़ा साहिब वाले महापुरुषों की जीवन संगिनी सम्माननीया माता रणजीत कौर जी की पावन स्मृति

**2 नवम्बर ( शनिवार )**

**साहिब श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के  
पावन गुरुगद्दी दिवस**

**3 नवम्बर ( रविवार )**

श्री गुरु नानक देव जी के  
पाँच सौ पचास वषीय प्रकाश गुरुपर्व के सम्बन्ध में

नाम सिमरन	ब्रह्ममुहूर्त 3.00 बजे से 3.45 बजे
नित्तनेम	3.45 - 4.30
आसा दी वार	4.30 - 6.00
गुरु शब्द विचार - बाबा लखबीर सिंह जी	6.00 - 7.00
कथा कीर्तन तथा गुरमति विचारें	प्रातः 7.00 से सायं 3.30
सारी सम्पूर्णता की अरदास तथा हुक्मनामा	

आँखों के निःशुल्क आप्रेशन 28-29-30 अक्टूबर

समागम के दौरान निःशुल्क मैडिकल शिविर

अमृत संचार 1-2 नवम्बर प्रातः 10.00 बजे

गुरु के लंगर निरन्तर वितरित होंगे

लाइव टैलीकास्ट ( सीधा प्रसारण )

Apps: Ratwara Sahib Ji, Ratwara Sahib TV

Websites : www.ratwarasahib.in, www.ratwarasahib.org

You Tube : www.youtube.com/babalakhbirsingh

Facebook : www.facebook.com/ratwarasahib1

## आत्म मार्ग

वर्ष चौबीसवां - अंक दसवां, नवम्बर 2019  
गुरद्वारा ईशर प्रकाश रतवाड़ा साहिब

### संचालक

श्रीमान सन्त बाबा वरियाम सिंह जी महाराज ( ब्रह्मलीन )  
तथा संत माता ( बीजी ) रणजीत कौर जी ( ब्रह्मलीन )

#### चेयरमैन

सन्त बाबा लखबीर सिंह जी

#### प्रबन्ध सम्पादक

भाई ( डा. ) सुखविंदर सिंह

#### एडिटर-इन-चीफ

सन्त बाबा हरपाल सिंह जी

#### मुख्य सम्पादक

डा. जगजीत सिंह

### मासिक पत्रिका न पहुँचने सम्बन्धी पूछताछ

यदि आपको माह की 15 तारीख तक आत्म मार्ग पत्रिका प्राप्त नहीं हो पाती है तो आप कृपया निम्नलिखित सम्पर्क नम्बरों पर कार्यालय समय प्रातः 10.00 बजे से सायं 6.00 बजे तक सम्पर्क करने की कृपा करें -

सम्पर्क न. - 84378-12900, 94172-14391,  
94172-14379

Email : atammarg1@yahoo.co.in

Postal Address for any Enquiry,  
Money Order's :

### 'ATAM MARG' MAGAZINE

Gurdwara Ishar Parkash, Ratwara Sahib  
(New Chandigarh) P.O. Mullanpur  
Garibdas, Teh. Kharar, Distt. S.A.S.  
Nagar (MOHALI) - 140901, Pb. India

### SUBSCRIPTION - शुल्क ( देश )

वार्षिक	आजीवन सदस्यता	प्रति कापी
300/-	3000/-	30/-
320/-	3020/-	(For outstation cheques)

### SUBSCRIPTION FOREIGN ( विदेश )

	Annual	Life
U.S.A.	60 US\$	600 US\$
U.K.	40 £	400 £
Canada	80 Can \$	800 Can \$
Australia	80 Aus \$	800 Aus \$

प्रकाशन के समस्त अधिकार सुरक्षित हैं।

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक सन्त बाबा हरपाल सिंह जी ने 'आत्म मार्ग' जै आफ सैट प्रिंटरज, 905 इन्डस्ट्रियल एरिया, फेज-2, चण्डीगढ़ से छपवा कर मुख्य कार्यालय 'आत्म मार्ग' रतवाड़ा साहिब, डाकखाना मुल्तांपूर, तहसील खरड़, एस.ए.एस. नगर ( मोहाली ), पंजाब से प्रकाशित किया।

Please visit us on internet at :-  
For Atam Marg Email : atammarg1@yahoo.co.in,  
Website & Live video -

www.ratwarasahib.in  
www.ratwarasahib.org } (Every sunday)

Email: sratwarasahib.in@gmail.com

### विदेशों में आत्म मार्ग की शाखाएँ

अमेरिका - बाबा सतनाम सिंह अटवाल

फोन तथा फैक्स : 001-408-263-1844

कैनेडा - भाई सरमुख सिंह पंनू, वैनकूवर

फोन : 001-604-433-0408

भाई तरसेम सिंह बेंस - मोबाइल 001-604-862-9525

फोन : 001-604-288-5000

भाई जसबीर सिंह राणू - फोन : 001-604-589-9189

इंग्लैंड - बीबी गुरबख्शा कौर तथा भाई जगतार सिंह जग्गी

फोन:0044-121-200-2818 फैक्स :0044-121-200-2879,

भाई अरविंदर सिंह ( राज ) मोबाइल:0044-7968734058

आस्ट्रेलिया : बीबी जस्मीत कौर: मोबाइल-0061-406619858

### रतवाड़ा साहिब की संस्थाओं के सम्पर्क नम्बर

\* आत्म मार्ग मैगज़ीन ( पंजाबी, हिन्दी तथा अंग्रेजी )

9417214391, 9417214379, 8437812900

\* गुरु गोबिंद सिंह विद्या मन्दिर सीनियर सैकण्डरी स्कूल  
(CBSE) - 0160-2255003

\* माता साहिब कौर मुफ्त सिलाई सेंटर - 96461-01996

\* सन्त वरियाम सिंह मैमोरियल पब्लिक सीनियर सैकण्डरी स्कूल  
(PSEB) अंग्रेजी माध्यम - 95920-55581

\* सन्त वरियाम सिंह चैरिटेबल अस्पताल ( मुफ्त )

98786-95178, 92176-93845

\* इंटरनेशनल डिवाइन स्कूल आफ़ नर्सिंग -

94172-14382

\* इंटरनेशनल डिवाइन कालेज आफ़ ऐजूकेशन ( बी. एड. )

94172-14382

\* अकाल वृद्ध आश्रम ( मुफ्त ) 98157-28220

### विशेष जानकारी के लिए

श्री मान जी - 98551-32009

श्री आखण्ड पाठ साहिब बुकिंग - 94647-12900

आडियो-वीडियो लाईब्रेरी - 98728-14385,

98555-28517

केवल टी.वी. नेटवर्क - 94172-14385

अन्य सम्पर्क नम्बर

98889-10777, 96461-01996, 9417214381

## विषय-सूची

1. सम्पादकीय 5  
( डा. ) भाई सुखविन्दर सिंह
2. बारहमाहा 7  
श्री मान सन्त बाबा वरियाम सिंह जी
3. श्री गुरु नानक देव जी 13  
श्री मान सन्त बाबा वरियाम सिंह जी
4. सभ ते वडा सतिगुरु नानकु जिनि कलि राखी मेरी।। 36  
सन्त बाबा हरपाल सिंह जी
5. गुरु नानक आगमन 39  
डा. भाई वीर सिंह
6. गुरु नानक देव जी सुल्तानपुर लोधी में 42  
डा. जगजीत सिंह
7. गुरु बाबा जी के सात सिद्धान्त 45  
श्री मान सन्त बाबा वरियाम सिंह जी
8. गुरु नानक देव जी की अरब फेरी के वृत्तान्त 49  
सय्यद पृथीपाल सिंह
9. वार्षिक समागम के लिए सवारियों के रूट तथा सम्पर्क नम्बर 52
10. विशेष जानकारी - बैंक खाता, आत्म मार्ग मैगजीन सदस्यता 57  
प्रारूप, अस्पताल जानकारी, तथा पुस्तक सूची

## सम्पादकीय कलि तारणि गुरु नानक आइआ

( डा. ) भाई सुखविन्दर सिंह

समय-समय इस मृत्युलोक पर जन साधारण को प्रकाश प्रदान करने के लिए गुरु, पीर, पैगम्बर, औलिया आए और उन्होंने पृथक-पृथक भूखण्डों और मजहबों में अवतार धारण करके पृथक-पृथक भाषाओं और बोलियों में ईश्वरीय इल्हाम को जन साधारण में बाँटा जिसके फलस्वरूप जन साधारण ने उनसे कुछ प्रकाश प्राप्त किया और उनके द्वारा दर्शाई गई युक्ति को अपनाया लेकिन फिर भी बहुत कुछ ऐसा करना अभी शेष था जिसके द्वारा मृत्युलोक में रहने वाला प्रत्येक प्राणी पूर्णतः को प्राप्त कर सके। यह भी तथ्यपरक बात है कि पूर्णता को तभी प्राप्त किया जा सकता है जबकि हम उस मार्ग में आने वाली अलामतों, रुकावटों व गिरावटों को दूर कर सकें।

अब जन साधारण को आवश्यकता थी सबसे बड़े की, जो कि अतीत में आ चुकी कमियों को दूर करके बड़े उद्देश्यों की पूर्ति कर सके। इस बड़े उद्देश्य को लेकर ही वाहिगुरु जी ने स्वयं जन साधारण के उद्धारार्थ सगुण स्वरूप धारण करके श्री गुरु नानक देव जी के स्वरूप में अवतार धारण किया -

**आपि नराइणु कला धारि जग महि परवरियउ ॥**

अंग - 1395

वह परम शक्ति सबसे बड़ी है और बड़े उद्देश्यों की पूर्ति बड़ों ने ही करनी होती है -

**सभ ते वडा सतिगुरु नानकु जिनि कल राखी मेरी ॥**

अंग - 750

आपने ऐसा उद्देश्य व ऐसा मिशन स्थापित करना था जिसमें -

**सगल समूह लै उधरे नानक पूरन ब्रहमु पछाता ॥**

अंग - 532

कल्युग के घोर अन्धकार में डूबी हुई जनता को प्रकाशमयी करने के लिए सतगुरु जी ने अवतार धारण करके भूले-भटकों को रूहानी उपदेश देकर सत्य का मार्ग दृढ़ करवाया।

वास्तव में दृश्य व अदृश्य संसार की समझ तथा सार्थकता का ज्ञान, मानवता मे से अलोप हो चुका था। श्री गुरु नानक देव जी द्वारा दर्शाई गई युक्ति दृश्य तथा अदृश्य संसार तथा शरीर व रूह की सुमेलता है। एक तरफ तो सुखों व दुखों से भरा हुआ यह दृश्य संसार है, जिसे हम मृत्युलोक का नाम देते हैं, जबकि दूसरी तरफ वह अदृश्य संसार है जिसे हम परलोक का नाम देते हैं। इसी प्रकार इधर एक शरीर है और दूसरी तरफ शरीर में बसने वाली रूह है। अब इस मनुष्य को लोक व परलोक की समझ शरीर के दायित्वों की पहचान तथा रूह की खुराक व रूह की पहचान करवानी ही बहुत बड़ा कार्य था। इस कार्य की सिद्धि हेतु ही स्वयं निरंकार ने श्री गुरु नानक के रूप में स्वयं को प्रकट किया।

संसार के अन्दर रहते हुए इस शरीर को सफल कैसे करना है, संसार के साथ जुड़े हुए प्रत्येक क्षेत्र की सार्थकता को कैसे बनाए रखना है, इन बातों का सच्चा ज्ञान गुरु जी द्वारा करवाया गया। वहमों, भ्रमों, भेषों व पाखण्डों रहित जीवन धारण करने का उपदेश दृढ़ करवाया गया। सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक व बन्धुत्व भावना वाले जीवन की समझ आप जी ने करवाई। प्रत्येक क्षेत्र की अगुवाई हमें सच्चे पातशाह जी की वाणी तथा उनके उपदेशों में से प्राप्त होती है। अदृश्य संसार का सम्बन्ध इस रूह के साथ है और इस रूह की खुराक है - 'नानक कै घरि केवल नाम'। इस 'नाम' की कृपा आप जी ने गुरुमन्त्र तथा मूलमन्त्र के रूप में करके 'रूह' को हमेशा के लिए ही आजाद करवाने का ढंग हमें प्रदान किया। रूह की पूर्णता के लिए आपने 'कलिजुग महि

कीरतन परधाना' तथा 'आखा जीवा विसरै मरि जाउ' के सिद्धान्तों का निरूपण किया। इस शरीर की सफलता तथा रूह को आजाद करवाने के लिए ही श्री गुरु जी ने अवतार धारण किया। जन्म-जन्मान्तरों के आवागमन से छुटकारा दिलाने के लिए नाम की दात प्रदान की। प्रभु-भक्ति, किरत करना, नाम सिमरन तथा मिल बाँट कर ग्रहण करने का सिद्धान्त प्रदान किया। इसके साथ ही संगत और पंगत की परम्परा को शुरू करके शरीर और आत्मा की सार्थकता को प्रकट किया। सच्चे पातशाह जी ने मृत्युलोक में विचरण करने वाले अनेकों भूले भटके लोगों को अन्ध विश्वासों, भ्रमों और शंकाओं में से बाहर निकाल कर उन्हें सत्य के मार्ग पर चलाया। गिरावटी वृत्ति वालों जैसे कौड़ा राक्षस, सज्जन ठग, भूमिया चोर आदि को उच्च स्तर की समझ प्रदान करके उन्हें 'भाई' की उपाधि प्रदान कर दी।

आप जी के ज्ञान रूपी उपदेश तथा आपके द्वारा रचित गुरुवाणी जन साधारण का मार्ग दर्शन हमेशा ही करते रहेंगे। इस पावन गुरुवाणी के आधार पर जीवन जीकर अपने उद्धार का माध्यम बनाया जा सकता है लेकिन आवश्यकता इस बात की है कि हमें गुरु उपदेशों पर शत प्रतिशत विश्वास आ जाए। तर्कों, विवादों तथा मनमति का त्याग करके तथा गुरु की मति को शत प्रतिशत धारण करके हम बड़े उद्देश्यों की पूर्ति की तरफ बढ़ सकते हैं।

यह हमारी खुशकिस्मत ही है कि सतगुरु सच्चे पातशाह जी के 550वें गुरु पर्व हमारे जीवनकाल में आ रहे हैं। सारे संसार में निवास कर रहे गुरु नानक नाम लेवा श्रद्धालुजन इस गुरुपर्व को बहुत ही प्यार व श्रद्धापूर्वक मना रहे हैं। यदि गुरु उपदेशों को दृढ़तापूर्वक अपनाने का उपाय हम कर सकें तो फिर गुरु जी 550वें प्रकाश पर्व को मनाने की सार्थकता और भी बढ़ जाती है, अन्यथा सबने परम्परागत तौर पर अपना योगदान करना ही है लेकिन श्रद्धा और प्यार वाले, अपनी झोलियों को भरते हुए गुरु जी की खुशी के पात्र अवश्य ही बनेंगे। आप सबको 550वें प्रकाश पर्व के लिए कोटि-कोटि मुबारकबाद। आओ! हम सब प्रार्थना करें -

**गिआनु धिआनु किछु करमु न जाणा  
सार न जाणा तेरी॥  
सभ ते वडा सतिगुरु नानक**

**जिनि कल राखी मेरी॥**

**अंग - 750**

वही हमारे लोक व परलोक के रक्षक हैं और वही हमारा उद्धार करने में समर्थ हैं -

**कलि तारणि गुर नानक आइआ।**

इसी आदर्श की पूर्ति हेतु सारे संसार में नानक नाम लेवा संगत श्री गुरु जी के प्रकाश पर्व को श्रद्धा व प्यार सहित देश व विदेशों में मना रही है। सिक्ख कौम तथा पंजाब सरकार द्वारा यह गुरु पर्व विशाल स्तर पर सुल्तानपुर लोधी तथा डेरा बाबा नानक की पावन धरती पर आयोजित किए जा रहे हैं। इसी प्रकार से रतवाड़ा साहिब में 30-31 अक्टूबर तथा 1-2-3 नवम्बर को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की छत्रछाया में ट्रस्ट के वर्तमान मुखी सन्त बाबा लखबीर सिंह जी की अगुवाई में समूह संगत के सहयोग के द्वारा मनाए जा रहे हैं। इन पाँच दिवसीय समागम में गुरुमति के पृथक-पृथक गूढ़ गम्भीर विषयों पर गुरुमति की विचारें, नाम रसिक सन्तजनों, कथावाचकों, विद्वानों तथा रागी-ढाडी बन्धुओं द्वारा की जाएँगी। 30 अक्टूबर को सारे शहीदों की याद, 31 अक्टूबर को पाँच प्यारों तथा प्यारे महापुरुष (ब्रह्मलीन श्रीमान सन्त बाबा वरियाम सिंह जी) की याद, 1 नवम्बर को गुरु घर में महिलाओं या बहिनों की बेमिसाल कुर्बानियों पर विचार एवं महापुरुषों की जीवन संगिनी सम्माननीया सन्त माता रणजीत कौर जी की याद, 2 नवम्बर को धन्य श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी का गुरुगद्दी दिवस तथा 3 नवम्बर दिन इतवार को प्रातः 3.00 बजे से सायं 4.00 बजे तक श्री गुरु नानक देव जी के 550वें प्रकाश पर्व मनाए जाएँगे। समागम के सुव्यवस्थित प्रबन्धों को अन्तिम स्वरूप प्रदान किए जा रहे हैं ताकि आने वाले श्रद्धालुजनों को किसी भी प्रकार की मुश्किल पेश न आए।

आत्म मार्ग का यह नवम्बर का अंक साहिब श्री गुरु नानक देव जी के 550 वें प्रकाश गुरुपर्व को ध्यान में रखते हुए 'श्री गुरु नानक देव जी - विशेषांक' प्रकाशित किया जा रहा है। इसमें सारी सामग्री अनुभवी विचारवानों द्वारा रचित ही प्रकाशित की जा रही है। उम्मीद है कि पाठकजन इसे पढ़कर लाभ प्राप्त करेंगे।



## मंघरि ( मार्गशीष )

( मंघरि महीने की सक्रान्ति - 16 नवम्बर, दिन शनिवार )

सन्त बाबा वरियाम सिंह जी  
संस्थापक वि. गु. रू. मिशन

मंघरि माहि सोहं दीआ हरि पिर संगि बैठड़ीआह।  
तिन की सोभा किआ गणी जि साहिबि मेलड़ीआह।  
तनु मनु मउलिआ राम सिउ संगि साध सहेलड़ीआह।  
साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह।  
तिन दुखु न कबहू उतरै से जम कै वसि पड़ीआह।  
जिनी राविआ प्रभु आपणा से दिसनि नित खड़ीआह।  
रतन जवेहर लाल हरि कंठि तिना जड़ीआह।  
नानक बांछै धूड़ि तिन प्रभ सरणी दरि पड़ीआह॥

अंग - 135

वाहगुरू जी ने सृष्टि की रचना अपनी मौज में की, करोड़ों सूर्य, करोड़ों चन्द्रमा, असंख्य तारे-सितारे, असंख्य ब्रह्मांड, कितनी ही विभागों, कितनी ही बाणी, कितनी हवाओं की रचना की; उसी रचना में हमारी एक छोटी सी धरती की भी रचना हुई। इस में अनुभवी महापुरुषों के कथनानुसार चौरासी लाख किस्म की जातियां, जिन्स, यौनियों की उत्पत्ति हुई। उसके द्वारा रचि गई रचना के बारे में हम कुछ भी नहीं कह सकते। हम एक मछली के भावों को नहीं जान सकते, उड़ान भरते पंछी की भावनाओं को नहीं समझ सकते, वनस्पति की सूझ-बूझ के बारे में हमें कुछ भी पता नहीं लग सकता। प्राकृतिक नियमों के अनुसार जीवन धारा बह रही है। हैरानी की बात है कि प्रभु ने एक कुत्ते को ऐसी शक्ति प्रदान की है कि वह एक बार किसी के पैर, चित्र सूंघ ले, कोई वस्त्र सूंघ ले, तो हज़ारों व्यक्तियों के बीच में जाकर, सैकड़ों मील तक गये हुये मनुष्य को भी पहचान लेता है। इसी प्रकार एक चींटी दूर दराज़ तक चली जाती है, घर में सुरक्षित पड़े खाने के पदार्थों का पता लगा लेती है। शेर तथा सांप जैसे खतरनाक जीव प्रभु प्यारे को, जिनके अन्दर पूर्ण ज्ञान है तथा घट-घट में व्यापत, अपने ही प्रभु को देखते हैं,

उसे पहचान जाते हैं। ऐसे अनेक उदाहरण मिल जाते हैं।

सन्त महापुरुष बाबा भाग सिंघ जी कुरी जो समदृष्टि महापुरुष थे। आपकी दृष्टि में सभी प्रभु का रूप ही परिपूर्ण दृष्टिगोचर था। आपके जीवन की एक घटना आती है जब आप पैदल ही हज़ूर साहिब के दर्शनों के लिये पूरे उत्साह के साथ चले जा रहे थे, अपने रंग में रंगे, कदम दर कदम बढ़ाते जा रहे थे। हर कदम सतनाम वाहगुरू जी की याद में उठाया जा रहा था, नेत्र खुले रहते हुए भी अखंड समाधि लगी हुई थी, उस समय आपकी शारीरिक आयु 22 वर्ष के करीब बताते हैं। आप जी मध्य प्रदेश के काहना काछा जैसे भयानक जंगलों में से गुज़र रहे थे, जहाँ शेरों के झुंड घूमते रहते थे। आज यह जंगल सुरक्षित हैं तथा सैकड़ों शेर अपना स्वतन्त्र जीवन जी रहे हैं। बाबा जी गुरू दशमेश पिता के प्यार में मस्त हुये जा रहे हैं, उन्हें वाहगुरू जी की ज्योति के बिना और कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। सूरज छिपने के निकट था, काली अन्धेरी रात, इस भयानक जंग में पड़ गई। आप जी की दृष्टि उस पहाड़ी क्षेत्र में पानी के स्रोत को ढूँढ रही थी। पहाड़ी से उतर कर नीचे एक चश्मा बह रहा था। उसके सामने निर्मल जल, एक छोटे से स्वच्छ स्थान पर एकत्र

होकर आगे बह रहा था। वह जगह बाबा जी को पसंद आ गई तथा आप एक छोटा सा आसन लगाकर वहाँ विराजमान हो गये। उस स्थान से वहाँ के स्थानीय लोग अपने सारे दिन की मेहनत करके वापिस अपने-अपने घरों को लौट रहे थे तथा सभी की यह कोशिश थी कि सूरज छिपने से पहले-पहले अपने घर पहुँच जायें, जहाँ पहुँच कर रात को गाँव के चारों ओर बड़ी-बड़ी लकड़ियों की आग जला कर अपनी रक्षा जंगली जानवरों से किया करते थे। उन्होंने बाबा जी को देखा और कहा, “बाल योगी, इस इलाके में पानी पीने का एक ही यही स्रोत है। जंगल के सारे जानवर यहाँ रात को पानी पीते हैं, आप यहाँ मत बैठो, कोई शेर आपको खा जायेगा। हमारे साथ चलो। हम आपको रात में ठहरने के लिये सुरक्षित स्थान देंगे; आप यहाँ मत रूको।” बाबा जी ने कहा कि प्रेमियो! मुझे कोई डर नहीं है क्योंकि मेरा प्रभु सदा मेरे साथ रहता है, मुझे न कोई खा सकता है, न आग चला सकती है, न पानी डुबो सकता है, न कोई शस्त्र काट सकता है। मेरा स्वरूप इस व्याधियों से अगम है, आप चिन्ता मत करो, जल्दी अपने-अपने घरों को जाओ; मैं इसी जगह पर ही बैठूँगा। रात बीत गई, सुबह हुई, वे ग्रामीण फिर टोलियां बनाकर ऊँची-ऊँची आवाज़ें लगाते हुए, अपने-अपने कामों पर जा रहे थे। उनके मन में बड़ी जिज्ञासा थी कि उस बाल योगी को देखें जो रात इतने भयानक जंगल में रहने का पक्का इरादा कर रहा था। वे लोग हैरान रह गये, जब उन्होंने देखा कि बाल योगी तो उसी तरह आसन जमाये समाधि स्थित बैठा है; नजदीक आकर देखते हैं कि कई शेरों के पद चिन्ह उसके इर्द-गिर्द पड़े हुये थे। उन्होंने अनुमान लगाया कि शेरों ने इसे सूँघा, पर खाया क्यों नहीं? अन्त में अपना संशय दूर करने के लिये उन्होंने बाबा जी से पूछा कि शेरों के पद चिन्ह आपके इर्द-गिर्द पड़े हैं क्योंकि प्रतिदिन ये पानी पीने आया करते हैं, उन्होंने तुम्हें खाया क्यों नहीं? बाबा जी ने कहा कि प्रेमियो! यहाँ केवल एक वाहिगुरु जी ही परिपूर्ण हैं, शेरों में भी वही व्याप्त है, मेरे अन्दर भी वही है। जो कुछ भी दिखाई देता है, वह सब वाहिगुरु जी का ही स्वरूप है। आप बताओ कि जब तुम्हें भूख लगी हो तो क्या तुम अपने हाथ काट कर खा लोगे? उन्होंने कहा, “नहीं।” बाबा जी ने कहा कि शेर भी मेरा ही रूप है, वह भी मैं ही हूँ। मैं अपने आप को कैसे खा लेता? वाहिगुरु जी ने इन्हें भी ज्ञान बख्शा हुआ है कि वे प्रभु के प्यारों को कुछ नहीं कहते। ऐसी अनेक विचित्र

कथाएँ हैं जो अनेक गुरुमुखों ने अपने जीवन पर झेल कर देखी हैं। सो मेरा लिखने का भाव यह है कि वाहिगुरु जी ने अनेक प्रकार की रचना की और हम उनके मन की अवस्था को नहीं समझ सकते उनके अन्दर कौन-कौन से गुण हैं? पशुओं को ज्ञान बख्शा है कि ऐसी वस्तु नहीं खाते जो उन्हें शारीरिक रूप से रोगी बना दे। अपने जीवन नियमों की पूरी तरह से पालना करते हैं। ऐसी यौनियां और जिन्स अनुभवी महापुरुषों ने 84 लाख बताई हैं। इन सभी में मानव शरीर को यह गौरव प्राप्त है कि यह शरीर सबसे उत्तम है तथा यह सरदारी (अगुआपन) भी मनुष्य को दी गई है कि वह दूसरी यौनियों के जीवों से काम ले सकता है, पर वे यौनियां मनुष्य से काम नहीं ले सकती क्योंकि यह उनका सरदार है।

*अवर जोनि तेरी पनिहारी।*

*इसु धरती महि तेरी सिकदारी।*

*सुइना रूपा तुझ पहि दाम।*

*सीलु बिगारिओ तेरा काम॥*

*अंग - 374*

मनुष्य यौनि को प्राप्त करने के लिये देवता भी तरसते हैं क्योंकि सारी रचना में एक मानस जात ही ऐसी है, जिस में प्रभु प्राप्ति हो सकती है। देवताओं के पास असंख्य सुख हैं, असंख्य भोग हैं, बेअन्त शक्ति हैं, भौतिक शारीरिक दुख भी कोई नहीं हैं पर वे प्रभु के दर्शन नहीं कर सकते। ऐसी गुरु महाराज जी का फ़रमान है -

*एका माई जुगति विआई*

*तिनि चले परवाणु।*

*इकु संसारी इकु भंडारी*

*इकु लाए दीबाणु।*

*जिव तिसु भावै तिवै चलावै*

*जिव होवै फुरमाणु।*

*ओहु वेखै ओना नदरि न आवै*

*बहुता एहु विडाणु॥*

*अंग - 7*

उस प्रभु के दर्शन, पूर्ण महापुरुष जो वाहिगुरु जी के साथ पूर्णतया अभेद हो चुके हैं, जिन्हें हम ब्रह्मज्ञानी कहते हैं उनके द्वारा ही प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं क्योंकि -

*ब्रह्मगिआनी कउ खोजहि महेसुर।*

*नानक ब्रह्मगिआनी आपि परमेसुर॥*

*अंग - 273*

इस मानस शरीर में जहाँ वाहिगुरु जी ने अपना निवास किया हुआ है, वहाँ दर्शन देने के लिए बख्शीश करते हुए

दशम द्वार तक पहुँचने का रास्ता भी रखा हुआ है, जो मानस शरीर में गुप्त है। पूर्ण महापुरुषों की संगत तथा पूरे सतगुरु के मिलाप बिना, उसका ज्ञान होना अति कठिन है, पहुँचा नहीं जा सकता। फ़रमान है -

नउ दरवाजे काइआ कोटु है  
दसवै गुपतु रखीजै।  
बजर कपाट न खुलनी  
गुर सबदि खुलीजै।  
अनहद वाजे धुनि वजदे  
गुर सबदि सुणीजै।  
तितु घट अंतरि चानणा  
करि भगति मिलीजै।  
सभ महि एकु वरतदा  
जिनि आपे रचन रचाई॥

अंग - 954

वाहु वाहु सचे पातिसाह तू सची नाई॥ अंग - 947

एक और स्थान पर गुरु महाराज जी स्पष्ट करते हैं -

काइआ नगरु नगर गड़ अंदरि।  
साचा वासा पुरि गगनंदरि।  
असथिरु थानु सदा निरमाइलु  
आपे आपु उपाइदा।  
अंदरि कोट छजे हट नाले।  
आपे लेवै वसतु समाले।  
बजर कपाट जड़े जड़ि जाणै  
गुरि सबदी खोलाइदा।  
भीतरि कोट गुफा घर जाई।  
नउ घर थापे हुकमि रजाई।  
दसवै पुरखु अलेखु अपारी  
आपे अलखु लखाइदा॥

अंग - 1033

मनुष्य का जो परम मनोरथ है, वह है केवल प्रभु प्राप्ति। अन्य मायिक कार्यों को गुरु महाराज जी ने कोई भी महत्व नहीं दिया तथा इन मायावी कार्यों को आप फजूल (worthless) कहते हैं -

भई परापति मानुख देहुरीआ।  
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ।  
अवरि काज तेरै कितै न काम।  
मिलु साध संगति भजु केवल नाम॥

अंग - 12

सूझ बूझ वालों को साधु की संगत प्राप्त हो जाती है,

जिन्हें मिलकर प्रभु की खोज में लग जाते हैं तथा लगन लग जाती है कि इसी जन्म में प्रभु के द्वार तक पहुँच जाऊँ, ऐसा न हो कि मेरा शरीर छूट जाये और मैं अपने मनोरथ को प्राप्त न कर सकूँ। साधु की संगत करता है, उसी स्थान पर लगन लगती है, प्रभु के मिलाप की लालसा अन्दर जागती है। महाराज जी फ़रमान करते हैं कि जिस प्रेमी के अन्दर दर्शनों की अभिलाषा जाग पड़े, हम उस पर बलिहार जाते हैं -

जिसु जन कउ प्रभ दरस पिआसा।

नानक ता कै बलि बलि जासा॥

अंग - 266

सन्तों की संगत करते-करते वैराग हो जाया करता है, दुनियांवी पदार्थों के साथ मोह कम होता चला जाता है। परिवार का मोह, जो जन्म जन्मातरों में चक्कर काटवाने में समर्थ है, कम होता चला जाता है; अन्दर विरह जाग पड़ती है। उस समय वैराग में, प्रभु के सामने तरले करता है, प्रार्थना करता है -

तू चउ सजण मैडिआ डेई सिसु उतारि।

नैण महिंजे तरसदे कदि पसी दीदारु॥ अंग - 1094

जैसे-जैसे आकर्षण बढ़ता जाता है, नेत्रों से आंसू टपकने लगते हैं, गुरु महाराज जी इस भाव को प्रकट करते हुए फ़रमान करते हैं -

सतिगुरु दइआ करे प्रभु मेले

मै तिसु आगै सिरु कटि कटि पईआ॥ अंग - 836

बड़ी से बड़ी कुर्बानी देने को तत्पर रहता है क्योंकि प्रेम का आकर्षण अन्दर पैदा हो जाता है -

चंद चकोर परीत है लाइ तार निहाले।  
चकवी सूरज हेत है मिलि होनि सुखाले।  
नेहु कवल जल जाणीए खिड़ि मुह वेखाले।  
मोर बबीहे बोलदे वेखि बदल काले।  
नारि भतार पिआरु है माँ पुत सम्हाले।  
पीर मुरीदा पिरहड़ी ओहु निबहै नाले॥

भाई गुरदास जी, वार 27/4

अन्दर से विरह की पीड़ा उठती है -

रोमि रोमि मनि तनि इक बेदन  
मै प्रभ देखे बिनु नीद न पईआ।  
बैदक नाटिक देखि भुलाने  
मै हिरदै मनि तनि प्रेम पीर लगईआ॥  
हउ खिनु पलु रहि न सकउ बिनु प्रीतम

जिउ बिनु अमलै अमली मरि गईआ।

जिन कउ पिआस होइ प्रभ केरी

तिन्ह अवरु न भावै बिनु हरि को दुईआ ॥ अंग - 836

इस विरह की अवस्था में केवल सतगुरु जी ही सहायता कर सकते हैं।

कोई आनि आनि मेरा प्रभू मिलायै

हउ तिसु विटहु बलि बलि घुमि गईआ।

अनेक जन्म के विछुड़े जन मेले

जा सति सति सतिगुर सरणि पवईआ ॥ अंग - 836

पर आवाज़ आती है कि प्यारे! क्यों किसी को दोष देता हैं, बिछोड़ा तो तेरे कर्मों ने ही डाला है? तू प्रार्थना करता रहा, दयालु होगा वह, तुझे जरूर मिलेगा।

किरति करम के वीछुड़े करि किरपा मेलहु राम ॥

अंग - 135

महापुरुष फ़रमान करते हैं कि प्रेमी! तेरे कर्मों ने ही बिछोड़ा डाला हुआ है, वाहिगुरु जी तो तेरे अंग संग रहते हैं, तेरे अन्दर बसते हैं, पर तूने अपने अस्तित्व की दीवार खड़ी करके, अपने आपको अलग कर दिया है तथा माया की नींद में सो कर स्वपन ले रहा है।

एका सेज विछी धनकंता।

धन सूती पिरु सद जागंता।

पीओ मदरो धन मतवंता।

धन जागै जे पिरु बोलंता ॥ अंग - 737

ठीक है तेरी प्रतीक्षा पर कुर्बान हूँ, पर जब तक तू समरथ सतगुरु की शरण में नहीं जाता तथा उनसे मन्त्र प्राप्त करके कठिन परिश्रम नहीं करता, अपने गुरु को प्रसन्न नहीं कर लेता, यह दीवार नहीं टूटती, चाहे तू परमेश्वर के बिल्कुल अंग संग क्यों न रहता हो, पर एक पतली सी पर्त बीच में पड़ी होने से, तू मिल नहीं सकता।

धन पिर का इक ही संगि वासा

विचि हउमै भीति करारी।

गुरि पूरे हउमै भीति तोरी

जन नानक मिले बनवारी ॥ अंग - 1263

हउ हउ भीति भइओ है

बीचो सुनत देसि निकटाइओ।

भांभीरी के पात परदो

बिनु पेखे दुराइओ ॥

अंग - 624

सो इस प्रकार किसी गुरुमुख को ज्ञान प्राप्त हो जाता है। बहुत से घोर तप करते हैं, शरीर सूख कर कांटा हो जाता है। ऐसा बताते हैं कि बाबा फरीद जी ने घोर तप किया, शरीर सूख कर कांटा हो गया। अभी तक अपने प्रीतम की न तो कोई खबर ही सुनी तथा न ही मिलाप हुआ, बेबस हुये फरीद जी अपने भाव इस प्रकार प्रकट करते हैं-

फरीदा तन सुका पिंजरु थीआ

तलीआं खूंडहि काग।

अजै सु रबु न बाहुड़िओ

देखु बंदे के भाग ॥

अंग - 1282

शरीर और सूख गया, कौओं ने उसे मुर्दा समझ कर पैरों की तलियों में से मांस नोंच-नोंच कर खाना शुरू कर दिया पर बाबा जी को अभी भी आशा है कि मेरा प्रभु! मेरे दुखों को अनुभव करके, मेरी असह्य पीड़ा को समझ कर, मुझे जरूर दर्शन देगा। फ़रमान करते हैं -

कागा करंग ढढोलिआ सगला खाइआ मासु।

ए दुइ नैना मति छुहउ पिर देखन की आस ॥

अंग - 1382

आवाज़ आई -

फरीदा जंगलु जंगलु किआ भवहि

वणि कंडा मोड़ेहि।

वसी रबु हिआलीऐ

जंगलु किआ ढूढेहि ॥

अंग - 1378

जा, किसी मुरशद-ए-कामल की शरण में, जो आप प्रभु से मिला हुआ हो, वह तुझे भेद बतायेगा कि वाहिगुरु जी तो अंग संग है, सदा ही दयालुता के साथ इन्तजार कर रहे हैं, पर मुरशद-ए-कामल के बिना, तू पहुँच नहीं सकता। उसके अन्दर प्रभु को मिलाने की समर्थ शक्ति होती है -

जिस का ग्रिहु तिनि दीआ

ताला कुंजी गुर सउपाई।

अनिक उपाव करे नही पावै

बिनु सतिगुर सरणाई ॥

अंग - 205

तुझ पर गुरु प्रसन्न हो जायेगा, मुरशद की प्रसन्नता प्राप्त होगी, वह इस शरीर में से तुझे वह घर दिखा देगा, जहाँ विस्माद ही विस्माद है, महान आनन्द ही आनन्द है। जिस

स्थान पर, अनहद शब्द सदा ही अपनी ध्वनियों में मस्त रखते हैं, वह तुझे वादी-ए-हैरान ( विस्माद ) की झलक दिखा देगा। जा, मुरशद-ए-कामल को ढूंढ।

घर महि धरु देखाइ देइ  
सो सतिगुरु पुरखु सुजाणु।  
पंच सबद धुनिकार धुनि  
तह बाजै सबदु नीसाणु।  
दीप लोअ पाताल  
तह खंड मंडल हैरानु।  
तार घोर बाजिंत्र तह  
साचि तखति सुलतानु।  
सुखमन कै घरि रागु  
सुनि सुनि मंडलि लिव लाइ।  
अकथ कथा बीचारीए  
मनसा मनहि समाइ।  
उलटि कमलु अंग्रिति भरिआ  
इहु मनु कतहु न जाइ।  
अजपा जापु न वीसरै  
आदि जुगादि समाइ॥

अंग - 1291

सो गुरुमुख की मदद से इस घर का निवास मिल जायेगा। तू प्रवान हो जायेगा। पंच प्रवान तथा पंच प्रधान में, तू सम्मिलित हो जायेगा, तू भाग्यशाली हो जायेगा पर शब्द की खोज के बिना, अपने इस घर की प्राप्ति नहीं हो सकती।

सभि सखीआ पंचे मिले  
गुरुमुखि निज घरि वासु।  
सबदु खोजि इहु घरु लहै  
नानकु ता का दासु॥

अंग - 1291

अब यह भटकता जिज्ञासु, प्रभु के दर पर परवान हो गया तथा प्यारे का संग प्राप्त हो गया, अब उनकी महिमा कौन गा सके?

साध की महिमा बेद न जानहि।  
जेता सुनहि तेता बखिआनहि।  
साध की उपमा तिहु गुण ते दूरि।  
साध की उपमा रही भरपूरि।  
साध की सोभा का नाही अंत।  
साध की सोभा सदा बेअंत।

साध की सोभा ऊच ते उची।  
साध की सोभा मूच ते मूची।  
साध की सोभा साध बनि आई।  
नानक साध प्रभ भेदु न भाई॥

अंग - 272

गुरु महाराज जी इस अवस्था को अघहन के महीने द्वारा प्रकट करते हुए फ़रमान करते हैं -

मंधिरि माहि सोहंदीआ  
हरि पिर संगि बैठड़ीआह।  
तिन की सोभा किआ गणी  
जि साहिबि मेलड़ीआह॥

अंग - 135

राम अन्दर से ही प्रकट हो गया। 'मैं' का पूरी तरह से विनाश हो गया, अब 'मैं' 'मैं' न रही, 'मैं' 'तू' बन गई, 'तू' 'मैं' बन गई; महान आनन्द की प्राप्ति हो गई। अब प्रवान हुई सहेलियों का संग मिल गया।

तनु मनु मउलिआ राम सिउ  
संगि साध सहेलड़ीआह।  
साध जना ते बाहरी  
से रहनि इकेलड़ीआह॥

अंग - 135

इस मिलाप से विहीन जीव, सन्तों की संगत से हीन, अकेले भटक रहे हैं। माया के दुखों सुखों के थपेड़े खाते हुये, बेहोशी की हद तक पहुँचे हुये, यमों के वश में जा पड़ते हैं, नरकों में दुख भोगते हैं क्योंकि उन्होंने गुरु के सत्य की आवाज़ को न सुना।

गुर सेवा ते भगति कमाई।  
तब इह मानस देही पाई।  
इस देही कउ सिमरहि देव।  
सो देही भजु हरि की सेव॥  
भजहु गुोबिंद भूलि मत जाहु।  
मानस जनम का एही लाहु।  
जब लगु जरा रोगु नही आइआ।  
जब लगु कालि ग़सी नही काइआ।  
जब लग बिकल भई नही बानी।  
भजि लेहि रे मन सारिगपानी।  
अब न भजसि भजसि कब भाई।  
आवै अंतु न भजिआ जाई।  
जो किछु करहि सोई अब सारु।  
फिरि पछुताहु न पावहु पारु॥

अंग - 1159

इस प्रकार साधुओं की संगत से विहीन होकर, माया के मण्डल में कोई भी मित्र न बन सका क्योंकि वह स्वार्थी

की दुनियां है, अपने सुखों को पहल देने वाली दुनियां है, सुख में सभी साथी बनते हैं, पर दुख में कोई भी नहीं बनता। इसे ध्यान ही न आया कि साधु सच्चे मित्र होते हैं, जो यहाँ भी सहायता करते हैं तथा दरगाह में भी उनकी पहुँच होती है -

मनमुख अगै लेखा मंगीए  
बहुती होवै मार।  
गुरुमुखि पति सिउ लेखा निबड़ै  
बखसे सिफति भंडार।  
ओथै हथु न अपड़ै  
कूक न सुणीए पुकार।  
ओथै सतिगुरु बेली होवै  
कढि लए अंती वार ॥

अंग - 1281

पूर्ण सतगुरु का मिलाप न होने के कारण माया मंडल के भयानक जंगल में, जीव अकेला भटक रहा है तथा जन्म मरण के चक्कर में गोते लगा रहा है।

साध जना ते बाहरी  
से रहनि इकेलड़ीआह।  
तिन दुखु न कबहू उतरै  
से जम कै वसि पड़ीआह ॥

अंग - 135

बाबा फरीद जी मुरशद-ए-कामल की शरण में जा कर अपना सर्वस्व, मुरशद के चरणों में भेंट करके, कठिन सेवा कर रहे हैं। अन्त मुरशद को प्रसन्न कर लिया, उसने प्रभु के द्वार की चाबी लगाकर, वज्र कपाट खोल दिये। प्रभु के दर पर परवान हो गए। तथा गुरु ग्रन्थ साहिब में आदर योग्य स्थान प्राप्त करके, महान शोभा का पात्र बने।

जिनि राविआ प्रभु आपणा  
से दिसनि नित खड़ीआह।  
रतन जवेहर लाल हरि  
कंठि तिना जड़ीआह।  
नानक बांछै धूड़ि तिन  
प्रभ सरणी दरि पड़ीआह।  
मंघिरि प्रभु आराधणा  
बहुड़ि न जनमड़ीआह ॥

अंग - 135

जन्म मरण के चक्कर में से निकल गया। गुरु महाराज जी अघहन के महीने में उपदेश देते हैं, प्रभु को परवान हुई आत्माओं (रूहों) के बारे में जानकारी देते हुये फ़रमान करते हैं कि ऐसे महापुरुषों की महिमा को कोई नहीं जान सकता,

जो मिल चुके हैं, उनकी धूलि की इच्छा करना सबसे श्रेष्ठ वरदान है क्योंकि इस धूलि की देवता भी लालसा करते हैं, तीर्थों के देवता भी लालायित हो रहे हैं। यह धूलि करोड़ों जन्मों के पापों का नाश करती है।

गंगा जमुना गोदावरी सरसुती  
ते करहि उदमु धूरि साधू की ताई।  
किलविख मैलु भरे परे हमरै विचि  
हमरी मैलु साधू की धूरि गवाई।  
तीरथि अठसठि मजनु नाई।  
सत संगति की धूरि परी उडि नेत्री  
सभ दुरमति मैलु गवाई ॥

अंग - 1263

इसलिए विचार करो, मर्यादाहीन बिताया गया जीवन, दरगाह में भी शर्मिदा करेगा तथा महान दुखों का सामना करना पड़ेगा।

ऐसी कला न खेड़ीए जितु दरगह गइआ हारीए ॥

अंग - 469

मनुष्य इन वचनों से अचेत रहकर, विषय-विकारों के भोगों में लगा हुआ अपना जीवन व्यर्थ गवां कर, संसार से रोता हुआ चला जाता है। महाराज कहते हैं कि प्यारे तूने अन्धा होकर जीवन बर्बाद कर लिया -

आपीन्है भोग भोगि कै  
होइ भसमडि भउरु सिधाइआ।  
वडा होआ दुनीदारु  
गलि संगलु घति चलाइआ।  
अगै करणी कीरति वाचीए  
बहि लेखा करि समझाइआ।  
थाउ न होवी पउदीई  
हुणि सुणीए किआ रुआइआ।  
मनि अंधै जनमु गवाइआ ॥

अंग - 464

इसलिये गुरु वाले बनो, गुरु घर में पाँच प्यारों के पास नाम की दात सुरक्षित रखी है। गुरु ग्रन्थ साहिब जी की बाणी पर श्रद्धा रखो। बाणी के वचनों को कमाओ, महापुरुषों की संगत करके, अपने जीवन का मनोरथ प्राप्त करो, यही उपदेश इस महीने का गुरु महाराज जी ने बख्शीस किया है। साधना करो, गुरु बरकत देगा।



# श्री गुरु नानक देव जी

(अपने आप की पहचान)

सन्त वरियाम सिंह जी  
संस्थापक वि. गु. रू. मिशन

सतिनामु श्री वाहिगुरु,  
धंन श्री गुरु नानक देव जीओ महाराज!  
डंडउति बंदन अनिक बार सरब कला समरथ॥  
अंग - 256

फिरत फिरत प्रभ आइआ  
परिआ तउ सरनाइ॥  
नानक की प्रभ बेनती अपनी भगती लाइ॥  
अंग - 286

धारना - लेखे विच्य ला लओ जी,  
जनम तुमारे लेखे।  
हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि  
अब पतीआरु किआ कीजै ॥  
बचनी तोर मोर मनु मानै जन कउ पूरनु दीजै ॥  
हउ बलि बलि जाउ रमईआ कारने ॥  
कारन कवन अबोल ॥  
बहुत जनम बिछुरे थे माघउ इहु जनमु तुमारे लेखे ॥  
कहि रविदास आस लागि जीवउ  
चिर भइओ दरसनु देखे ॥  
अंग - 694

साधु संगत जी! उच्च स्वर में बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु। अपने-अपने व्यवसायिक कार्यों को विराम देते हुए आप सभी गुरु दरबार में पहुँचे हो, इस संसार के अन्दर कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है, जिसका कोई न कोई श्वास किसी न किसी लेखे में न लगता हो। अंग्रेजी में इसे Account for करना कहते हैं। यानि कि किसी लेखे में बात का लग जाना। दो प्रकार के लेखे हुआ करते हैं, एक debit होता है और दूसरा credit होता है। एक घाटे के लेखे होते हैं, जिनके द्वारा कर्ज चढ़ जाया करता है और एक मुनाफे के लेखे होते हैं, जिनके द्वारा व्यक्ति का balance बढ़ जाया करता है। प्रत्येक मन प्रत्येक समय कुछ न कुछ सोचता ही

रहता है -

चिंतत ही दीसै सभु कोइ ॥  
चेतहि एकू तही सुखु होइ ॥  
अंग - 932

कोई व्यक्ति ऐसा नहीं जिसका मन शिथिल होकर बैठ जाए। मन तो प्रत्येक समय कुछ न कुछ सोचता ही रहता है। वह समय जो हमारा सोचने का है, वह किस खाते में जा रहा है? एक रजिस्टर खुला हुआ है, जो कि बहुत बड़ा है, उसके अन्दर बहुत सारे खाते हैं। कहीं पर वैर का खाता है, कहीं पर निन्दा का खाता है, कहीं ईर्ष्या का खाता है, कहीं काम का खाता है, कहीं क्रोध का, कहीं लोभ का, कहीं मोह का, कहीं विरोध का है। इसी प्रकार से कहीं खाता लिखा हुआ है सेवा का, कहीं लेखा है सत्संग का। किसी जगह पर लिखा है वाहिगुरु की याद का, कहीं पर कीर्तन का है। अब ये दोनों तरह के खाते हैं। एक को हम घाटे के खाते कह सकते हैं और दूसरे को मुनाफे के खाते कह सकते हैं। जो घाटे के खाते हैं, उनमें सजा मिलती है। व्यक्ति निन्दा करता है, वह निन्दा के खाते में चला जाएगा। महाराज जी कहते हैं -

निंदा भली किसै की नाही मनमुख मुगध करनि ॥  
मुह काले तिन निंदका नरके घोरि पवनि ॥

अंग - 755

चार अंगुल की जुबान है, उसके द्वारा निन्दा करनी शुरू कर दो। उसका जो समय निन्दा करने में लगेगा, उसका फल क्या होगा? उसे कुम्भी नर्क में निवास मिलेगा और उसके जो नेक कर्म किए हुए होंगे वे सब समाप्त हो जाएंगे। इसी प्रकार से ईर्ष्या का खाता है, उसका फल क्या होगा?

जिसु अंदरि ताति पराई होवै  
तिस का कदे न होवी भला ॥  
अंग - 308

ईर्ष्या के अन्दर जिन्दगी व्यतीत करने वाले का कभी भी भला नहीं हो सकता है। अच्छे-अच्छे व्यक्ति जो सेवा करने वाले हैं, उनके अन्दर मैंने ईर्ष्या देखी है। उनकी बातें सुनकर हैरानी होती है और फिर यदि उन्हें कह दो कि तुम्हारे अन्दर ईर्ष्या है तो भी वे नाराज हो जाएंगे। कीर्तन करने वालों को, कीर्तन करने वालों से ईर्ष्या हो जाती है। अपने जैसा काम करने वालों से प्रायः ईर्ष्या हो जाती है। वही गुरुद्वारा है, सबका सांझा, वहीं सभी जाते हैं और वहीं पर खूब ईर्ष्या चलती है। यदि विचारपूर्वक देखो तो व्यक्ति को पता चलेगा कि इस ईर्ष्या का मुझे कोई लाभ तो हुआ नहीं। इससे तो अच्छा है सो जाना क्योंकि बुरा लेख तो बोया नहीं जाता। इसी प्रकार से प्रभु जी के नाम स्मरण में जो समय लगता है, वह लेखे में लगता है, हरियश में जो समय लगता है, भजन बन्दगी में जो समय लगता है, वह लेखे में लगता है। सेवा या परोपकार करने में जो समय लगता है, वह लेखे में लगता है। इन सबमें जो सर्वाधिक उपयुक्त समय लेखे में लगता है, वह है - प्रभु जी की याद का समय। वह जितना भी समय मिल जाए, तो वह लेखे में लग जाता है। वर्तमान समय में तो हम लोग इतने गाफिल हो चुके हैं कि हम अपने समय का विश्लेषण नहीं कर सकते हैं। कई सयाने लोगों ने समय को मैनेज करने के तरीके निकाले हुए हैं। वे एक डायरी बना लेते जिसमें वे गुण व अवगुणों का लेखा जोखा बनाकर रखते हैं। ये पचहत्तर के करीब हैं। एक दीवान में मैंने इनकी गिनती करके भी बताया था। इस प्रकार से सयाने लोग एक तरफ credit दूसरी तरफ debit खाता बना लेते हैं। ईमानदारी के साथ रात को बैठकर देखो कि आज मैंने कितनी निन्दा की है, कितनी ईर्ष्या की है, कितनी गलत सोचें सोची हैं, मेरा कितना समय जीविकोपार्जन में चला गया, कितना पारस्परिक बातचीत में बीता, कितना नहाने-धोने में बीता और कितना भजन-बन्दगी में व्यतीत हुआ। फिर उस खाते को महीने बाद देखो फिर साल बाद देखो, फिर पता चल जाएगा कि इसे कितना घाटा पड़ा अथवा कितना मुनाफा हुआ। इसी प्रकार जब जन्म दिन मनाते हैं, शहरों के अन्दर रिवाज है कि वे इस समय देखते हैं कि हमने साल भर में क्या खोया, क्या पाया? आजकल तो छोटे-छोटे बच्चे स्वयं ही कहने लग जाते हैं कि मेरा जन्म दिन नहीं मनाया। चलो फिर भी यह अच्छा है लेकिन जो कौमें हैं, वे भी जब अपना जन्म-दिन मनाती हैं, तो देखती हैं कि हम कहाँ पर खड़ी हैं, आगे जा रही हैं या पीछे। जैसे कि खालसा का जन्म दिन बैसाखी को

होता है, वे अपना लेखा-जोखा करते हैं। अतः इस प्रकार से जो इतना सचेत हो वह तो जीत जाता है, लेकिन जो इसके विपरीत अचेत ही चला रहता है वह अन्त में हारकर ही जाता है और उसका समय घाटे के लेखे में दर्ज होता रहता है।

श्री गुरु नानक देव जी एक जगह पर बैठे हुए हैं। आप कीर्तन के बाद समाधिस्थ हो गए और मरदाना बाहर घूमने निकल गया और घूमते-घूमते एक कब्रिस्तान की तरफ चला गया लेकिन वह उस समय अत्यन्त हैरान हो गया जिस समय उसने वहाँ पर कब्रों के सिरहाने पर पत्थरों को लगा हुआ देखा। वहाँ पर लगे हुए पत्थरों पर मर चुके प्राणियों की उम्र दर्ज थी, लेकिन वहाँ पर किसी की उम्र दस साल लिखी थी, किसी की दो साल, किसी की तीन साल। वह बहुत हैरान हो गया और जब वापिस श्री गुरु जी के पास लौटा तो कहने लगा, महाराज जी! मैं इधर कब्रिस्तान की ओर चला गया था, लेकिन हैरानी की बात यह है कि वहाँ पर लोगों की उम्र बहुत ही कम लिखी हुई है, ज्यादा से ज्यादा उम्र दस साल लिखी है, क्या इस नगर में अधिक बड़ी आयु का व्यक्ति होता ही नहीं है? महाराज जी कहने लगे मरदाना! नगर तो पास में ही है। तुम जाकर पूछ आओ इसमें हैरान होने की क्या बात है? मरदाना गाँव में चला गया और जाकर देखता है कि वहाँ पर तो बड़ी-बड़ी उम्र वाले लोग बैठे हुए हैं। उसने वहाँ जाकर सत करतार! की आवाज दी। उन्होंने भी इसे बड़े आदर के साथ बैठाया। बैठने के बाद इसने अपना सवाल उनके सामने पेश कर दिया कि ऐ बुजुर्गों! आप लोग तो यहाँ पर बहुत बड़ी-बड़ी उम्र वाले बैठे हुए हो, लेकिन यह जो कब्रिस्तान है, इसमें तो दस साल से अधिक किसी की उम्र ही नहीं लिखी है। वे सारे उसकी बात को सुनकर मुस्कुरा पड़े और कहने लगे, हाँ मरदाना! तुम्हारी बात ठीक है, जो परदेशी व्यक्ति होता है, उसे यह सुनकर स्वाभाविक रूप से शंका पड़ जाती है। दरअसल हमारे गाँव की रीति एक अलग प्रकार की है। हमारे गाँव में कोई भी निगुरा (गुरु रहित) पुरुष नहीं है, कोई भी मनमुख नहीं है, कोई बेमुख नहीं है और हम सभी पीर के बन्दे हैं। पीर के द्वारा जो उपदेश हमें मिले हैं, हम उन्हें अमल में लाते हैं। हमारे गाँव का यह नियम है कि कोई भी बच्चा जब पाँच वर्ष का हो जाता है, तो उस समय हमारी पंचायत उसे एक नोटबुक दे देती है, कि देखो बेटा! अब तुम्हें बुरे-भले का ज्ञान हो गया है, अब तुम नेक कार्य करो, भजन बन्दगी करो। इस कार्य हेतु माता पिता

की पूरी जिम्मेदारी होती है कि वह बच्चे का ख्याल रखे, इसे सदकार्यों के लिए प्रेरित करे तथा उस डायरी में उसके बुरे भले कार्यों का लेखा जोखा लिखे या बच्चे से लिखवाए। जब बच्चा अट्ठारह वर्ष का हो जाता है तो पुनः हमारी पंचायत एकत्र होती है, और उसे एक और डायरी देती है कि अब तुम इसमें वह समय लिखना जो कि तुमने परमेश्वर की याद में गुजारा है। व्यक्ति जब परलोक गमन कर जाता है तो हमारी पंचायत इकट्ठी होकर उसके समय को गिनती है कि इस व्यक्ति ने इतना समय परमेश्वर की याद में गुजारा है और उस समय को उसकी कब्र पर लिख दिया जाता है कि इस व्यक्ति की असली उम्र इतनी है -

**उमर ओहा विच लेखे दे  
जो याद साँई विच गुजरे,  
पैदी मुजरे।  
नहीं ताँ सानूँ हासल की है  
इस विच्य नीले हुजरे, संझ ते फजरे।**

**भाई वीर सिंघ जी**

अतः वे कहने लगे, “भाई मरदाना! हम परमेश्वर की याद में गुजारे हुए समय को लिखते हैं।”

अब यदि हम लोग अपनी आयु के बारे में विचार करें, तो हमारी वास्तविक आयु कितनी होगी? शायद ही कोई भाग्यशाली व्यक्ति होगा जिसे बचपन से ही समझ हो। यदि दस साल की उम्र में नाम जपने की समझ आ गई और कुल आयु 75 वर्ष है तो 65 वर्ष रह गई। बाकी दस साल तो पहले ही कम हो गई। यदि नित्य नियम के तौर पर हम अढ़ाई घंटे का समय परमेश्वर की याद में गुजारते हैं, तो कितना समय हुआ? कुल समय साढ़े छः साल ही हुआ। इसका तात्पर्य यह हुआ कि जो अढ़ाई घंटे नाम-स्मरण करता है, उसकी आयु साढ़े छः साल हुई और परमेश्वर के लेखे के हिसाब से उसकी उम्र अड़सठ वर्ष छः महीने बरबाद हो गई और वह किसी भी लेखे में नहीं पड़ी। बल्कि वह तो बुरे लेखे में चली गई -

**बैर विरोध काम क्रोध मोह ॥  
झूठ बिकार महा लोभ धोह ॥  
इआहू जुगति बिहाने कई जनम ॥  
नानक राखि लेहु आपन करि करम ॥ अंग - 268**  
इन लेखों में जब हमारी उम्र जाती है, तो हमने कितनी

बरबाद कर दी? थोड़ी नहीं बल्कि बहुत अधिक बरबाद कर दी। एक श्वास की ही कीमत के बारे में महाराज जी कहते हैं -

**एक चित जिह इक छिन धिआइओ**

**काल फास के बीच न आइओ।**

**अकाल उसतति**

एक श्वास जितना समय भी यदि वाहिगुरु याद आ जाए तो भी वह काल की फाँसी के बीच नहीं आता है, कितने श्वास हमने बरबाद कर दिए, 75 साल वाले व्यक्ति के श्वासों की गिनती 66 करोड़ 44 लाख हुआ करती है, यदि 66 वर्ष का है तो कितने हो गए, 6 साल निकाल दो, बाकी सारे ही बरबाद हो गए। इसीलिए विनती करते हैं कि हे प्रभु! तुम कृपा करो हमारे वश की तो यह बात है नहीं। हमें तो यह बात समझ में नहीं आती है, न ही हमें यह कोई प्रेरणा प्रदान करती है, हमारे अन्दर कोई vibration भी उत्पन्न नहीं होती है। हम तो कठोर व्यक्ति हैं -

**कुचल कठोर कामि.....॥**

**अंग - 1001**

इस कठोरता के कारण ही हमारे ऊपर तुम्हारे उपदेशों का कोई असर भी नहीं होता है, इसलिए तुम स्वयं ही कृपा करो -

**धारना - लेखे विच्य ला लओ जी,**

**जनम तुमारे लेखे।**

अतः जो वाहिगुरु के लेखे में पड़ता है, वही समय हमारा सफल होता है। बाकी जो समय हमारा निकल गया है, उसके बारे में हमें फिक्र नहीं करनी चाहिए। करोड़ों सालों के बाद हमें मनुष्य जन्म प्राप्त हुआ है, बहुत सारे चक्रव्यूहों में हम घूमते रहे -

**कई जनम भए कीट पतंगा ॥**

**कई जनम गज मीन कुरंगा ॥**

**कई जनम पंखी सरप होइओ ॥**

**कई जनम हैवर ब्रिख जोइओ ॥**

**मिलु जगदीस मिलन की बरीआ ॥**

**चिरकाल इह देह संजरीआ ॥**

**अंग - 176**

बहुत लम्बे समय के बाद हमें यह देह प्राप्त हुई है, हमें इसकी कद्र करनी चाहिए। हमें इस जन्म को गम्भीरता से लेना चाहिए। वैसे ही नहीं कि ऊपरी तौर पर सोचते रहें। जो ऊपरी-ऊपरी बातें होती हैं, वे बहुत अधिक महत्व की नहीं हुआ करती हैं, जिन्हें वास्तव में लगन लग जाती है -

सीने खिच्च जिनहाँ ने खाधी  
ओ कर अराम नहीं बहिंदे।  
निहुं वाले नैणाँ की नींदर  
ओ दिने रात पए वहिंदे।  
इको लगन लगी लई जाँदी है  
टोर अनंत उनाँ दी।

वसलों उरे मुकाम न कोई  
सो चाल पए नित रहिंदे। डा. भाई वीर सिंघ जी

वे मिलाप से इधर नहीं ठहरते हैं। वैसे तो हम सबका समय झूठी प्रीति में गुजर जाता है। गुरु जी कहते हैं कि तुम झूठी प्रीति का त्याग कर दो -

नानक कचड़िआ सिउ तोड़ि  
दूढि सजण संत पकिआ॥  
ओइ जीवंदे विछुड़िहि

ओइ मुइआ न जाही छोड़ि ॥ अंग - 1102

दुनिया की जो प्रीति है, यह किसी काम नहीं आया करती है। व्यक्ति का सारा समय इसमें बरबाद हो जाता है और अन्त में यह व्यक्ति को धोखा दे देती है। यह सब माया का छल है, न पुत्र की प्रीति सिरे चढ़ती है, न किसी अन्य की। दुनिया के जितने भी प्यार हैं, वे सब माया के प्यार हैं। यदि कोई प्यार सिरे चढ़ता है तो वह है - वाहिगुरु का प्यार। प्यार जो है, यह आदमी की जिन्दगी है। प्यार से बिना जो जिन्दगी है, महाराज ने उसे स्वीकार्य ही नहीं किया है। गुरु जी कहते हैं -

अति सुंदर कुलीन चतुर मुखि डिआनी धनवंत ॥  
मिरतक कहीअहि नानका जिह प्रीति नही भगवंत ॥

अंग - 253

जिसके अन्दर परमेश्वर का प्यार नहीं है, अन्य सारे प्यार झूठे प्यार हैं। वह व्यक्ति तो मरा हुआ है, जिसके अन्दर प्यार की रौ नहीं बहती है। अन्य सारे प्यार तो निभते नहीं हैं। पुत्र को माँ प्यार करती रहती है। यहाँ पर मेरे पास असंख्य लोग आते हैं, वे कहेंगे कि मुझे न पुत्र पूछता है न मेरी पुत्रवधु पूछती है। मैं कह देता हूँ कि अच्छा श्रीमती जी! यदि तुम अपनी क्रिया कर लेती हो तो फिर यहाँ आश्रम में आ जाओ, गुरु तुम्हें अपने आप ही पूछ लेगा, बशर्ते तुम गुरु की बनकर रहना। वहाँ पर किसी की निन्दा-चुगली नहीं करनी, न ही पुत्र की न पुत्रवधु की और न ही अन्य रिश्तेदारों की। साधु संगत जी! ये सब झूठी प्रीति हुआ करती है -

जगत मै झूठी देखी प्रीति ॥

अंग - 536

गुरु जी कहते हैं कि हमने आंखों से देख ली है कि यह जो संसार की प्रीति है, यह झूठी है, यदि कोई सच्ची प्रीति है तो उसके बारे में इस प्रकार से फुरमान आता है-

धारना - पीर मुरीद दा निभदा है पिआर नाले।

चंद चकोर परीत है लाइ तार निहाले।  
चकवी सूरज हेत है मिलि होनि सुखाले।  
नेहु कवल जल जाणीअै खिड़ि मुह वेखाले।  
मोर बबीहे बोलदे वेखि बदल काले।  
नारि भतार पिआरु है माँ पुत समाहले।  
पीर मुरीदा पिरहड़ी ओहु निबहै नाले।

भाई गुरदास जी, 27/4

पक्की प्रीतियां हैं, चन्द्रमा व चकोर की प्रीति। कभी भी टूटा नहीं करती, मर जाता है, लेकिन प्रीति पक्की बनी रहती है। इसी प्रकार से चकवी व सूर्य की प्रीति है। कमल व जल की प्रीति है, मोर व बबीहे की बादलों के साथ है। इसी प्रकार से गुरु जी कहते हैं कि -

पीर मुरीदा पिरहड़ी ओहु निबहै नाले।

भाई गुरदास जी, 27/4

जिसने भी गुरु के साथ प्यार डाला है, वह यहाँ पर भी निभेगा और दरगाह में भी निभेगा। ऐसा ही नहीं है कि यहीं पर प्यार टूट गया है। विचार करके देख लो किसी का पुत्र के साथ प्यार है।

एक साखी आती है कि एक बुजुर्ग का अपने परिवार से प्यार था। उस बुजुर्ग ने श्री गुरु नानक देव जी को भोजन करवा दिया। गुरु जी कहने लगे, भद्रपुरुष! तुम्हें मुक्त कर दें? कहने लगा, महाराज! मैंने आपका क्या बिगाड़ा है? एक तो मैंने आपको भोजन करवाया है और दूसरा आप मुझे मुक्त करने लगे हो?

गुरु जी बोले, मरदाना! यह समझ नहीं रहा है, इसे पता नहीं है कि मुक्ति क्या होती है? यह मरने को मुक्ति कहता है।

गुरु जी चले जाते हैं, और कुछ वर्षों बाद वह बुजुर्ग मर गया और पारिवारिक प्रेम की बदौलत वह बैल बन गया। दोबारा गुरु जी ने उसे पूछा कि तुम्हें मुक्त कर दें? लेकिन उसने जवाब दे दिया।

तीसरी बार जब आए तो कुत्ता बना हुआ है। गुरु जी कहने लगे, अब तो तुम्हें मुक्त कर दें?

कहने लगा, महाराज! मेरे बच्चे नालायक हैं, पुत्रवधुएं तो और अधिक नालायक हैं। वे एक छोटी सी ताली लगाकर मकान की छत पर चढ़कर सो जाते हैं, उधर चोर आकर चोरी के उद्देश्य से ताले को खोलने लग जाते हैं। उस समय मैं भौंकता हूँ। देखो! मेरी पीठ इन्होंने डंडे मार-मार कर तोड़ी पड़ी है। यदि आपने मुझे मुक्त कर दिया तो ये तो सारे गरीब हो जाएंगे। उसके बाद वह बुजुर्ग उसी घर में साँप बन गया, ऐसा ग्रन्थों में लिखा हुआ है। अब उसी घर में उसी का पौत्र जो कि दुध मुँहा था, पालने में खेल रहा था, वह साँप उसके साथ खेलने के उद्देश्य से पालने पर चढ़ गया, इधर उसका बेटा बाहर से आ गया उसने जैसे ही देखा कि पालने पर साँप चढ़ा हुआ है तो उसने डंडा उठाकर उसके सिर को कुचल डाला। उसके बाद यह नाली का कीड़ा बन गया। देखो यह पारिवारिक प्रेम कितना दुख देता है। यह तो जो सच्चा प्यार गुरु और सिक्ख का है वही पार लगाता है। यह यहाँ भी निभता है और दरगाह में भी निभता है तथा जब तक संसार है, निभता ही चला जाता है। गुरु जी कहते हैं कि एक ही प्यार है जो निभता है। अतः गुरु के साथ जो प्यार है, वह सारे प्यारों का शिरोमणि प्यार है। निःस्वार्थ प्यार होना चाहिए गुरु के साथ।

इसी प्रकार के प्यार की एक गाथा श्री गुरु नानक महाराज से सम्बन्धित राइ भोइं की तलवंडी की है। जो राय बुलार था, इसने श्री गुरु महाराज जी की बहुत सी लीलाएँ देखी थीं। वैसे तो वह इस्लाम धर्म को मानने वाला था। इस्लाम धर्म वाले हिन्दुओं को काफिर कहते थे, लेकिन इस नफरत के ऊपर से निकलकर वह गुरु नानक को इतना प्यार करता था कि वह उन्हें साकार अल्लाह का वजूद मानता था। पराकाष्ठा तक का प्यार उसका गुरु नानक के साथ था।

श्री गुरु नानक देव जी महाराज जब भाई लालो के पास गए और तीन दिन बाद जब वापिस लौटने लगे तो भाई लालो ने गुरु जी के चरण पकड़ लिए, कहने लगे, गुरु जी! केवल तीन दिन! सदियों बाद आप मिले हो। युगों के बाद आपके दर्शन हुए हैं और आप केवल तीन दिन रहकर ही जा रहे हो? उसने बहुत वैराग्य किया। महाराज जी उसके प्यार में काबू हो गए क्योंकि जो भक्त होते हैं, वे भगवान को

अपने वश में कर लेते हैं -

**नामा कहै भगति बसि केसव**

**अजहूँ बलि के दुआर खरो ॥**

**अंग - 1105**

कहते हैं कि प्रेम के वशीभूत होकर भगवान आज भी राजा बलि का दरबान बनकर पहरा दे रहा है।

श्री गुरु नानक महाराज जी ठहर गए तथा कहने लगे, मरदाना! तुम जाओ तलवंडी अपने घर की खबर ले आओ क्योंकि तेरे मन में हमेशा ख्याल रहता है कि मेरे घरवालों का क्या हाल होगा। अतः मरदाना चला जाता है। जब महिता कालू जी को पता चला कि मरदाना आया है, भाई बाला भी साथ में हो लिया। दोनों के साथ वह इकट्ठे ही मिलता है।

कहने लगा, कहाँ है नानक?

वे कहने लगे, जी इस प्रकार से उन्होंने सुल्तानपुर में मोदीखाने को लुटा दिया। बेई नदी में से निकलकर फिर नमाज का कौतक बताया। उसके बाद सारी बातें बतलाकर उनके मुँह से निकला कि महिता जी! गुरु नानक तो स्वयं परमेश्वर हैं।

कालू जी कहने लगे, ऐ मूर्खों! तुम लोगों ने तो ही हमारा भट्टा बैठाया है, इतना पैसा कमाया था। 760 रुपए शेष निकले थे। सात सौ साठ अब के समय के सात लाख के बराबर थे। तुम लोगों से पैसा सम्भाला न गया, सारा ही फकीरों को लुटा दिया तुम लोगों ने, नानक को समझाया नहीं। इस प्रकार उन्होंने (महिता कालू ने) बहुत लड़ाई की।

वह कहने लगा, महिता जी! हम लोगों से क्यों लड़ाई कर रहे हो? आप अपने पुत्र से ही लड़ाई करना। हम तो उनके दास हैं, जैसे वे कहते हैं हम तो वैसे ही करेंगे। हमारे अन्दर इस प्रकार की बातें करने की हिम्मत नहीं है। इस प्रकार से महिता जी ने उन लोगों को बहुत सारे उलाहने दिए। भाई वाला को उलाहना दिया कि जब तुम लोगों को खरा सौदा करने के लिए भेजा था, उस समय भी तुमने पैसे खराब करवाए और अब भी तुमने पैसे खराब करवाए, तुमने उसके पैसे सम्भाले नहीं।

वह बोला, महिता जी! मैं तो उनका चाकर हूँ, दास हूँ। मैं तो उनके द्वारा मोल खरीदा हुआ हूँ, मोल खरीदे हुए दास की क्या कीमत होती है? उसने तो मालिक की रजा में

ही रहना होता है। एक महीना भर ठहरने के बाद वे पुनः श्री गुरु नानक महाराज जी के पास आ जाते हैं। उससे भी पहले वे राय बुलार के पास गए। जब राय बुलार जी को पता चला तो वह उन्हीं का सम्मान करता जा रहा है। कह रहा है कि तुम लोक मेरे गुरु नानक के पास से आए हो। बार-बार बातें पूछ रहा है, जो बात पूछ ली उसे दोबारा पूछने लग पड़ता है। दूसरे दिन फिर पूछ लेता है। तीसरे दिन फिर पूछ लेता है। बार-बार उसे उन्हीं बातों में से रस आता है। फिर कहने लग जाता है, मरदाना जी! मुझे कोई और बात सुनाओ नानक के बारे में। वे तो मेरे अल्लाह हैं। कुछ और सुनाओ। गुरु जी कहते हैं कि जो अपने प्यारे की बात सुनाता है, उसे अपना सर्वस्व अर्पण कर दो। मन भी, तन भी, धन भी, घर भी -

**मेरे हरि प्रीतम की कोई बात सुनावै**

**सो भाई सो मेरा बीर ॥**

**अंग - 862**

वह तो मेरी माँ से ही पैदा हुआ मेरा भाई है, जो मेरे हरि प्रियतम की बात सुनाता है। इस प्रकार का भी फुरमान आता है -

**धारना - सीस वृढ के बणा देवाँ मूड़हा,  
गलाँ जो सुणावे तेरीआँ।**

**तै साहिब की बात जि आखै**

**कहु नानक किआ दीजै ॥**

**सीसु वढे करि बैसणु दीजै**

**विणु सिर सेव करीजै ॥**

**अंग - 558**

जिसके हृदय में प्यार हो, यदि किसी ने प्यार का आनन्द लिया हो, उसे पूछो कि अपने प्यारे की बातें सुनना कितना प्यारा लगता है। बार-बार पूछते रहते हैं। बच्चा परदेश गया हो, उसके पास से कोई सन्देश लेकर आए, भले ही सन्देशा बिल्कुल मामूली सा हो, लेकिन माँ-बाप सुनते रहेंगे। फिर उसने क्या कहा था? उसने कैसे कपड़े पहने हुए थे? कैसे कह रहे थे? वही बात बार-बार अच्छी लगती है। मजनु को एक काफिला मिल जाता है, उसे पता चलता है कि काफिला ईरान से आया है। वह सबसे पूछने लगता है कि क्या कोई लैला की गली में से भी आया है? एक प्रेमी कहता है कि मैं उसकी गली में से आया हूँ। वह उसके साथ बातें करने लगता है। उसका बोझ भी उठाता है, उसे अन्य सहूलियतें भी प्रदान करता है और दिल्ली तक इसी प्रकार से बातें करता पहुँच गया। वह क्या कहती थी? किस प्रकार चलती थी? उसने

कैसी पोशाक पहनी हुई थी? यदि इश्क-ए-मजाजी वाला यहाँ तक पहुँच सकता है, तो इश्क-ए-हकीकी वाले का तो हिसाब किताब ही क्या है। वह तो मर मिट जाता है।

इस प्रकार से राय बुलार बार-बार पूछता है और वे बताते जाते हैं और इसी क्रम में एक दिन चलने का समय आ गया। वे कहने लगे राय बुलार जी! आज हम प्रस्थान करेंगे और श्री गुरु नानक देव जी के पास जाएंगे। अब राय बुलार जी कहने लगे भाई मरदाना! भाई बाला! दोनों हाथ जोड़कर मेरी तरफ से गुरु नानक देव जी को दण्डवत प्रणाम करना -

**धारना - जिंद बचदी नहीं गुर दरस बिनाँ।**

**जिउ मछुली बिनु पाणीअै किउ जीवणु पावै ॥**

**बूंद विहूणा चातिको किउ करि त्रिपतावै ॥**

**नाद कुरंकहि बेधिआ सनमुख उठि धावै ॥**

**भवरु लोभी कुसम बासु का मिलि आपु बंधावै ॥**

**तिउ संत जना हरि प्रीति है देखि दरसु अघावै ॥**

**अंग - 708**

भाई मरदाना! रो-रो कर मेरी विनती करना कि जिस प्रकार से मछली, पानी के बिना नहीं रह सकती है, हिरण शब्द ( एक विशेष प्रकार की गंडा हेरा की आवाज ) का बांधा हुआ शिकारी के सामने चला जाता है और अपने तन व मन की उसे सुध ही नहीं रहती है। इस प्रकार से जाकर तुम लोग मेरी विनती करना -

**धारना - तैनुं नैणाँ दी सेज विछावाँ,**

**एक वारी आ जा मालका।**

**मू थीआउ तखतु पिरी महिंजे पातिसाह ॥**

**पाव मिलावे कोलि कवल जिवै बिगसावदो ॥**

**अंग - 1098**

इस प्रकार के भाव प्रकट करते हुए कहने लगे भाई बाला! भाई मरदाना! पातशाह जी को कहना कि एक बार तो आकर दर्शन दे जाएं। मेरे पास मेरे शरीर में सबसे कीमती अंग मेरे नेत्र हैं। मैं अपने नेत्रों को उनकी सेज बना दूँगा। इसलिए उनके पास जाकर प्यारपूर्वक मेरी विनती करना -

**धारना - तेरे वरगा ना जगत उते कोई,**

**सारा जग दूँड लिआ।**

**मनु लोचै हरि मिलण कउ**

**किउ दरसनु पाईआ ॥**

मै लख विड़ते साहिबा  
जे बिंद बोलाईआ ॥  
मै चारे कुंडा भालीआ  
तुधु जेवडु न साईआ ॥  
मै दसिहु मारगु संतहो  
किउ प्रभू मिललाईआ ॥  
मनु अरपिहु हउमै तजहु  
इतु पंथि जुलाईआ ॥  
नित सेविहु साहिबु आपणा  
सतसंगि मिललाईआ ॥  
सभे आसा पूरीआ  
गुर महलि बुलाईआ ॥  
तुधु जेवडु होरु न सुझई  
मेरे मित गोसाईआ ॥

अंग - 1098

धारना - आवाँ सिर दे भार,  
जे बल होवे, तन विच्य मेरे।

कहने लगे, भाई मरदाना! श्री गुरु नानक देव जी के सामने मैं तो कुछ भी नहीं हूँ, वह मेरा अपना आप है, वह मेरा खुदा है। मेरी तरफ से मेरी विनती करना कि पातशाह! मेरे शरीर में बल नहीं है। मुझे उसके जैसा संसार में कोई भी दिखाई नहीं पड़ा है। मेरा शरीर वृद्ध हो चुका है, चलना-फिरना मुश्किल हो गया है। अन्यथा मैं इतनी बेअदबी न करता और मैं अपने सिर के बल चल कर जाता। श्री गुरु नानक को कह दो -

जिउ सरिता निसबल बिन बारी।

जिस प्रकार से जो नदी होती है, वह पानी के बिना किसी काम की नहीं होती है -

हीन मियंक सरवरी कारी।

जिस प्रकार से चन्द्रमा के बिना काली रात अमावस्या की होती है, वह प्यारी नहीं हुआ करती है -

जिउ अनाथ बिन भरता नारी।

नवयुवती का पति मर जाए, तो वह पति के बिना अनाथ हो जाती है, इस प्रकार की हालत मेरी हो चुकी है-

तिउं तुम मै बिन देह हमारी।

गुरु नानक को कह देना कि आपकी कृपा के बिना मेरी देह निरर्थक हो चुकी है -

जे होवै बल तन बिखै आवहुं सिर के भार।

यदि मेरे अन्दर बल होता तो मैं अपने पैरों के बल चलकर जाता। लेकिन श्रद्धा वाला उससे भी अधिक जाता है। हमने नानकमता के पास इस प्रकार के बहुत से श्रद्धालु देखे हैं जो कि दण्डवत् करते-करते जाते हैं। हम लोग तो जैसे ही डींगे मारते रहते हैं कि हम गुरु के सिक्ख हैं। हमने एक विशेष प्रकार की वेश-भूषा पहनी हुई है, हमारी शक्ल इस प्रकार की है, हमने तो गुरु पर कब्जा कर रखा है। गुरु किसके ऊपर दयालु है, इसका हमें पता नहीं है। हम तो जैसे ही गुरु पर कब्जा किए बैठे हैं। कई साल पहले जब हम लोग नानकमता गए क्योंकि उस समय धीरे-धीरे जाया करते थे, कोई जल्दबाजी नहीं हुआ करती थी, आजकल की भांति कारणों को भगाते हुए नहीं जाते थे, कि आस पास का कुछ पता ही नहीं होता है कि क्या हो रहा है, अपितु आस-पास की जिन्दगी के साथ सांझेदारी होती थी, जहाँ मन करता था, ट्रैक्टर रोककर बातचीत करने लग पड़ते थे। जब हम लोग नानकमता से कोई चार कि. मी. पीछे रह गए तो वहाँ पर क्या देखते हैं कि वहाँ पर कई थारू लोग खड़े हैं। वे अपने कपड़े उतार रहे हैं तथा अपनी घरवालियों को पकड़ा रहे हैं। हम लोगों ने देखा कि शायद नदी में नहाने लगे होंगे। हम भी वहाँ पर खड़े होकर ट्रैक्टर को ठण्डा करने लग पड़े। हम लोगों ने देखा कि वे वहाँ पर लम्बे पड़ गए, फिर सिर के पास लकीर खींच लिया करें, फिर लम्बे लेट जाएं, फिर लकीर खींच लें, फिर लेट जाएं। इस प्रकार से वे अपना मार्ग तय करने लगे। मेरे मन में आया कि जो गुरवाणी में आता है कि 'डंडउति बंदन अनिक बार .....।' वह यही है। जहाँ से उन्हें गुरुद्वारा साहिब की इमारत का कलश दिखाई पड़ जाता था, फिर वे पैरों के बल नहीं चलते थे बल्कि शरीर के बल चलते थे। बताओ उनकी कितनी श्रद्धा है। आगे जाकर हमने देखा कि जो पहले चले हुए थे, उनकी छातियों में से खून निकल रहा है, उनके माथे में से खून निकल रहा है क्योंकि छाती व माथा धरती से रगड़ता रहता। यदि पराकाष्ठा तक की श्रद्धा हो तभी कोई इस प्रकार से अपने इष्ट के पास जाया करता है। हम लोगों ने तो जैसे ही मजाक सा बनाया हुआ है, जबकि प्यार वाली बातें तो कुछ और प्रकार की ही होती हैं। इस प्रकार यह ( राय बुलार ) कह रहा है कि यदि मेरे शरीर में बल हो -

तनु तपै तनूर जिउ बालणु हड बलनि ॥

पैरी थकाँ सिरि जुलाँ जे मूं पिरी मिलनि ॥

अंग - 1384

बाबा फरीद जी कहते हैं कि यदि मैं चलता-चलता थक जाऊँ तो सिर के बल चलने लग पड़ूँ, मेरे पैर, मेरा सिर बन जाएँ।

अतः इस प्रकार का प्यार का सन्देश दे रहा है। आम व्यक्ति इस सारी बात को समझ नहीं पाया करता है। यह तो उसी को पता चलता जिसे कि प्रेम-पीर लग जाती है-

**लागी होइ सु जानै पीर ॥ अंग - 327**

वही उस पीड़ा को जानता है, इस पीड़ा की दवाई किसी के पास नहीं होती है -

**धारना - प्रेम वाला ओ बाण लग के,  
दारु एस दी वैद ना जाणे।**

**वैदु बुलाइआ वैदगी पकड़ि ढंडोले बाँह ॥  
भोला वैदु न जाणई करक कलेजे माहि ॥**

**अंग - 1279**

श्री गुरु नानक देव जी वैद्य को कहते हैं वैद्य जी! तुम्हें मेरी बीमारी के बारे में पता नहीं है। यह तो प्यार है। अतः इस प्रकार का बाण राय बुलार के हृदय में लगा हुआ है -

**अहिनिमि जागै नीद न सोवै ॥  
सो जाणै जिसु वेदन होवै ॥ अंग - 993**

**आशकारा नव नीशानी औ पिसर,**

नौ निशानियां हुआ करती हैं, और उन नौ ही निशानियों में नींद नहीं आती है। एक निशानी है -

**अहिनिमि जागै नीद न सोवै ॥  
सो जाणै जिसु वेदन होवै ॥  
प्रेम के कान लगे तन भीतरि  
वैदु कि जाणै कारी जीउ ॥ अंग - 993**

जिसके अन्दर प्रेम के तीर लग गए हैं, उसके बारे में उसी को पता है, वैद्य को पता नहीं चल पाता है कि कौन सी मरहम-पट्टी से प्यार का इलाज हुआ करता है। इस प्रकार से राय बुलार विनतियां करता है। कहने लगे भाई मरदाना! भाई बाला! मेरी आँखों में से जिस प्रकार आंसू गिर रहे हैं, उसी प्रकार से आँखों में से आंसू निकालते हुए आप लोग मेरी तरफ से विनती करना कि तुम्हीं मेरे खुदा हो, तुम्हीं मेरे अल्लाह हो और मैं उसके दर्शनों के बिना नहीं रह सकता हूँ। कृपा करके मुझे एक बार दर्शन प्रदान करने की कृपा करें। उस समय भाई बाला तथा भाई मरदाना जी के हृदयों

पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा क्योंकि प्यार जो है, वह गहरा प्रभाव छोड़ जाया करता है।

उस समय भाई बाला जी व भाई मरदाना जी कहने लगे, राय जी! श्री गुरु नानक देव जी के साथ आपका जो सम्बन्ध है, उसे आप स्वयं ही जानते हो। आप बहुत ही उच्चावस्था के स्वामी हो। हमारे अन्दर वह दिव्य प्रेम पैदा नहीं हो सका है, जो कि आपके हृदय में है। इसका कारण यह भी है कि हम लोग मिलाप में रहते हैं, मिलाप के अन्दर, वसल के अन्दर, वह आनन्द नहीं हुआ करता है जो कि इन्तजार के अन्दर होता है। ठीक है, हम लोग जाते हैं और जाकर आपकी सारी हालत श्री गुरु जी के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयत्न करते हैं।

अब भाई बाला तथा भाई मरदाना श्री गुरु जी के पास चले जाते हैं जो कि भाई लालो जी के घर में ठहरे हुए हैं। वहाँ पर जाकर आप लोग विनतियां करते हैं कि महाराज जी! सभी आपके दर्शन करने के लिए उतावले हैं। माता जी भी कहते हैं कि एक बार आकर मिल जाएं लेकिन महाराज जी! राय बुलार को तो हमने ऐसी हालत में देखा है कि उसकी आँखों का नीर रुकने का नाम ही नहीं लेता है, बात करते समय उसका गला रुक जाता है और उससे आपकी बात होती ही नहीं है। बड़ी-बड़ी देर तक सम्भल कर वह बात करता है और उसके बाद उसका गला पुनः रुक जाता है, फिर नेत्रों में से जल जाने लग पड़ता है, वह तो आपके दर्शनों की प्रतीक्षा में ही एक-एक क्षण गुजार रहा है। पातशाह! जब हमने बताया कि आप सैदपुर, ऐमनाबाद में हो तो उस समय से उसी दिशा में बैठता है कि मेरा गुरु नानक इस तरफ बैठा है।

इधर गुरु नानक को कोई भी सांसारिक प्यार, मोह नहीं रोक सकता है, न माँ का, न पिता का, न किसी भाईचारे का, न किसी अन्य का प्यार आकर्षित कर सकता है। यदि गुरु नानक किसी के वश में आता है तो वह अपने प्यारों के वश में आता है क्योंकि परमेश्वर का स्वभाव ही ऐसा है-

**गोबिंद भाउ भगत दा भुखा।**

वह तो केवल प्यार का भूखा है, प्यार के साथ ही वह बाँधा जाता है। वह कितना बड़ा है, इसका तो अनुमान लगाया ही नहीं जा सकता है लेकिन उसके प्यारे उसे अपने

अन्तःकरण ( मन, चित्त, बुद्धि, अहंभाव ) में कैद कर लेते हैं और वह वश में आ जाता है, आप इस प्रकार का फुरमान करते हैं -

**धारना - र्व वस भगताँ ने कीता,  
पा के ते प्रेम डोरीआँ।**

**ना तू आवहि वसि बहुतु धिणावणे ॥  
ना तू आवहि वसि बेद पड़ावणे ॥  
ना तू आवहि वसि तीरथि नाईअै ॥  
ना तू आवहि वसि धरती धाईअै ॥  
ना तू आवहि वसि कितै सिआणपै ॥  
ना तू आवहि वसि बहुता दानु दे ॥  
सभु को तेरै वसि अगम अगोचरा ॥  
तू भगता कै वसि भगता ताणु तेरा ॥ अंग - 962**

वह गुरु नानक जिसे किसी परिवार का मोह अपनी तरफ खींच नहीं सकता है, वे प्यार के वशीभूत अपना मिशन पूरा करने के लिए चले जा रहे जिस प्रकार से किसी गरीब व्यक्ति को पारस मिल जाए तो वह उसे छोड़ा नहीं करता है, उसी प्रकार से माता जी श्री गुरु नानक को अपने गले से दूर नहीं करना चाहते हैं -

**अश्रुपात सों भीगे अंगा।**

**श्री गुरु नानक प्रकाश, पंजा - 471**

ऐसा प्रतीत होता है कि मानो प्रेम का सारा परिवार ही उस स्थान पर आकर मिल रहा हो। अतः माता जी को महाराज जी ने समझाया और इसी बीच पिता श्री ( महिता कालू जी ) भी पहुँच गए। उन्होंने दूर से ही देख लिया कि नानक ने एक तौलिया सा सिर पर बाँधा हुआ है और दो गज कपड़ा कमर पर बाँधा हुआ है। शेष सारा शरीर नंगा है। वे तो दूर से ही कहने लग पड़े कि तुमने ये क्या शक्ल बनाई हुई है, हमारे सगे सम्बन्धी क्या कहेंगे कि तुम्हारे बेटे को कौन सा ऐसा दुख लग गया था जिस कारण से फकीरी धारण कर ली। तेरा कितना बड़ा कारोबार था, 760 रु. तुम्हें बचे थे, तुम उसे सम्भाल न सके। वह रकम तुम्हारे काम आती और तुम उससे कपड़े खरीद कर डाल लेते। तुमने यह क्या वेश बना लिया है, सारी इज्जत खराब करके रख दी। सारा भाईचारा हमें क्या कहेगा? लोग कह रहे हैं कि कालू का बेटा फकीर बन गया है।

अतः इस प्रकार के सारे उलाहने जो दुनियादार लोग

दिया करते हैं, वे सारे कालू जी ने दिए। महाराज जी चुपचाप बैठे रहे। आपने कुछ भी नहीं कहा। सयाने लोगों के सामने तो कुछ भी कहना बनता नहीं है। जब पिता श्री काफी बोल चुके तो माता जी ने कहा, नानक! तुम्हें राय बुलार मिलना चाहता है। महाराज जी तो पहले ही जाने के लिए तैयार बैठे थे, अतः उस समय आप उठकर चल पड़े और आप राय बुलार जी के पास पहुँच जाते हैं। आगे वह अपनी चारपाई पर से उठता है और गुरु नानक पातशाह के चरणों पर नमस्कार करने के लिए उतावला हो उठता है। जब उसने ( गुरु ) नानक के चरणों पर उठकर नमस्कार की तो महाराज जी ने उसके शीश को अपने हाथों से रोक लिया और उसके बारे में इस प्रकार से फुरमान करते हैं -

**प्रेम संगि गदगद गिरा,  
नैन अनंद को नीर।**

**श्री गुरु नानक प्रकाश, पंजा - 475**

नेत्रों में खुशी के आँसू चल रहे हैं जो कि रुकने का नाम नहीं ले रहे हैं। इस स्थिति को कोई भी समझ नहीं सकता है। उसकी वाणी भी रुक गई, अब बोला नहीं जा रहा है -

**मानहु गयान सनेह दो धरि के मिले श्रीर।**

**श्री गुरु नानक प्रकाश, पंजा - 475**

एक तरफ प्यार है और दूसरी तरफ पूर्ण ज्ञान है, दोनों इस प्रकार से प्रतीत हो रहे हैं कि मानो शरीर धारण करके मिल रहे हों। एक तरफ भक्त है और दूसरी तरफ भगवान हैं-

**भयो निमगन प्रेम असगाहू।**

**पैरन पार न पावहि बाहू।**

**लोचन ते मोचति जलधारा।**

**श्री गुरु नानक प्रकाश, पंजा - 475**

नेत्रों में से अश्रुधारा प्रवाहित हो रही है -

**पुलकति देहि न बोल उचारा।**

**श्री गुरु नानक प्रकाश, पंजा - 475**

गला रुक गया है और सारा शरीर रोमांचित हुआ पड़ा है। शरीर के सारे रोमकूप खड़े हो गए हैं और बोला नहीं जा रहा है -

**भगतन को निज ते अधिकारी।**

**देति दास को वड वडिआई।**

**श्री गुरु नानक प्रकाश, पंजा - 475**

गुरु जी बोले, राय जी! आप यहाँ पर पलंग पर बैठ जाओ और हम यहाँ पर बैठते हैं।

राम जी कहने लगे, नहीं महाराज! आप सिरहाने की तरफ बैठो, इधर बैठो। अब तो मैं नीचे ही बैठूँगा। मैं पलंग पर बैठने के योग्य नहीं हूँ। उधर महाराज जी उसकी बड़ाई करते हैं क्योंकि यह तो आदि जुगादि से रीति चली आई है कि परमेश्वर अपने भक्त की बड़ाई करता है -

**जानति है जग नई न रीती।**

**अहै सनातन सभि जुग कीती।**

**श्री गुरु नानक प्रकाश, पंजा - 475**

सारा संसार इसे जानता है, यह कोई नवीन रीति नहीं है -

**अहै सनातन सभि जुग कीती।**

**श्री गुरु नानक प्रकाश, पंजा - 475**

यह तो सबसे प्राचीन रीति है -

**पाँडव हुतो जुधिष्टर राउ।**

**किशन किये बसि भगति प्रभाउ।**

**श्री गुरु नानक प्रकाश, पंजा - 475**

युधिष्ठिर ने अपनी भक्ति के प्रभाव से श्री कृष्ण जी को अपने वश में किया हुआ था और वे भी पाँडवों को सम्मान देते थे।

अतः राय बुलार कहता है महाराज! आप तो मेरे अल्लाह हो, मेरे खुदा हो। निःशंक मेरा शरीर मुसलमान के घर का है, लेकिन आप मेरे खुदा हो। इस प्रकार की उच्च भावना उसकी है। गुरवाणी में इसे इस प्रकार से प्रकट किया गया है -

**धारना - गुर गोबिंद गोबिंद गुरु है,  
नानक भेद ना भाई।**

**समुंदु विरोलि सरीरु हम देखिआ**

**एक वसतु अनूप दिखाई ॥**

**गुर गोविंदु गोविंदु गुरु है नानक भेदु न भाई ॥**

**अंग - 442**

जब शरीर की पड़चोल करके देखी तो अन्दर एक उपमा रहित शरीर दिखाई पड़ा -

**गुर गोविंदु गोविंदु गुरु है नानक भेदु न भाई ॥**

**अंग - 442**

गुरु और गोबिंद में कोई भेद नहीं हुआ करता है

गुरु अंगद महाराज जी, भाई बाला जी को पूछने लगे कि भाई बाला! तुम गुरु नानक के साथ में रहे हो, तुम उन्हें क्या समझते रहे?

कहने लगे महाराज! वे तो पूर्ण सन्त थे।

महाराज जी ( गुरु अंगद देव जी ) कहने लगे, अच्छा भाई तुम पूर्ण सन्त हुए।

अब महाराज जी ने पूछा, बाबा बुद्धा जी! आप भी गुरु जी के साथ आजीवन रहे, आप उन्हें क्या समझते रहे?

कहने लगे, महाराज! वे तो पूर्ण ब्रह्मज्ञानी थे।

गुरु जी ने कहा, अच्छा तो फिर तुम ब्रह्मज्ञानी हुए।

गुरु जी - भाई मनसुख! आप क्या समझते रहे?

भाई भगीरथ जी - आप उन्हें क्या समझते रहे?

सारे गुरसिक्खों ने अपनी-अपनी भावना के अनुसार उत्तर दिए। आखिर में सबने पूछा महाराज! आप श्री गुरु जी को क्या समझते रहे?

इतनी बात सुनते ही आपके अन्दर एक हुलारा सा लगा और नेत्रों में से जल की बूँदें टपक पड़ीं, आवाज बन्द हो गई। काफी समय बाद आपने अपने मुखारबिन्द से फुरमान किया कि गुरुमुखो! गुरु नानक पातशाह!

**आपि नराइणु कला धारि जग महि परवरियउ ॥**

**अंग - 1395**

वे तो स्वयं परमेश्वर ही, गुरु परमेश्वर के रूप में मनुष्य शरीर में प्रकट हुए थे। सुना है न तुमने जब आप सच्चखण्ड में गए थे, तो उन्हें पारब्रह्म परमेश्वर ने कहा, हे नानक! मैं पारब्रह्म परमेश्वर और तुम गुरु परमेश्वर तुझमें और मुझमें जो भेद जानेगा वह मेरी दरगाह में प्रवेश न पा सकेगा। तुम और मैं एक हूँ। तुम गुरु और मैं परमेश्वर। मेरा कोई भी पारावार नहीं पा सकता है, मैं वह परमेश्वर हूँ लेकिन तुम और मैं अब दो नहीं बल्कि एक ही हैं।

अतः इस प्रकार से जब सबने सुना तो सबने नमस्कार कर दी कि महाराज! इसीलिए आप परमेश्वर रूप हो गए हैं। आपकी भावना सर्वोच्च है।

अतः जिस प्रकार की भावना के साथ -

.....जेहा भाउ तेहा फलु पाईअै ॥ अंग - 602

गुरु के ऊपर जिस प्रकार की भावना रखो वैसा ही फल प्राप्त होगा -

**जिउकरि निरमलु आरसी जगु वेखणि वाला।**

**जेहा मुहु करि भालीअै तेहो वेखाला।**

**भाई गुरदास जी, वार 34/1**

शीशे के अन्दर आप जिस प्रकार का मुँह बनाकर देखोगे उसी प्रकार का मुँह तुम्हें दिखाई देगा, उसी प्रकार से गुरु के ऊपर तुम जिस प्रकार की भावना रखोगे, उसी भावना के साथ गुरु दर्शन दिया करता है। अतः राय बुलार की श्री गुरु जी पर यह भावना थी कि तुम मेरे परमेश्वर हो-

**परमेशुर तूं पुरख पुरातन।**

**पारब्रहम किरपाल सनातन।**

**जोती रुप अनूप सरुपा।**

**शाहिनशाह भूप को भूपा।**

**श्री गुरु नानक प्रकाश, पंना - 475**

हे गुरु नानक महाराज! मैं तुम्हारे बराबर कैसे बैठूँ? तुम तो स्वयं परमेश्वर हो, पुरुष पुरातन हो। तुम आदि पुरुष व ज्योति स्वरूप हो, तुम्हारा शरीर उपमा से रहित है। तुम पातशाहों के पातशाह हो, भूपों के भूप हो। इस प्रकार के वचन करके आप श्री गुरु नानक पातशाह की दया दृष्टि के पात्र बने हुए हैं। उस समय चहुँओर चुप्पी छाई हुई है। कोई भी वचन नहीं कर रहा है। राय बुलार के मुख से कोई भी वचन बाहर नहीं निकल रहा है, आप दोनों हाथ जोड़कर खड़े हैं, संकल्प-विकल्प पूर्णतः शान्त हो चुके हैं।

महापुरुषों के पास जाकर संकल्प-विकल्प पूर्णतः शान्त हो जाया करते हैं, जो प्रश्न पूछने गया हो, उसे भूल जाता है। इस समय माता जी ने विनती की कि राय जी! देखो! आप भी नानक को प्यार करते हो और मैं भी। मैं माँ हूँ, मैं भी इन्हें अपनी आँखों से दूर नहीं करना चाहती हूँ। क्या कोई ऐसा तरीका निकल सकता है जिसकी बदौलत नानक यहीं पर रहना शुरू कर दे? यहीं पर भजन बन्दगी करे, इसे कोई, कुछ भी नहीं कहेगा।

उस समय महिता कालू जी कहने लगे, देखो! एक बात का हमें ऐतराज है कि जो यह दो गज कपड़ा इसने कमर के साथ बाँध लिया है, इससे हमारे कुल की रीति खराब हो रही है। तुम यहाँ पर रहो, मैं तुम्हें कुछ नहीं कहता हूँ, न नौकरी

न चाकरी परन्तु तुमने काम बहुत खराब कर दिया है। देखो कितना अच्छा वहाँ पर लगा हुआ था, कितने पैसे तुम्हें बचते थे, वह सब कुछ छोड़कर व धन लुटा कर तुम चले गए। बाल-बच्चे क्या खाएंगे। कहते-कहते उसी बात पर पुनः आ गया। दरअसल उसकी सारी वृत्ति मायाकारी थी। इसे इस बात में कोई रुचि नहीं थी कि पुत्र संसार का भला करे या हमारी कुल का उद्धार करे। बस, उसके मन में यही बात थी कि मेरा पुत्र खूब पैसा कमाए और लोग कहें कि महिता कालू का जो पुत्र है, यह बहुत धनी है, बहुत बड़ा कारोबारी है, बहुत बड़ा व्यापारी है।

उस समय राय बुलार जी कहने लगे! नानक जी! यदि आपकी रजा हो तो मैं आपको जमीन दे देता हूँ, और उसकी मालगुजारी भी मैं बिल्कुल नहीं लूँगा बल्कि वह पूर्ण रूपेण आपकी अपनी जमीन होगी। आप आराम से बैठकर उस पर खेती करो, जमीन बहुत उपजाऊ है, कुएं लगे हुए हैं, आप आराम से खेती करो। उस वक्त गुरु जी ने फुरमान किया कि राय जी! हमारी तो खेती बहुत अधिक फैली हुई है, फूली हुई और फली हुई है, तथा वह अमूल्य खेती है।

महिता कालू जी कहने लगे, नानक जी! उधर तुमने कहाँ पर जमीन ले ली है? मुर्ब्बे वगैरह ले लिए हैं, जहाँ पर तुम खेती करते हो?

कहने लगे पिता जी! मुर्ब्बे तो मेरे साथ ही हैं। जो शरीर है, यह मेरा खेत है, यह जो मन है, इसे मैंने किसान बना दिया है कि अब तुम कोई संकल्प-विकल्प मत करो ब्रह्ममुहुर्त में जागो और जागकर स्नान करो। फिर तुम ब्रह्ममुहुर्त में इस खेत में हल चलाओ। हल किस चीज का चलाना है? अन्दर को श्वास जा रहा हो तो सतिनाम कहो, बाहर को आता है तो वाहिगुरु कहो। कहने लगे कि यह हल दिन रात चल रहा है। जो शुभ कर्म करने हैं, उनका कृषि कार्य हम कर रहे हैं। जो हम भजन बन्दगी के लिए तपस्या करते हैं, उसका पानी दे रहा हूँ, मैंने तन को खेत बनाया है, उसके अन्दर जो मैं बीज बो रहा हूँ, उसका तो कोई मूल्य ही नहीं है, वह अमूल्य है -

**साई नामु अमोलु कीम न कोई जाणदो ॥**

**जिना भाग मथाहि से नानक हरि रंगु माणदो ॥**

**अंग - 81**

उसकी कीमत को कोई जान ही नहीं सकता है, इस

प्रकार का मैं बीज उसके अन्दर डाल रहा हूँ, उसके बाद मैं इसके ऊपर सन्तोष का सोहागा दे रहा हूँ तथा नम्रता की बाड़ इसके चारों तरफ करता हूँ, इसके बाद जो इसकी मैं गुड़ाई करता हूँ, वह भय व प्यार वाली करता हूँ।

नौ प्रकार की भक्ति होती है - कीर्तन भक्ति, नाम स्मरण भक्ति, नमस्कार भक्ति, अरदास भक्ति, अर्चना भक्ति, पूजा भक्ति, सखा भक्ति, पतिव्रता स्त्री भक्ति, दास भक्ति तथा प्रेम भक्ति। इन सबको फल लगा करता है। प्रेम भक्ति के बाद होती है - परा भक्ति। यह होती है कि स्वयं को मिटा कर अपने प्यार के अन्दर समा जाना।

परा भक्ति से ही अपरा भक्ति होती है। अपने प्यारे के बिना संसार में कोई नजर ही न आना।

गुरु जी कहने लगे कि हम यह कर्म करके इस खेती की सम्भाल कर रहे हैं और जब यह खेती उग जाएगी और यह जिस घर में भी जाएगी तो वह घर भाग्यशाली हो जाएगा। उसके भाग्य फिर इतने बड़े हो जाएंगे कि फिर वह स्वयं भी खाएगा और संसार को भी खिलाएगा तथा उसे कभी भी कोई कमी नहीं आएगी। अतः इस प्रकार से आपने फुरमान किया। प्यारपूर्वक पढ़ो -

**धारना - बीज पाउणा ओ सच्चे नाम दा,  
वाड़ करनी औ गरीबी वेस वाली।**

**मनु हाली किरसाणी करणी सरमु पाणी तनु खेतु ॥  
नामु बीजु संतोखु सुहागा रखु गरीबी वेसु ॥  
भाउ करम करि जंमसी से घर भागठ देखु ॥**

अंग - 595

मन को हमने किसान बनाया हुआ है, तथा जो कृषि कार्य है, यह शुभ कर्म करने का है, जब यह फसल उग जाएगी तो जिस घर में उगेगी वह घर भाग्यशाली हो जाएगा, फिर उसके बराबर कोई नहीं हुआ करता है। बड़े-बड़े बादशाह भी फिर उसके पीछे लगे फिरते हैं -

**जिस नो बखसे सिफति सालाह ॥**

**नानक पातिसाही पातिसाहु ॥**

अंग - 5

**राजा सगली सिसटि का हरि नामि मनु भिंना ॥**

अंग - 707

उसकी बादशाही केवल इसी दुनिया पर नहीं होती बल्कि -

**जा का कहिआ दरगह चलै ॥**

**सो किस कउ नदरि लै आवै तलै ॥**

अंग - 186

उसका कहना तो फिर दरगाह भी मानती है, क्योंकि वास्तव में वही सच्चे पातशाह होते हैं, शेष सारी दुनियां के बादशाह तो झूठे बादशाह हैं -

**धारना - सच्चे उह पातशाह, सच्चे नाल रते जिहड़े।**

जो सत्य के साथ वाहिगुरु के साथ मिले हुए हैं, वही सच्चे पातशाह होते हैं, शेष सारा संसार तो झूठे पातशाहों का है। महाराज जी कहते हैं अन्य झूठी पातशाहियों का क्या लाभ है? ये तो व्यर्थ की पातशाहियां हैं, वे तो अपना समय बरबाद करते हैं -

**कोउ हरि समानि नही राजा ॥**

**ए भूपति सभ दिवस चारि के झूठे करत दिवाजा ॥**

अंग - 756

वे तो झूठे पाखण्ड कर रहे हैं, झूठा प्रदर्शन कर रहे हैं। सच्चे तो केवल वही हैं -

**सचा अमरु साची पातिसाही सचे सेती राते ॥**

अंग - 749

जो सत्य के साथ जुड़े हैं, वे तो पातशाहों के पातशाह हैं।

गुरु छठे महाराज जी, जहाँगीर बादशाह, जो कि भारतवर्ष का चक्रवर्ती बादशाह था, के साथ जा रहे हैं और आगरा के पास आप ठहरे हुए हैं। बादशाह जहाँगीर कहने लगा - हे गुरु महाराज! मुझे एक बात हमेशा चुभती रहती है उसका निर्णय करके आप बतलाओ?

जहाँगीर बादशाह कहने लगा, देखो! मैं भारतवर्ष का बादशाह हूँ, लाखों वर्ग मी. क्षेत्रफल का मैं स्वामी हूँ, मेरे खजाने सोने, चाँदी व हीरे जवाहरातों से भरे पड़े हैं, मेरे एक इशारे पर लाखों करोड़ों लोग मारे जा सकते हैं और जिन्हें मारने का हुक्म हो उन्हें मेरे आदेश पर जीवित रखा जा सकता है, यानि कि बेशुमार अधिकार मेरे पास है, लेकिन लोग मुझे केवल बादशाह कहते हैं, जबकि इसके मुकाबिले पर आपको पास तो कुछ भी नहीं है लेकिन लोग आपको सच्चा पातशाह कहते हैं। यह बात कैसे सही है? महाराज जी कहने लगे, यह बात तो आप गुरसिक्खों से पूछो जो कि कहते हैं क्योंकि हमने तो आज तक किसी को नहीं कहा कि मुझे सच्चा

पातशाह कहो। समय आएगा आपको प्रयोगात्मक रूप से इसका जवाब प्राप्त हो जाएगा।

आज गुरु जी का शिविर लगा हुआ है, कुछ ही दूरी पर बादशाह (जहाँगीर) का शिविर भी लगा हुआ है। उधर एक गुरसिक्ख, जो कि घास काट कर बेचने का कार्य किया करता था, को भी पता चला कि आज गुरु जी पास में ही आए हुए हैं, इसलिए दर्शन करने चाहिए। इस शुभ ख्याल के कारण उसके मन में असीम आनन्दानुभूति हो रही है, उसका पैर धरती को नहीं लग रहा है। उसने खुर्पा व द्राती उठाई तथा सुन्दर-सुन्दर घास काटने के लिए चल पड़ा कि चलो गुरु जी के घोड़े के लिए घास भेंट करूँ, इसके साथ ही उसने पाँच पैसे मत्था टेकने के लिए ले लिए जिसे कि उसने बचा कर रखा हुआ था। पाँच पैसे को उसने कपड़े के टुकड़े में पाँच छः गाँठें बाँध कर रख लिए। अब उसने बहुत ही अच्छा घास काटा तथा एक गट्ठर बाँध लिया तथा सिर पर उठाकर चल दिया। उसने शरीर पर फटे हुए कपड़े पहने हुए हैं तथा वह पूर्णतः पसीने से तर-ब-तर हैं, उसी तरह से सिर पर उठाए आ रहा है, उसे यह भी पता नहीं था कि इधर जहाँगीर का शिविर भी लगा हुआ है। दैवनेत से वह गुरु जी के कैंप की बजाए जहाँगीर के कैंप में ही चला गया। पहरेदारों ने दूर ही रोक दिया कि खबरदार यदि इधर आया। वह कहने लगा, मैंने सच्चे पातशाह के दर्शन करने हैं, इसलिए मुझे रोको मत।

जहाँगीर तक आवाज पहुँच जाती है, वह बाहर आ गया। सिपाहियों को कहने लगा, इसे आ जाने दो, मेरे पास। सिपाहियों ने उसे जाने दिया, उसने घास का गट्ठर एक तरफ रख दिया और कपड़े के टुकड़े की गाँठों को खोलने लग पड़ा और गाँठों को खोलकर पाँच पैसे निकाल लिए। उसके बाद उसने बादशाह के चरणों पर पाँच पैसे रखकर मत्था टेका और दोनों हाथ जोड़कर रोने लग पड़ा। इसके साथ ही विनती करने लगा, सच्चे पातशाह! मेरा जन्म-मरण काट दो।

अब जहाँगीर के वश की यह बात तो थी नहीं क्योंकि वह तो स्वयं जन्म-मरण के चक्रव्यूह में फँसा हुआ था।

उधर वह बार-बार विनतियां कर रहा है कि मेरा जन्म मरण काट दो।

जहाँगीर कहने लगा, देखो घसियारे! मैं तुम्हें लाखों रुपए दे देता हूँ। तुम्हें अमीर बना देता हूँ, जिसकी वजह से तुम्हें

दोबारा घास काटने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। मैं तुम्हें गर्वनर बना देता हूँ। इसके अतिरिक्त तुम्हारे लिए बहुत सारी कोठियां या महल बनवा देता हूँ लेकिन यह जो तुम कह रहे हो कि मेरा जन्म-मरण काट दो, यह मेरे वश की बात नहीं है।

वह कहने लगा, सच्चे पातशाह! ऐसी कौन सी चीज है जो आपके वश में नहीं है?

आखिर में बादशाह को कहना पड़ा कि मैं तो दुनिया का बादशाह हूँ, सच्चे पातशाह का शिविर तो आगे लगा हुआ है। उस समय उस घसियारे ने पाँच पैसे और वह घास का गट्ठर उठा लिया और ऊँची आवाज में रोने लगा कि मुझसे कितनी बड़ी भूल हो गई है, मेरा शीश दुनिया के बादशाह के आगे झुक गया और मुझे वह सांसारिक माया ही देना चाहता है।

श्री गुरु जी ने भी वचन सुन लिए थे, आप पहले ही शिविर के बाहर खड़े हैं। यह घसियार गया और उसने घास का गट्ठर एक तरफ रखा और पाँच पैसे आगे रख कर मत्था टेका तथा जब वह नमस्कार करने लगा तो महाराज जी ने उसे रोक लिया। वह नमस्कार भी कर रहा है तथा इस प्रकार की विनती भी कर रहा है -

**धारना - जी मैं बहुइ जनम ना आवाँ,  
एहो मेरी बेनती गुरा।**

महाराज जी ने यह नहीं देखा कि वह पसीने से लथपथ है, कपड़ों पर मिट्टी पड़ी हुई है, फटे हुए वस्त्र पहने हुए हैं तथा बदबू आ रही है, बल्कि आपने उसे अपने आलिंगन में ले लिया तथा तीन बार कहा निहाल! निहाल! निहाल! इतना कहने की देर थी कि सिक्ख के रोम-रोम में कंपन होनी शुरू हो गई। अगम-निगम की समझ आ गई। उसके बज्र कपाट खुल गए और उसे वहाँ पर पहुँचा दिया जहाँ पर कि तपस्वी भी नहीं पहुँच पाते हैं या जहाँ पर बड़े-बड़े योगी बड़ी-बड़ी साधनाएँ करके भी नहीं पहुँच पाते हैं, कुछ समय बाद जब जहाँगीर, महाराज के पास आया तो उसने कहा, महाराज! आप वास्तव में सच्चे पातशाह हो और मैं वास्तव में झूठा पातशाह हूँ।

अतः महाराज जी कहते हैं कि जिनके घर में नाम का धन आ जाता है, उन्हें फिर किसी अन्य धन की जरूरत नहीं रह जाती है। दूसरी बात यह है कि यह जो ऋतु है, यह नाम बीजने की है, अन्य कोई दूसरी ऋतु नहीं है -

धारना - जी मैं बहुड़ जनम ना आवाँ,  
एहो मेरी बेनती गुरा।

धारना - कलू आइओ रे  
इक नाम बीज लओ।

सतिनाम वाहिगुरु अकाल पुरख तूहीं हैं।  
सतजुगि सतु तेता जगी दुआपरि पूजाचार ॥  
तीनौ जुग तीनौ दिड़े कलि केवल नाम अधार ॥

अंग - 346

अब कलू आइओ रे ॥  
इकु नामु बोवहु बोवहु ॥  
अन रुति नाही नाही ॥  
मतु भरमि भूलहु भूलहु ॥

अंग - 1185

वत लगी सचे नाम की जो बीजे सो खाइ ॥  
तिसहि परापति नानका जिस नो लिखिआ आइ ॥

अंग - 321

इस प्रकार से श्री गुरु जी कहने लगे, पिता जी! हम जो खेती करने लगे हुए हैं, उसका कोई मूल्य नहीं है, जो खेती आप लोग कर रहे हो, यह तो दुख रूप खेती है। ये तो दुख प्रदान करती है। इस संसार पर जितने बड़े-बड़े आए जिनके पास नाम का धन नहीं था, वे जब संसार से गए या संसार में रहे तो सुखी नहीं थे -

धारना - वूडे-वूडे दुनीआँ उते होए,  
रोंदे वेखे नाम तों बिनाँ।

सहंसर दान दे इंदु रोआइआ ॥  
परस रामु रोवै घरि आइआ ॥  
अजै सु रोवै भीखिआ खाइ ॥  
औसी दरगह मिलै सजाइ ॥  
रोवै रामु निकाला भइआ ॥  
सीता लखमणु विछुड़ि गइआ ॥  
रोवै दहसिरु लंक गवाइ ॥  
जिनि सीता आदी डउरु वाइ ॥  
रोवहि पाँडह भए मजूर ॥  
जिन कै सुआमी रहत हदूरि ॥  
रोवै जनमेजा खुइ गइआ ॥  
एकी कारणि पापी भइआ ॥

अंग - 953

महाराज जी ने कहा है, जो संसार की बड़ी-बड़ी हस्तियां हैं, जो इन्द्र है, उसके लोक का सुख, धरती के सुख से दस

खरब गुणा ज्यादा है, कहते हैं कि वह भी रो रहा था -

गोतमु तपा अहिलिआ इसरी  
तिसु देखि इंदु लुभाइआ ॥  
सहस श्रीर चिहन भग हूए ता मनि पछोताइआ ॥

अंग - 1344

जब उसका शरीर फट गया और हजारों भग के निशान उसके शरीर पर हो गए तो वह बदसूरत होकर रोया -

परस रामु रोवै घरि आइआ ॥  
अजै सु रोवै भीखिआ खाइ ॥  
औसी दरगह मिलै सजाइ ॥  
रोवै रामु निकाला भइआ ॥  
सीता लखमणु विछुड़ि गइआ ॥  
रोवै दहसिरु लंक गवाइ ॥  
जिनि सीता आदी डउरु वाइ ॥  
रोवहि पाँडह भए मजूर ॥

अंग - 954

जब मजदूर बन गए तो फिर रोते रहे, साल भर रोते रहे। 'जिन कै सुआमी रहत हदूरि।' द्वापर युग के अवतार श्री कृष्ण महाराज जी, जो कि सोलह कला सम्पूर्ण थे, उनके पास ही रहते थे, सारी बख्शीशें उनके पास थीं -

रोवै जनमेजा खुइ गइआ ॥  
एकी कारणि पापी भइआ ॥  
रोवहि सेख मसाइक पीर ॥  
अंति कालि मतु लागै भीड़ ॥  
रोवहि राजे कंन पड़ाइ ॥  
घरि घरि मागहि भीखिआ जाइ ॥  
रोवहि किरपन संचहि धनु जाइ ॥  
पंडित रोवहि गिआनु गवाइ ॥  
बाली रोवै नाहि भतारु ॥  
नानक दुखीआ सभु संसारु ॥  
मंने नाउ सोई जिणि जाइ ॥  
अउरी करम न लेखै लाइ ॥

अंग - 954

अतः जिसके पास नाम का धन है, वह लेखे में पड़ता, अन्य कुछ नहीं -

बाबा माइआ साथि न होइ ॥

अंग - 595

महाराज कहते हैं कि माया कहीं साथ जाती है?

ईन माइआ जगु मोहिआ विरला बूझै कोइ ॥

अंग - 595

आप इस प्रकार से फुरमान करते हैं -  
धारना - जिथे लेखा जिंदगी ने देणा,  
माइआ नहींओं नाल जावणी।

कपडु रुपु सुहावणा छडि दुनीआ अंदरि जावणा ॥  
मंदा चंगा आपणा आपे ही कीता पावणा ॥  
हुकम कीए मनि भावदे राहि भीड़ै अगै जावणा ॥  
नंगा दोजकि चालिआ ता दिसै खरा डरावणा ॥  
करि अउगण पछोतावणा ॥ अंग - 471

बाबा माइआ साथि न होइ ॥  
ईन माइआ जगु मोहिआ विरला बूझै कोइ ॥  
अंग - 595

कहने लगे पिता जी! जो आप माया की बात करते जा रहे हो, इसने कहीं दरगाह में साथ जाना है? यह रूप भी यहीं छोड़ जाना है, कपड़े भी छोड़ जाने हैं, मकान भी छोड़ जाने हैं, वहाँ पर तो कोई भी चीज साथ नहीं जाएगी, इस संसार में किए गए पापों का, बुरे कर्मों का, इसके ऊपर छापा पड़ा हुआ उसके धब्बे पड़े हुए साथ जाएंगे। वे सब दूर से ही दिखाई पड़ेंगे। इसके बाद इनके चाचा जी कहने लगे, नानक जी! यदि तुमने खेती नहीं करनी है, तो छाया में बैठो और व्यापार कर लो। सामान आ जाया करेगा, उसे मुनाफा लेकर बेच देना है। नौकर चाकर रख लो, हम लोग भी तो व्यापार ही करते हैं -

हाणु हटु करि आरजा ..... ॥ अंग - 595

यह जो उग्र है, यह हमने अपनी हड्डी बनाई हुई है-

.....सचु नामु करि वथु ॥ अंग - 595

सच्चे नाम की वस्तु हमने इसमें डाली हुई है, जो अच्छे गुण हैं, उनकी चीजें हमने इसमें डाली हुई हैं -

सुरति सोच करि भाँडसाल तिसु विचि तिस नो रखु ॥  
अंग - 595

सच्ची सुरति के हमने बर्तन बनाए हुए हैं, हम वह सारा माल सुच्ची सुरति में रखते हैं -

वणजारिआ सिउ वणजु करि लै लाहा मन हसु ॥  
अंग - 595

साधुओं के साथ हम बैठकर सत्संग करते हैं, यह हमारा व्यापार है।

इसके बाद वे कहने लगे, यदि तुम व्यापार नहीं करना

चाहते हो और आपका स्वभाव चलने फिरने का है तो आप यहाँ से घोड़े ले जाया करो और उधर बेच दिया करो और उधर से लाकर इधर बेच दिया करो। महाराज जी कहने लगे, हम यह भी व्यापार कर रहे हैं -

सुणि सासत सउदागरी मतु घोड़े लै चलु ॥  
खरचु बंनु चंगिआईआ मतु मन जाणहि कलु ॥

अंग - 595

जो हम धर्म ग्रन्थों को सुनते हैं, यह हमारी सौदागरी है। सत्य, सन्तोष, धैर्य, विचार आदि शुभ गुणों के हमारे पास घोड़े हैं। शुभ गुणों का हमने खर्च बाँधा हुआ है क्योंकि पता नहीं किस समय काल की गुलेल आकर लग जाए -

नह बारिक नह जोबनै नह बिरधी कछु बंधु ॥  
ओह बेरा नह बूझीअै जउ आइ परै जम फंधु ॥

अंग - 254

जब काल का विश्वास ही नहीं है और अच्छाइयों का खर्च हमने साथ ही बाँधा हुआ है -

निरंकार कै देसि जाहि ता सुखि लहहि महलु ॥

अंग - 595

जब निरंकार के देश में अच्छाइयां करके व्यक्ति जाता है, तो फिर उसे दरगाह में दिव्य सुख की प्राप्ति होती है।

फिर महिता कालू जी कहने लगे, देखो! तुम्हारी नौकरी कितनी अच्छी थी। सभी लोग तुम्हारा सम्मान करते थे। कितनी बड़ी तुम्हारी बचत थी। जिस समय की बात हो रही है, उस समय गुरु जी की तनख्वाह दो रुपए प्रतिमाह हुआ करती थी। उस समय गुरु जी के 760 रु. शेष निकले थे। इतनी अच्छी आपकी नौकरी थी, लेकिन यदि यह अच्छी नहीं लगती है, तो कोई और कर लो।

गुरु जी कहने लगे, हम तो नौकरी पहले ही कर रहे हैं -

लाइ चितु करि चाकरी मंनि नामु करि कंमु ॥

अंग - 595

जब हम ब्रह्ममुहूर्त में उठते हैं, तो उस समय चित्त लगाकर निरंकार की चाकरी करते हैं। कण-कण में उसकी ज्योति को परिपूर्ण देखना यह हमारा परम कर्तव्य है -

बंनु बदीआ करि धावणी ता को आखै धंनु ॥

नानक वेखै नदरि करि चडै चवगण वंनु ॥ अंग -

जब परमेश्वर ने कृपादृष्टि डाल कर देख लेना है तो पिता जी! फिर खुशियां ही खुशियां हो जानी हैं।

उस समय राय बुलार जी कहने लगे, नानक जी! आप इस प्रकार से करो कि साधू भेष में ही रहो क्योंकि देखो यहाँ पर कितने साधू आते हैं। दरअस्तल राय बुलार तुअस्वी नहीं थे, इसीलिए इसके राज्य में बहुत सारे साधू आकर निवास किया करते थे। राय बुलार जी कहने लगे उन साधुओं के लिए आप लंगर चलाओ, सारे साधू आपके लंगर में से भोजन ग्रहण करेंगे, लंगर के लिए मैं बहुत बड़ी जगीर लगा देता हूँ, आप जितनी चाहे जमीन रोक लो और उसकी आमदन से लंगर चलाओ। सेवादार काम किया करेंगे और जी भरकर साधुओं की सेवा करो।

महाराज जी कहने लगे, राय जी! लंगर तो बहुत बड़ा चल रहा है। वह लंगर इतना बड़ा है कि जिसमें कभी कोई कमी ही नहीं आती है। जब से संसार बना है, तभी से लंगर चल रहा है। उसके अन्दर कितने जीव भोजन ग्रहण करते हैं, इसका अनुमान लगाना भी मुश्किल है। 42 लाख किस्म की योनियां समुद्र के अन्दर हैं और 42 लाख किस्म की योनियां धरती के ऊपर हैं, इन सबके आहार का प्रबन्ध वह (परमेश्वर) स्वयं करता है। राय जी! उसे सबके लंगर की चिन्ता है -

**धारना - चिन्ता सारिआँ जीआँ दी है ओसनुं,  
जिहने इह जग साजिआ।**

**पुरखाँ बिरखाँ तीरथाँ तटाँ मेघाँ खेताँह ॥  
दीपाँ लोआँ मंडलाँ खंडाँ वरभंडाँह ॥  
अंडज जेरज उतभुजाँ खाणी सेतजाँह ॥  
सो मिति जाणै नानका सराँ मेराँ जंताह ॥  
नानक जंत उपाइ कै संमाले सभनाह ॥  
जिनि करतै करणा कीआ चिन्ता भि करणी ताह ॥  
सो करता चिन्ता करे जिनि उपाइआ जगु ॥  
तिसु जोहारी सुअसति तिसु तिसु दीबाणु अभगु ॥  
नानक सचे नाम बिनु किआ टिका किआ तगु ॥**

अंग - 467

**नानक चिन्ता मति करहु चिन्ता तिस ही हेइ ॥  
जल महि जंत उपाइअनु तिना भि रोजी देइ ॥  
ओथै हट्टु न चलई ना को किरस करेइ ॥**

**सउदा मूलि न होवई ना को लए न देइ ॥**

**जीआ का आहारु जीअ खाणा एहु करेइ ॥**

**विचि उपाए साइरा तिना भि सार करेइ ॥**

**नानक चिन्ता मत करहु चिन्ता तिस ही हेइ ॥**

अंग - 955

गुरु जी कहने लगे राय जी! लंगर की चिन्ता, जीवों के पालन-पोषण की चिन्ता तो वाहिगुरु जी को ही है और अकालपुरुष का लंगर तो आदि-युगादि से चला आ रहा है और उसमें कभी कोई कमी भी नहीं आई है। अतः परमेश्वर का लंगर तो निरन्तर चल रहा है, इसलिए हमें इस जागीर की कोई जरूरत नहीं है।

इसके बाद माता-पिता पुनः कहने लगे, बेटा! देखो सबके पुत्र धन कमाते हैं, संसार उनकी इज्जत करता है और इधर तुम फकीर बने घूमते हो, इस कारण से लोग हमें उलाहने देते हैं। हमारा तो जीना ही लोगों ने दूभर कर दिया है। उस समय श्री गुरु जी कहने लगे, पिता जी! यह माया जो है, यह जीव के साथ बहुत बड़ी ठगी हो रही है। इस माया ने इस जीव को ठगमूरी बूटी सुँघा दी है। परमेश्वर तो हमारे साथ ही रहता है लेकिन इस माया ने इस जीव और परमेश्वर के बीच एक पर्दा तान रखा है, इसलिए पास में रहता हुआ परमेश्वर दिखाई नहीं पड़ता है। एक, दो, चार नहीं बल्कि सारे संसार को ही इस माया ने मोह रखा है-

**धारना - सारा जग मोह लिआ जी,  
माइआ इह मोहनी भाई।**

**माते मतंग जरे जर संगि  
अनूप उतंग सुरंग सवारे॥  
कोट तुरंग कुरंग से कूदत  
पउन के गउन कउ जात निवारे॥  
भारी भुजान के भूप भली बिधि  
निआवत सीस न जात बिचारे॥  
एते भए तो कहा भए भूपति  
अंत कौ नाँगे ही पाइ पधारे॥  
जीत फिरै सभ देस दिसान को  
बाजत ढोल मिदंग नगारे॥  
गुंजत गूड़ गजान के सुंदर  
हिंसत ही हयराज हजारे॥  
भूत भविख भवान के भूपति**

कउनु गनै नही जाति बिचारे॥  
श्री पति श्री भगवान भजे बिनु  
अंत कउ अंत के धाम सिधारे॥

वप्रसादि स्रये, पातिशाही 10

बड़े-बड़े धन सम्पन्न लोग, बड़े-बड़े बादशाह जिनका मुकाबिला इस संसार में कोई भी कर नहीं सकता है, वे सब नाम के बिना जीवन की बाजी को हार कर जाते हैं और उन्हें दरगाह में जाकर अत्यन्त शर्मिन्दा होना पड़ता है। अतः श्री गुरु जी कहने लगे, पिता जी! आप माया के पीछे मत पड़ो, हम जो बात समझाते हैं, उसे समझने की कोशिश करो, हम जो नाम की खेती के बारे में बात करते हैं, आप उसे समझो। उस समय राय बुलार जी कहने लगे, महिता जी! आप गुरु नानक को कुछ मत कहो, इनकी अपनी मौज है, ये तो स्वयं अल्लाह ताला हैं और मनुष्य रूप में हमारे पास आए हुए हैं। आप इनके ऊपर से अपनी पुत्र भावना को छोड़ दो।

उस समय गुरु नानक जी कहने लगे -

कूर पसार रचयो करतार नै  
तान कनात दर्ई इह माया।

श्री गुरु नानक प्रकाश, पंजा - 482

परमेश्वर ने कूड़ (असत्य) का विस्तार करके माया का एक पर्दा लगा दिया है, जिसके प्रभाव से पास में रहता हुआ परमेश्वर दिखाई नहीं पड़ता है। साधु संगत! यह बात तो माननी चाहिए कि वह प्रत्येक क्षण हमारे साथ रहता है, प्रत्येक के अन्दर व बाहर वह हमारे साथ है। परन्तु हम कितना याद रख पाते हैं, इस सच्चाई को? इसका कारण यह है कि माया का पर्दा इस सत्य के आगे टंगा हुआ है -

रंग अनेकन की जु बनी  
जिन मानव को निज गयान भुलाया।

श्री गुरु नानक प्रकाश, पंजा - 471

अनेक रंगों की, अनेक प्रकार की, माया विद्यमान है, कहीं पर यह पुत्र-पुत्रियों के रूप में है, कहीं जायदाद के रूप में है, कहीं घोड़े या सवारियां हैं, कहीं नौकरी-चाकरी के रूप में है, कहीं पदों के रूप में यह उपस्थित है, यानि कि असंख्य रूपों में इसने अपना जाल फैलाया हुआ है। इसके प्रभाव में आकर व्यक्ति भूल गया है कि मैं कौन हूँ? कोई विरला है जिसे यह पता है कि मैं कौन हूँ? शेष सारा संसार तो कहेगा कि मैं तो तुम्हारे सामने खड़ा हूँ और किसे ढूँढते

हो -

पयार पदारथ, कूर सुआरथ बीच फसे  
सभि बैस बिहाया।

श्री गुरु नानक प्रकाश, पंजा - 485

कहते हैं कि झूठे पदार्थों में फँस कर, गलत चीजों के साथ प्यार डालकर, सारी जिन्दगी बेकार कर दी -

आदि सरुप अनादि लखयो नहिं  
तौ लखिहीं जि करै हरि दाया।

श्री गुरु नानक प्रकाश, पंजा - 485

फिर तुमने परमेश्वर का जो आदि स्वरूप है, उसका तो साक्षात्कार किया नहीं है। दरअस्त यह साक्षात्कार तभी हो पाता है, जबकि परमेश्वर की दया हो। अतः इस प्रकार के वचन जब श्री गुरु जी ने सुनाए तो उस समय राय जी ने सबको विदा कर दिया और कहने लगे, नानक जी! आप मेरे पास आओ और कृपा करके हमें कुछ दिन और दर्शन देते रहो।

अतः आप वहाँ पर ठहर जाते हैं, दिन के समय आप बाहर जंगल में चले जाते हैं और रात में वापिस आ जाते हैं। कभी आप माता-पिता के पास रात के समय रह जाते हैं और कभी राय बुलार के पास रह जाते हैं, इसी प्रकार से समय बीतता चला गया।

एक दिन माता (श्री गुरु नानक देव जी की माता) तुलसा दासी को कहने लगी, तुलसा! मैंने भोजन तैयार किया है, गर्मा-गर्म है। वह सामने नानक जी चारपाई पर लेटे हुए हैं, तुम जाकर उन्हें जगा लाओ ताकि वे गर्मा-गर्म भोजन कर लें। तुलसा उन्हें बहुत ही प्यार-सम्मान करती थी। उसके अन्दर उनके लिए असीम श्रद्धा भाव था। उस समय वह गुरु नानक के पास जाती है, आपका दायां चरण चढ़र से बाहर था। उसने गुरु नानक को जगाना ठीक न समझा और मौका मिल गया कि आज मैं गुरु नानक के चरणों के साथ अपना मस्तिष्क स्पर्श करवा लूँ। वह प्यार में इतनी मस्त हुई कि उसने अपने मस्तिष्क को गुरु नानक के चरणों से स्पर्श करवाने की बजाए महाराज जी के अंगूठे को ही अपनी जिह्वा लगा दी। जिह्वा लगने की देर थी कि उसी समय उसके बज्र कपाट एकदम खुल गए, दृष्टि कुछ और ही हो गई। उसे सारे खण्ड-ब्रह्मांड दिखाई देने लग पड़े। वह क्या देख रही है कि बहुत विशाल समुद्र है और समुद्र के पानी के ऊपर श्री गुरु

जी खड़े हैं। उधर मनसुख नाम का सिक्ख अरदासैं कर रहा है कि हे प्रभु! मेरे जहाज को अब पार लगा दो, यह डांवाडोल हो रहा है, मैं तेरा हूँ, अपने नाम का बिरद रखो। उस समय श्री गुरु नानक देव जी अपना सहारा देकर डूबते जहाज को बचा रहे हैं। वह काफी देर तक उस दिव्य दृष्य को देखती रही। उस समय माता ने आवाज दी, तुलसां! तुम आई नहीं? वह दौड़ कर वापिस लौट गई।

माता कहने लगी, तुलसां! तुमने नानक को जगाया नहीं? उसके मुख से सहज स्वभाव ही निकल गया, माता! मैं किसे जगाऊँ? वे तो श्रीलंका के पास किसी सिक्ख के जहाज को डूबने से बचा रहे हैं। माता के मन में नाराजगी आ गई कि घर के दास भी इस प्रकार की बातें करने लग पड़े हैं। उस समय वह स्वयं चली गई और जाकर आवाज दी और कहने लगी, बेटा! देखो! अब तो तुम्हारी फकीरी पर घर के लोग भी किस प्रकार से मखौल (मजाक) करते हैं, बाहर वाले तो पहले ही करते थे।

महाराज कहने लगे, कौन करता है?

माता जी कहने लगे, यह जो तुलसां है, मैंने इसे भेजा था कि यह तुम्हें जगा लाए, लेकिन यह कहती है कि नानक तो लंका के पास जहाज को बाहर निकाल रहे हैं। गुरु जी कहने लगे, यह तो कमली है। इतनी बात कहने की देर थी कि उसी समय बहिन नानकी ने विनय की कि प्यारे भैया! इसके ऊपर कृपा करो। नानक जी बोले, बहिन! अब यह इस शक्ति को सहन कर जाएगी, अन्यथा इसने रिद्धियां-सिद्धियां दिखानी शुरू कर देनी थी। इसके अन्दर इतनी शक्ति आ गई है कि यह जो भी वचन कर देगी, वह पूरा हो जाएगा। इसीलिए हमने इसे कमली कह दिया है कि यह अपने रंग में मस्त रहेगी, किसी के साथ फालतू बात नहीं करेगी। बस अपनी दैनिक क्रियाओं को बखूबी करती रहेगी। इस प्रकार से गुरु नानक देव जी की लीलाएं होती रहीं और आज आप राय बुलार जी के पास बैठे हैं। उस समय बड़ी अधीनगी के साथ राय बुलार जी ने गुरु जी के चरणों पर नमस्कार करके तथा दोनों हाथ जोड़कर इस प्रकार से विनती कर दी -

**धारना - मैं नूँ देहो समझाइ मेरा रुप किहड़ा है।**

पातशाह! मैं आपके चरणों पर विनती करता हूँ जैसा कि मैंने आपके सत्संग में सुना है कि व्यक्ति का जो यह

रूप दिखाई पड़ता है, यह वह नहीं है बल्कि इसका वास्तविक रूप इससे पृथक है, और जब तक यह मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप को नहीं जानता है, तब तक यह काल के चक्र से बच नहीं सकता है बल्कि जन्म लेता रहेगा, मरता रहेगा। अतः मैंने आपके वचन सुने हैं -

**नानक तरवरु एकु फलु दुइ पंखेरु आहि ॥ अंग - 550**

इस शरीर रूपी वृक्ष पर दो पक्षी बैठे हुए हैं -

**आवत जात न दीसही ना पर पंखी ताहि ॥**

**अंग - 550**

एक तो वह है जो कि कहीं जाता नहीं है, आता नहीं है और अपने पूर्ण आनन्द में सहज समाधि में रहता है। वह न कोई चीज खाता है, न कुछ पीता है, उसे किसी भी रस की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि वह स्वयं रस है। दूसरा वह है जो जगह-जगह पर उड़ता है, जाता है, आता है, उड़-उड़ कर फिर दुखी होता है, कभी जन्म ले लेता, कभी मर जाता है, कभी नेक बन जाता है, कभी बुरा बन जाता है। आप कृपा करके इसे समझाओ -

**मम सरुप को देहु बुझाई।**

**श्री गुरु नानक प्रकाश, पंजा 485**

इसे मेरे वास्तविक स्वरूप को बताओ -

**भूल रहयो जिह सुध नहिं काई।**

**श्री गुरु नानक प्रकाश, पंजा 485**

मुझे कुछ भी पता नहीं है, कि मैं कौन हूँ?

**को मैं हों? कछु जाइ न जाना।**

**श्री गुरु नानक प्रकाश, पंजा 485**

कहने लगे ( राय बुलार जी ), पातशाह मैं नहीं जानता हूँ कि मैं कौन हूँ? कृपा करके मुझे समझाओ -

**बढयो विशेख रिदै अगयाना।**

**श्री गुरु नानक प्रकाश, पंजा 485**

इतना अधिक मेरे अन्दर अज्ञान बढ़ चुका है, अब मुझे यह पता ही नहीं चलता है कि मैं कौन हूँ?

साधु संगत! किसी को इस बात का पता चलता है कि मैं कौन हूँ? कोई विरला पुरुष है जिसे इस बात का पता चल जाता है, अन्यथा सभी अज्ञान में ही घूमते रहते हैं। यदि किसी को पता चल भी जाए तो उसे विश्वास ही नहीं हो पाता है। यदि किसी को पता चल जाए कि मैं बादशाह का

पुत्र हूँ तो वह गलियों में क्यों माँगता फिरे? फिर तो जानना, न जानना एक समान ही हुआ। यदि किसी को पता चल जाए कि मैं अमुक बादशाह का लड़का हूँ, तो फिर तो वह दौड़ा हुआ अपने पिता के पास पहुँच जाएगा। उधर परमेश्वर भी हमें ढूँढ़ता फिरता है, वह प्रत्येक समय अपने दरवाजे खुले रखता है, कि वह अब भी लौट आए, अब भी लौट आए। लेकिन हम तो अपने स्वरूप को भूलकर किसी और ही दिशा में निकल पड़े हैं।

अतः यह बार-बार नम्रतापूर्वक विनतियां करता है कि हे पातशाह! मुझे बताओ कि मैं कौन हूँ?

**मम सरूप को देहु बुझाई।**

**भूल रहयो जिह सुध नहिं काई।**

श्री गुरु नानक प्रकाश, पंजा 485

मैं तो भूला हुआ हूँ, मुझे कुछ भी सुध नहीं है -

**को मैं हों? कछु जाइ न जाना।**

श्री गुरु नानक प्रकाश, पंजा 485

मुझे कुछ भी पता नहीं है कि मैं कौन हूँ?

**बढयो विशेख रिदै अगयाना।**

श्री गुरु नानक प्रकाश, पंजा 485

अज्ञानता का अन्धकार बहुत अधिक छा गया है -

**उपदेशक प्रभु तोहि समाना।**

श्री गुरु नानक प्रकाश, पंजा 485

हे गुरु महाराज! आपके सदृश्य उपदेश देने वाला आज संसार में कोई भी नहीं है -

**अवनी बिखै न जानों आना।**

श्री गुरु नानक प्रकाश, पंजा 485

तथा धरती के ऊपर अन्य दूसरा कोई नहीं है -

**किया सिंधु! करुना अब कीजै।**

श्री गुरु नानक प्रकाश, पंजा 485

हे गुरु नानक! कृपा सागर! आप मेरे ऊपर कृपा करो-

**मम सरूप समझाइ सु दीजै।**

श्री गुरु नानक प्रकाश, पंजा 485

मुझे अपना स्वरूप समझा दो। साधुसंगत जी! वास्तव में उसूल यह है कि -

**राम पदारथु पाइ कै कबीरा गाँठि न खोल ॥**

**नही पटणु नही पारखू नही गाहकु नही मोलु ॥**

अंग - 1365

न तो कोई दुकान ही है, न बाजार है, न कोई ग्राहक है, न कोई मूल्य देने वाला ही है। फिर राम पदार्थ की बात कहाँ पर की जाए? क्योंकि संसार को तो इसका कुछ ज्ञान ही नहीं है। हमने तो यह जानने की कभी कोशिश नहीं की है कि हम कौन हैं? दरअसल अभी हमारा समय ही नहीं आया है। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के अन्दर सब कुछ लिखा पड़ा है, लेकिन जिनका अभी समय नहीं आया है, उन्हें ये वचन समझ में आने वाले ही नहीं हैं। तीन प्रकार के वचन हुआ करते हैं। पहले वचन भयानक हैं। ये उनके लिए हैं, जो पाप में प्रवृत्त हैं, जिनकी रुचि काम में जाती है, क्रोध में जाती है, लोभ में जाती है, हिंसा में जाती है, मोह में जाती है, निन्दा में जाती है। उन्हें भयानक वाणी समझ में आती है। दूसरी होती है, रोचक वाणी। ये उनके लिए होती है, जिन्हें नाम जपने की लगन लगी हुई होती है, उन्हें यह वाणी समझ में आती है, जैसे कि नामदेव की रक्षा भगवान ने कैसे की, कबीर की कैसे की, ध्रुव की किस प्रकार से की, प्रहलाद की कैसे की, उनकी रुचि इसमें लगती है। तीसरी होती है - यथार्थ वाणी। यह वाणी उनकी होती है, जो कर्म, उपासना में से निकलकर विवेक मण्डल में प्रवेश करते हैं। विवेक मण्डल में प्रवेश करते ही पहला सवाल आता है कि मैं कौन हूँ? जो वचन अब मैं अर्ज करने लगा हूँ ये सिर्फ उन्हीं के लिए हैं। अन्य जो लोग हैं, उनके लिए वचन पहले हो चुके हैं।

अतः महाराज जी ने जब देखा कि यह पूर्ण जिज्ञासु हैं, उस समय महाराज कहने लगे, राय जी! सबसे पहले आप यह बतलाओ कि आपका अहंभाव कौन सी चीज में है? आप स्वयं को क्या समझते हो? कौन-कौन सी चीज में आपने अहंभाव धारण किया हुआ है? उस समय वह कहने लगा, सच्चे पातशाह पहला अहं तो यही है कि मैं तुर्क हूँ, मैं मुसलमान हूँ। दूसरा अहं यह है कि मैं सत्तर पचहत्तर साल का हूँ। तीसरी अहं यह है कि मेरे बाल सफेद हो गए हैं, चौथा यह है कि मेरे शरीर की त्वचा ढीली पड़ गई है। यह कुरूप हो गया है, मेरा शरीर अब सूखी लकड़ी जैसा हो गया है। मेरा शारीरिक बल शिथिल हो गया है। मेरा अगला अहं यह है कि वह मेरी स्त्री है, वह मेरा पुत्र है, वह मेरा भाई है, वह मेरा भाईचारा है। अगला अहं यह है कि मेरा नाम राय

बुलार है। महाराज जी कहने लगे, देखो! हम तुम्हें तुम्हारा रूप समझाते हैं। वास्तव में तुम सच्चिदानन्द हो, न कभी मरते हो, न कभी तुम्हारे अन्दर कोई परिवर्तन आता है। तुम तो सदैव एक रस ही रहते हो, सदैव आनन्द में ही रहते हो। बाकी जो शरीर की बात है, इस पर तो बचपन भी आता है, जवानी भी आती है, फिर यह वृद्ध भी होता है, यह पाँच भौतिक शरीर है और जड़ चीज है, इसमें तुम्हारी शक्ति के साथ ही हरकत होती है। यदि तुम्हारी शक्ति इसमें कार्य न करे, तो इसमें हरकत हो ही नहीं सकती। तुम जन्म-मरण से रहित हो, चेतन हो, तुम्हारा कोई नाम नहीं है, तुम्हारा कोई रूप नहीं है। जब यह शरीर जल जाता है, तुम फिर भी कायम रहते हो। शरीर समाप्त हो जाता है, जल जाता है, भस्म बन जाता है, मिट्टी बन जाता है, तुम फिर भी विद्यमान रहते हो। जब तुम इस तन को छोड़ देते हो, तो उस समय यह मृतक हो जाता है। जब यह शरीर मर जाता है, तो फिर जो इसके सम्बन्धी होते हैं, वे तुम्हें कोई प्यार नहीं करते हैं। फिर तो वे कहते हैं कि इसे जल्दी बाहर निकालो। राय जी! राय जी! तुम अब सोचो कि जो तुम्हारा पुत्र है, तुम्हारा धन है, तुम्हारे सगे सम्बन्धी हैं, यह सब चीजें तो छोड़ देने वाली हैं और तुमने इनमें अहं को धारण किया हुआ है, शरीर में तुमने अहं को धारण किया हुआ है। शरीर हो सकता है किसी का मुसलमान का हो, किसी का सिक्ख हो, किसी का हिन्दू हो, लेकिन तुम्हारा तो कोई धर्म नहीं है, तुम तो इनमें से कुछ भी नहीं हो। तुम्हारा तो कोई भी रूप नहीं है, तुम तो सबसे अलग हो। जहाँ तक शरीर की बात है, यह तो शाश्वत नहीं है -

**साधो इहु तनु मिथिआ जानउ ॥**

**या भीतरि जो रामु बसतु है साचो ताहि पछानो ॥**

अंग - 1186

वह सच्चा है, बाकी तो फिर झूठ हो गया। हम तो फिर हुए ही नहीं न। जो हमारा अहंभाव है कि यह मेरा शरीर है, हमारा अमुक धर्म है, मेरी इतनी उम्र है, मेरे केश हैं, मेरे बाल सफेद हैं, मेरे बाल काले हैं, मेरी स्त्री है, मेरा पुत्र है, मेरा घर है, यह तो सारी निरर्थक बातें हैं न। माया के प्रभाव के कारण हम स्वयं को जड़ या नाशवान समझने लग पड़ते हैं-

**इहु जगु है संपति सुपने की देखि कहा औडानो ॥**

अंग - 1186

तुम क्यों आश्चर्यचकित हो? क्यों अहंकार करते हो?

यह सब तो स्वप्न की सम्पत्ति है -

**संगि तिहारै कछु न चालै ताहि कहा लपटानो ॥**

अंग - 1186

जितनी चीजें तुमने बतलाई हैं, इनमें से तो कोई भी चीज तुम्हारे साथ जाने वाली नहीं है -

**उसतति निंदा दोउ परहरि हरि कीरति उरि आनो ॥**

**जन नानक सभ ही मै पूरन एक पुरख भगवानो ॥**

अंग - 1186

आगे गुरु जी कहने लगे, अब बतलाओ कि तुम स्वयं को क्या समझते हो?

राय जी कहने लगे, महाराज जी मैं सूँघता हूँ, मैं देखता हूँ, मैं स्वाद लेता हूँ, मैं स्पर्श करता हूँ। महाराज जी बोले, यह तो तुम स्वयं को पाँच ज्ञानेन्द्रियां समझने लग पड़े हो, लेकिन यह तो तुम नहीं हो। जो अन्धे हैं, गूँगे हैं, बोले हैं, वे भी तो संसार में जीते हैं। ये जो इन्द्रियां हैं, ये तो बड़ई के हाथ में औजार हैं। इनके द्वारा देखना है, सुनना है, काम करना है, ये तो परमेश्वर ने तुम्हें हथियार दिए हुए हैं। कान सुनने का काम करते हैं। कानों के अन्दर 1/2 आकाश है, 1/8 बाकी चार तत्व हैं, इसी प्रकार से कुल पच्चीस प्रकृतियां हैं। जो तुम्हारी जिह्वा है, उसमें पानी है। यह पानी के कारण ही स्वाद आता है। जो तुम्हारा नाक है, इसमें मिट्टी का 1/2 अंश है, इसीलिए इससे सुगन्ध आती है। जो तुम्हारी स्पर्श शक्ति है, उसमें 1/2 हवा का अंश होने के कारण तुम्हें स्पर्श महसूस होता है। इसी प्रकार से सारी इन्द्रियां हैं। जो तुम्हारी आँखें हैं, इनमें आधा भाग अग्नि का होने का कारण ये देख पाती हैं। अब तुम बतलाओ, इन पाँच तत्वों में से तुम कौन सा तत्व हो?

वह चुप कर गया।

फिर कहने लगा, “महाराज! जो मैं यह सुनता हूँ कि अमुक व्यक्ति के प्राण निकल गए हैं।” प्राण निकल जाने से व्यक्ति मृत हो जाता है।

महाराज जी कहने लगे, हाँ प्राणों का स्वभाव है, भूख लगना, पानी पीना आदि। स्वप्न, सुषुप्त, व जागृत में प्राण सदैव एकरस नहीं रहते हैं। तुम तो एक रस हो, फिर तुम विचार करो कि तुम कौन हो? परलोक को जाने के लिए ये प्राण थोड़े के सदृश्य होते हैं। प्राणों के आश्रय से उन्नीस

तत्वों का सूक्ष्म शरीर ट्रेवल करता है। पाँच ज्ञानेन्द्रियां, पाँच कर्मेन्द्रियां, पाँच प्राण आदि तथा मन, चित्त, बुद्धि, अहंभाव। ये उन्नीस तत्वों का सूक्ष्म शरीर प्राणों पर सवारी करके परलोक गमन करता है जबकि तुम तो हो स्थिर।

फिर काफी सोच विचार करने के बाद कहने लगा, महाराज! फिर मैं मन हूँ? क्योंकि मैं यह कहता हूँ कि मैं दुश्मनों को फतह कर लूँ, मैं यह नेक कार्य कर लूँ, मैं उसे सजा दे दूँ। फिर महाराज मैं मन ही हुआ न?

महाराज जी कहने लगे, ये तो मन के धर्म हैं, मन के विकार हैं, लेकिन तुम्हारे अन्दर तो कोई विकार नहीं है। तुम जन्म-मरण रहित हो। मन जो है, वह कभी टिकता नहीं है, जबकि तुम सदैव एक रस हो। उस समय कहने लगा, महाराज! फिर मैं बुद्धि हूँ? महाराज जी कहने लगे, जो बुद्धि है, यह तो केवल ड्राइवर है। यह जो माया है, इसके तीन गुण हैं, रजो गुण, तमो गुण व सतोगुण। तमोगुण से तुम्हारी स्थूल इन्द्रियां बनी हैं, जो रजोगुण हैं, इससे तुम्हारे पाँचों ज्ञानेन्द्रियां बनी हैं और जो सतोगुण हैं, इससे अन्तःकरण, चतुष्टय बना है यानि कि मन चित्त बुद्धि व अहंभाव। ये चारों चीजें सतोगुण से बनी हैं।

इस प्रकार यह जो शरीर है, यह है रथ, इन्द्रियां, जो है, ये इसके घोड़े हैं, जो प्राण हैं, वह इन घोड़ों पर काठी डाली हुई है। इसी प्रकार जो मन है, यह लगाम है तथा जो बुद्धि है, यह इसका रथवान है, सारथी है। इस रथ पर जो सवार करने वाला है, वह इसके पीछे बैठा है। रथ को चलाने वाला और है तथा सवार और है। इसलिए तुम यह भी नहीं हो। उस समय चरणों पर गिर पड़ा तथा कहने लगा, महाराज! इससे आगे मेरी बुद्धि नहीं जा रही है। आप ही कृपा करके बताओ कि मैं कौन हूँ?

महाराज जी कहने लगे, राय जी! अब आप बिल्कुल ही मंजिल के पास पहुँच चुके हो। पहले ये जो वचन अभी तक किए हैं, इन्हें हृदय में बसाओ, कि मैं शरीर नहीं हूँ। ये जितने सम्बन्धी हैं, वे सब शरीर के सम्बन्धी हैं और सब झूठे सम्बन्धी हैं। शरीर परित्याग के बाद कोई भी साथी नहीं रहा करता है। तुम पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ में से कोई नहीं हो। फिर तुम प्राण भी नहीं हो, मन भी नहीं हो, चित्त भी नहीं हो, बुद्धि भी नहीं हो। इसके साथ यह जो झूठी 'मैं' है जिसे तुम गलती से अपने आपको समझ रहे हो, यह भी

नहीं हो।

राय जी! अब तुम ध्यानपूर्वक सुनो कि इन सबसे अलग जो साखी रूप में है, इन सबको देखने वाला है, इन सबको चलाने वाला है, वह तुम्हारा निज स्वरूप है और उस स्वरूप को ज्योति स्वरूप भी कहते हैं -

**धारना - मन तू जीत सरुप है  
आपणा मूल पछाण।**

**मन तू जीति सरुपु है आपणा मूलु पछाणु ॥**

**अंग - 441**

कितनी बड़ी बात श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी कह रहे हैं। लेकिन हमारे भले की बात होने के बावजूद भी क्या मजाल है कि हम लोग इस बात पर टिक सकें। इसका कारण यह है कि इसके ऊपर बेशुमार पर्दे पड़ चुके हैं, इसलिए इतने से वचनों के द्वारा यह पर्दे दूर नहीं हो पाते हैं। इसके लिए तो नाम की कमाई करनी पड़ती है, साधना करनी पड़ती है। या तो समर्थ गुरु हो या फिर कमाई हो। महात्मा का काम होता है, मार्ग बतलाना लक्ष्य को प्राप्त करना आपका अपना काम होता है इसके ऊपर पाँच पर्दे पड़े हुए हैं, एक शरीर का पर्दा पड़ा हुआ है, एक प्राणों का पर्दा पड़ा हुआ है, एक मन का पर्दा पड़ा हुआ है। इसी प्रकार एक बुद्धि का पड़ गया और एक अज्ञानता का पड़ गया है। अब पाँच पर्दों में से कैसे पार हो सके? बात तो हम सबने सुन ली है, शायद ही कोई भाग्यशाली व्यक्ति होगा, जिसके हृदय में यह बस जाए। कोई एकाध ही हुआ करता है -

**कोटन मै नानक कोउ नाराइनु जिह चीति ॥**

**अंग - 1427**

जिसके हृदय में यह बात बस जाएगी, उसे अभी इसी वक्त ज्ञान हो जाएगा। फिर तो समय लगता ही नहीं है, बशर्ते उसने पहले चारों पर्दे तोड़े हुए हों, इसके पाँचवा पर्दा इसी वचन के साथ तोड़ा जाता है। पहले पर्दे को कहते हैं अन्नमय कोष, दूसरा होता है प्राणमय कोष, तीसरा होता है मनोमयी कोष, चौथा होता है विज्ञानमय कोष। इस प्रकार जब पाँचों पर्दों को तोड़ कर वृत्ति यहाँ पर टिक जाती है, तो इसे अपने स्वरूप की समझ आ जाती है, फिर वह किसी भी तरह से डोलता नहीं है। अब उसे ज्ञान हो जाता है कि यहाँ पर कुछ जन्मता या मरता ही नहीं है। यहाँ पर तो केवल अज्ञान ही जन्म लेता है, अज्ञान ही मरता है। अहंभाव ही जन्म-मरण के

चक्र में पड़ा रहता है।

**हउमै एहा जाति है हउमै करम कमाहि ॥**

**हउमै एई बंधना फिर फिर जोनी पाहि ॥**

अंग - 466

अहंभाव बार-बार जन्म लेगा, बार-बार मरेगा। अतः गुरु हमें यहाँ पर पहुँचाना चाहता है कि तुम अपने निज स्वरूप को पहचानो। तुम न तो कभी जन्म लेते हो और न कभी मरते हो, न तुम्हें कभी दुख लगता है, बल्कि तुम तो सदा एकरस रहते हो। तुम्हारी सत्ता के साथ ही शरीर चल रहा है। तुम तो गलती से मशीन को अपना आप कहने व समझने लग पड़े हो। अब मान लो कोई व्यक्ति कार चला रहा हो, ड्राइवर चला रहा हो और कार का मालिक पिछली सीट पर बैठा हुआ कहता रहे कि मैं कार हूँ, मुझे धीरे चलाओ, मुझे गड्ढे में मत गिराओ। ड्राइवर भी हैरान हो जाएगा कि इस मालिक ने शराब पी हुई है? नशा किया हुआ है? तुम तो आराम से बैठे हुए हो और मैं गाड़ी चला रहा हूँ। इस प्रकार से बुद्धि जो है, वह इस शरीर रूपी गाड़ी को चला रही है। मन इसकी लगाम है, जो प्राण हैं, वे इसका इंजन है, बाकी जो शरीर है, यह बाहर वाला शरीर है। हम लोग तो इसके अन्दर बैठ कर यात्रा करने वाले हैं, आराम से हम लोग इस गाड़ी में बैठकर संसार को देखते हैं, कभी अच्छा भी होता है, कभी बुरा होता है, लेकिन यह जो हमारा निज स्वरूप है, उसकी कभी मृत्यु नहीं होती है। यह कभी जन्म भी नहीं लेता है, यह तो इसी तरह से साखी रूप रहता है और सत्ता देता रहता है। दूसरी तरफ जो यह अज्ञान है, यह शरीर बदलता है। अज्ञान जन्म भी लेता है, अज्ञान मरता भी है। अतः जब तक व्यक्ति अज्ञान में रहता है, तब तक इसे माया कहते हैं -

**बाबा माइआ साथि न होइ ॥**

**ईन माइआ जगु मोहिआ विरला बूझै कोइ ॥**

अंग - 595

जब माया का पर्दा उतर गया है तो फिर क्या होता है-

**जब हम होते तब तू नाही अब तूही मै नाही ॥**

**अनल अगम जैसे लहरि मइ ओदधि**

**जल केवल जल माँही ॥**

अंग - 657

जब तक माया का पर्दा रहता है, और झूठी 'मैं' में

रहता है, तब तक वाहगुरु नहीं मिल सकता है। अब वाहगुरु कहाँ रह गया? जबकि वह शरीर में ही रहता है -

**धन पिर का इक ही संगि वासा.....॥ अंग - 1263**

यह जो श्री गुरु जी ने कहा है, यह गुरु जी ने निज स्वरूप को समझाया है।

गुरु जी कहने लगे, राय बुलार! लो फिर तुम्हें अगली बात भी बता देते हैं। वह यह है -

**मन महि आपि मन अपुने माहि ॥ अंग - 279**

यह जो तुम हो, तुम उसके अन्दर हो और वह तुम्हारे अन्दर है तुम और वह दोनों ओत प्रोत हो, केवल एक पर्दा ही रह गया है, वह गुरु के हाथ में होता है। वह है प्यार का खेल तथा गुरु के हाथ में यह है कि -

**नानक नदरी नदरि निहाल ॥ अंग - 8**

अब गुरु जी ने कृपादृष्टि कर दी और कृपादृष्टि के द्वारा पर्दा तोड़ डाला, पर्दा टूटते ही अवस्था क्या हो गई? अब अवस्था हो गई -

**कबीर तू तू करता तू हुआ मुझ महि रहा न हूँ ॥**

**जब आपा पर का मिटि गइआ जत देखउ तत तू ॥**

अंग - 1375

अब 'मैं' समाप्त हो गई और तू ही बन गया। यह महाराज जी उसे तू ही बना रहे थे -

**जब हम होते तब तू नाही अब तूही मै नाही ॥**

**अनल अगम जैसे लहरि मइ ओदधि**

**जल केवल जल माँही ॥**

अंग - 657

पानी के अन्दर से लहर उठी है वह पानी के बाहर से तो आई नहीं है, बल्कि पानी के अन्दर से ही है -

**माधवे किआ कहीअै भ्रमु औसा ॥**

**जैसा मानीअै होइ न तैसा ॥**

अंग - 657

जिस प्रकार का हम उसे मान रहे हैं, उस प्रकार का तो वह है नहीं। इतना बड़ा भ्रम पड़ चुका है, और हम इस भ्रम से बाहर निकलते ही नहीं हैं। बार-बार जन्म लेना व बार-बार मरना तो हमें स्वीकार्य है, लेकिन भ्रम में से बाहर निकलना हमें कबूल नहीं है, भ्रम से बाहर निकलने का कोई भी यत्न हम करते ही नहीं हैं ताकि सदैव के लिए हम अमर देश में पहुँच कर अमर-जीवन को प्राप्त कर सकें। अमर जीवन क्या है? फिर वह परमेश्वर का ही रूप बन जाता है,

फिर वह बाहर नहीं रहा करता है -

**सोई फिरि कै तू भइआ जा कउ कहता अउरु ॥**

अंग - 1369

अतः उस समय कहने लगे, कितना बड़ा भ्रम है -

**माधवे किआ कहीअै भ्रमु औसा ॥**

**जैसा मानीअै होइ न तैसा ॥**

**नरपति एकु सिंघासनि सोइआ सुपने भइआ भिखारी॥**

**अछत राज बिछुरत दुखु पाइआ सो गति भई हमारी॥**

अंग - 658

राजभाग तो है, लेकिन स्वप्न में बिछुड़कर दुख पाता है, लेकिन जब गुरु ने कृपा करके स्वरूप दिखला दिया, तो उस समय उसे समझ आ गई -

**राज भुइअंग प्रसंग जैसे हहि**

**अब कछु मरमु जनाइआ ॥**

अंग - 658

अन्धकार में रस्सी पड़ी हुई थी, उसमें ऐंठन पड़ी हुई थी, उसे साँप कहकर अन्दर प्रवेश कर गए, और बाहर निकले ही नहीं लेकिन जब सूर्योदय हुआ तो परेशान हो गए कि साँप तो था ही नहीं, वैसे ही डरते-डरते हुए गला सुखा लिया। वास्तव में तो यह रस्सी ही थी। कहते हैं कि अब हमें पता चल गया है कि यह जो संसार है, इसमें संसार नाम की कोई चीज ही नहीं है, बल्कि यह तो वाहिगुरु स्वयं ही अपने रंग दिखा रहा है। वही अनेकों रंगों में खेल रहा है -

कतहूँ सुचेत हुइकै चेतना को चार कीओ,  
कतहूँ अचिंत हुइकै सोवत अचेत हो॥  
कतहूँ भिखारी हुइकै माँगत फिरत भीख,  
कहूँ महाँ दान हुइकै माँगिओ धन देत हो॥  
कहूँ महाराजन को दीजत अनंत दान,  
कहूँ महाराजन ते छीन छित लेत हो॥  
कहूँ बेद रीत, कहूँ ता सिउ बिप्रीत,  
कहूँ तिगुन अतीत कहूँ सुरगुन समेत हो॥

तुप्रसादि कबित

यह तो प्रभु स्वयं ही सभी रंगों में खेल रहा है। अब भ्रम समाप्त हुआ है -

**राज भुइअंग प्रसंग जैसे हहि अब कछु मरमु  
जनाइआ ॥**

**अनिक कटक जैसे भूलि परे अब कहते कहनु न  
आइआ ॥**

अंग - 658

सोने के गहने देखकर हम भूल गए कि यह नथुनी है, यह मछली है, यह हार है, यह चूड़ियां हैं, अथवा यह कांटे हैं लेकिन हैरानी की बात यह है कि सोना तो एक ही था। सोने ने ही अलग-अलग रूप धारण किए हुए थे। अतः इस प्रकार से -

**सरबे एकु अनेकै सुआमी सभ घट भोगवै सोई ॥**

अंग - 658

सबके अन्दर वही एक वाहिगुरु है। इस प्रकार से श्री गुरु नानक महाराज जी ने राय बुलार को उसका निज स्वरूप दिखाते हुए उसका वास्तविक स्वरूप दिखला दिया -

**कहि रविदास हाथ पै नरै सहजे होइ सु होई ॥**

अंग - 658

कहने लगे कि वह तो हाथ से भी नजदीक है, वह तो अत्यन्त नजदीक है। अतः इस प्रकार से जब श्री गुरु जी ने उसे स्वरूप के दर्शन करवाए तो वह निहाल हो गया, लेकिन अब उसकी वृत्ति यहाँ पर ठहर नहीं सकती थी। वृत्ति को उस स्थान पर स्थिर करने के लिए जन्म बीत जाते हैं, लेकिन फिर भी वृत्ति वहाँ पर रुकती नहीं है क्योंकि वृत्ति बार-बार नीचे गिरती है।

अब श्री गुरु जी ने उसके ऊपर कृपा की तथा कहने लगे, राय बुलार! सावधान होओ! कहो! वाहिगुरु! वाहिगुरु कहने की देर थी कि उसके रोम-रोम में से वाहिगुरु, मस्तिष्क में से वाहिगुरु, होने लग पड़ा। उसके वज्र कपाट खुल गए। अब वह जिधर भी देखता है, उधर ही वही दिखाई पड़ रहा है, वाहिगुरु के अतिरिक्त वहाँ पर कोई अन्य दिखाई नहीं पड़ रहा है। अब वह चौकड़ी मार कर बैठ गया और घंटों तक लगातार बैठा रहा। महाराज जी ने पुनः सावधान किया और कहने लगे, राय बुलार! अब हम चलते हैं क्योंकि संसार में हमारा जगह-जगह पर इन्तजार हो रहा है। अब तुम इसका अभ्यास करो और अपना जीवन सफल करो। तुम्हारा थोड़ा सा समय ही अब शेष रहता है। उसके बाद जिस लोक में हमने जाना है, उसी लोक में तुमने भी पहुँचना है। वहाँ पर हम लोग पुनः आपस में मिल लेंगे। अब समय अनुमति प्रदान नहीं कर रहा है, इसलिए अब सारे प्रेमीजन आनन्द साहिब में बोलो।



# सभ ते वडा सतिगुरु नानकु जिनि कल राखी मेरी

सन्त बाबा हरपाल सिंह जी

जिस के सिर उपरि तूं सुआमी सो दुखु कैसा पावै ॥  
बोलि न जाणै माइआ मदि माता  
मरणा चीति न आवै ॥ 1 ॥  
मेरे राम राइ तूं संता का संत तेरे ॥  
तेरे सेवक कउ भउ किछु नाही  
जमु नही आवै नेरे ॥ 1 ॥ रहाउ ॥  
जो तेरै रंगि राते सुआमी  
तिनु का जनम मरण दुखु नासा ॥  
तेरी बखस न मेटै कोई सतिगुर का दिलासा ॥ 2 ॥  
नामु धिआईन सुख फल पाईन  
आठ पहर आराधहि ॥  
तेरी सरणि तेरै भरवासै पंच दुसट लै साधहि ॥ 3 ॥  
गिआनु धिआनु किछु करमु न जाणा  
सार न जाणा तेरी ॥  
सभ ते वडा सतिगुरु नानकु जिनि कल राखी मेरी ॥  
4 ॥ 10 ॥ 57 ॥ अंग - 749

परम सम्माननीया गुरु प्यारी साधु संगत जी! आओ! ख्यालों को बाहर जाने से रोको, चित्त वृत्तियों को एकाग्र करो तथा अपनी जिह्वा की पवित्रता के लिए सारे ही उच्चारण करो जी, सतिनाम श्री वाहिगुरु। गुरु महाराज जी ने हम सब पर कृपा की है कि हम लोगों को श्री गुरु नानक महाराज जी के प्रकाश दिवस के उपलक्ष्य में सत्संग करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। आप सब भाग्यशाली हो कि अपने कामकाज को पीठ देकर नींद व आलस्य का त्याग करके सत्गुरु जी की पावन हुजूरी का आनन्द उठा रहे हो। अब जितना समय शेष है आओ उसे सफल करते हुए अन्तरंग साधनों के बारे में विचार करें और सत्संग में जुड़ें।

संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा ॥  
नामु प्रभु का लागा मीठा ॥ अंग - 293

धन्य गुरु नानक महाराज जी, सन् 1469 ई. को राय भोड़ की तलवंडी में माता तृप्ता जी की कोख को भाग लगा रहे हैं। आप जी के पिता परम सम्माननीय बाबा कल्याण दास जी हैं तथा आपकी बहिन बेबे नानकी जी हैं। सबसे

पहले यदि किसी को दिव्य दृष्टि प्राप्त हुई तो वे बेबे नानकी जी ही थीं, जिन्होंने अपने भ्राता जी को परमात्मा रूप में जाना-

आपि नराइणु कला धारि जग महि परवरियउ ॥

अंग - 1395

कल्युग के समय में सच्चे पातशाह जी -  
सतिगुरि नानक प्रगटिआ मिटी धुंध जग चानणु होआ।  
सतगुरु सच्चे पातशाह जी परमात्मा के सगुण स्वरूप के अन्दर इस धरती पर प्रकट हुए और उस समय इतनी कलाओं वाला कोई भी अवतार पैदा हुआ ही नहीं -

सभ ते वडा सतिगुरु नानकु जिनि कल राखी मेरी ॥

अंग - 750

आप सबसे बड़े हैं। वैसे किसी न किसी का कोई न कोई गुरु होता है और फिर गुरु को धारण करने की कोई रस्म भी होती है, अतः गुरु जी के साथ भी यह घटना घटित हुई उन्हें जनेऊ पहनने के लिए कहा गया लेकिन महाराज जी कथन करते हैं कि हम इसे नहीं पहनेंगे। उन्होंने कह दिया कि मेरा गुरु तो अपरम्पार पारब्रह्म परमेश्वर है।

अपरंपर पारब्रह्म परमेश्वर

नानक गुरु मिलिआ सोई जीउ ॥ अंग - 599

गुरु फिर मन्त्र भी देते हैं और अब जो जनेऊ पहनाता है, वह गुरु भी बन जाता है।

कबीर बामनु गुरु है जगत का भगतन का गुरु नाहि ॥

अंग - 1377

जब ब्राह्मण जनेऊ पहनाने की रस्म अदा करवाने लगता है तो उस समय गुरु जी फुरमान करते हैं, जिसे कि हम नित्य प्रतिदिन 'आसा दी वार' में पढ़ते हैं -

दइआ कपाह संतोखु सूतु जतु गंठी सतु वटु ॥

एहु जनेउ जीअ का हई त पाडे घतु ॥ अंग - 471

यह भी कोई जनेऊ है? जनेऊ तो वह होता है जिसमें दया की कपास हो, सन्तोष का सूत हो और जत (ब्रह्मचर्य) की गाँठ दी हुई हो -

ना एहु तुटै न मलु लगै ना एहु जलै न जाइ ॥  
धनु सु माणस नानका जो गलि चले पाइ ॥

अंग - 471

जो आप लोग आम लोगों को पहनाते रहते हो वह भी कोई जनेऊ है?

चउकड़ि मुलि अणाइआ बहि चउकै पाइआ ॥  
सिखा कंनि चड़ाईआ गुरु ब्राहमणु थिआ ॥  
ओहु मुआ ओहु झड़ि पड़िआ वेतगा गइआ ॥ 1 ॥  
मः 1 ॥

लख चोरीआ लख जारीआ लख कूड़ीआ लख गालि ॥  
लख ठगीआ पहिनामीआ राति दिनसु जीअ नालि ॥  
तगु कपाहहु कतीअै बाम्णु वटे आइ ॥  
कुहि बकरा रिंनि खाइआ सभु को आखै पाइ ॥  
होइ पुराणा सुटीअै भी फिरि पाईअै होरु ॥  
नानक तग न तुटई जे तगि होवै जोरु ॥

अंग - 471

गुरु नानक देव महाराज जी ने अब पंडित को निरुत्तर कर दिया।

सच्चे पातशाह जी को यदि पण्डित के पास पढ़ने के लिए भेजा गया तो आप पण्डित को ही पढ़ा आए। अब यदि कोई बच्चा पढ़ता नहीं है तो उसे गाँवों में आमतौर पर पशुओं को चराने के लिए लगा देते हैं। आपके साथ भी ऐसा ही हुआ लेकिन आपने पशुओं को क्या चराना था। आपके पशु खेतों में चरते रहते थे। राय बुलार के पास जब शिकायत हुई तो खेत पहले से भी अधिक प्रफुल्लित दिखाई पड़ते हैं। फिर आपके पिता जी ने निर्णय लिया कि इन्हें किसी व्यापार आदि में ही डाला जाए। इसी क्रम में आपको बीस रुपए देकर कोई व्यापार करने के लिए भेजा गया लेकिन आप भूखे साधुओं को लंगर ग्रहण करवा कर सच्चा सौदा कर आए।

इसके बाद गुरु महाराज जी ऐसी वैराग्यमयी अवस्था में चले जाते हैं कि आप जंगल आदि में ही रहने लग जाते हैं। यदि कोई साधु उन्हें मिल जाता है तो उसके साथ तो आप बात कर लेते हैं, अन्यथा आप घर में ही पड़े रहते हैं। आपके पिता जी को आपके चाचा लालू जी तथा अन्य सभी कहते हैं कि आप देखो कि यह आपका इकलौता पुत्र है और इसकी अवस्था इस प्रकार की हो गई है लेकिन आप इसका उपचार नहीं करवाते हो? इसके बाद आपके पिता जी आपका इलाज करवाने के लिए एक वैद्य को बुला लाते हैं-

वैदु बुलाइआ वैदगी पकड़ि ढंडोले बाँह ॥

भोला वैदु न जाणई करक कलेजे माहि ॥

अंग - 1279

वैद्य बाँह को पकड़ कर आपकी नब्ज देखता है लेकिन उसे किसी बीमारी के बारे में कुछ पता नहीं चल पाता है। सच्चे पातशाह जी कहने लगे, वैद्य जी! -

वैदा वैदु सुवैदु तू पहिलाँ रोगु पछाणु ॥ अंग - 1279

अब वैद्य नब्ज पकड़कर देखता है क्योंकि आयुर्वेद में वात, पित्त और कफ त्रिदोष में से किसी के कम या अधिक हो जाने की वजह से बीमारी का आना माना जाता है, इसलिए वैद्य नब्ज के माध्यम से कमी को ढूँढ़ने की कोशिश करता है।

आयुर्वेद की यह खोज है कि यदि हम अपने खाने-पीने को सही कर लें तो फिर रोग आ ही नहीं सकता है। जब प्रातःकाल का समय होता है तो यह जठराग्नि मन्द होती है त्यों-त्यों यह जठराग्नि भी बढ़ती जाती है। पुरातन समय में तो इन चीजों का सबको ज्ञान था लेकिन आज के समय में तो किसी को पता ही नहीं है। नाश्ते के समय में यदि भारी चीज भी खा ली जाए तो वह हजम हो जाती है। पहले के समय में मिश्रित अनाज की रोटी पकाई जाती थी और दही, लस्सी, मक्खन के साथ लोग ग्रहण करते थे, फलस्वरूप किसी भी व्यक्ति को कोई बीमारी नहीं आया करती थी। आज तो बेड-टी का प्रचलन बढ़ गया है, बरगर, पीजा व फास्टफूड आ गया है जो कि बीमारियों को आमन्त्रित करता है।

समय बदल गया है, आयुर्वेद का यह विधान है कि सुबह तुम फल वगैरह या फलों का रस ले लो, पानी पियो, चाहे प्यास है अथवा नहीं है। प्राणायाम करो। आज तो हम लोग इसे भी कह देते हैं कि यह हिन्दुओं का है लेकिन शरीर तो सबका पाँच तत्वों का ही है। सच्चे पातशाह जी ने श्वासों पर बहुत जोर दिया है, गुरवाणी पढ़ कर देख लो। प्राणायाम बहुत जरूरी है। श्वास अन्दर की तरफ जाता है तो 'वाहि', बाहर की तरफ जाता है तो 'गुरू'। खाली पेट सुबह बैठ जाओ और इसे सबसे पहले करो इसके बाद पानी पियो।

आज जापान वगैरह देशों के निवासियों की औसत आयु 84 वर्ष है, वहाँ पर सौ सौ वर्ष के लोग साइकिल चलाते हैं, प्रत्येक जगह पर गर्म पानी पीने के लिए मिलता है, हर्बल टी पीने को निःशुल्क मिलती है और हम लोग इन चीजों को पूर्णतः भूल ही गए हैं। सुबह के समय फलों का रस पी लो। भोजन के बाद पानी पीना ठीक नहीं है। हां, भोजन से

पहले दो-चार घूँट पानी पी लेना ठीक है, इससे जठराग्नि तेज हो जाती है। इसी प्रकार से दोपहर के समय दही खा लो, लस्सी पी लो, खाना खाने के बाद। रात का खाना हल्का हो और उसके बाद दूध पियो। यह विधि-विधान है। हमारे यहाँ स्वामी आत्मा ज्ञानाचन्द जी हैं, जो कि हठयोगी हैं। वे केवल दही और रोटी ही ग्रहण करते हैं और इसके अतिरिक्त कोई भी जूस, कोल्ड ड्रिंक, चाय, दूध आदि कुछ भी नहीं लेते हैं। इनका शरीर कितना चुस्त-दुरुस्त है। जब तामिलनाडू में सुनामी आई थी और रतवाड़ा साहिब की तरफ से बाढ़ राहत शिविर लगाए गए थे, जिनमें लंगर तथा अन्य वस्तुएं वितरित की गई थीं, तो वहाँ पर सारी कमांड इन्होंने ही सम्भाली थी। ये बहुत ही फिट हैं, इसका कारण यही है कि ये पूरा परहेज रखते हैं, ऐसा नहीं है कि जो भी ऊट-पटांग मिल गया, वही खा लिया तथा जो चीजें नहीं खानी चाहिए वे भी खा लीं। इन्होंने अपने मुंह पर लगाम दी हुई है। ऐसा न करने के कारण ही आज की दुनिया बीमार है।

अतः गुरु महाराज जी वैद्य को कह रहे हैं, ऐ वैद्य! तुम पहले रोग की पहचान करो क्योंकि तुम्हें तो रोग की ही पहचान नहीं है। तुम तो वात, पित्त व कफ को ढूँढ़ रहे हो और कह रहे हो कि मुझे सारी बीमारियों के बारे में पता है लेकिन तुम्हें तो यह भी पता नहीं है कि तुम्हें कौन-कौन सी बीमारियाँ लगी हुई हैं -

**वैद्य बुलाइआ वैदगी पकड़ि ठंडोले बाँह ॥  
भोला वैद्य न जाणई करक कलेजे माहि ॥**

अंग - 1279

ऐ भोले वैद्य! तुम्हें पता ही नहीं है कि मुझे कौन सा रोग है, दरअसल यह सारा संसार ही रोगी है, आज का कोई भी व्यक्ति स्वस्थ नहीं है। सारे संसार की जिन्दगी भोगों वाली है और भोग का अन्त रोग ही है यथा -

**खसमु विसारि कीऐ रस भोग ॥  
ताँ तनि उठि खलोए रोग ॥**

अंग - 1256

हम लोग परमात्मा को भूलकर रसों के आनन्द में पड़ जाते हैं, जीभ के स्वाद के कारण ही इन्सान दुखी हो रहा है, रोगी हो रहा है। वह इस बात को भूल ही चुका है कि पथ्य से परहेज अच्छा है। आजकल लोग योगी न होकर भोगी हो गए हैं। भोग ने रोग को लेकर आना ही है। (गुरु) नानक जी कहने लगे, वैद्य जी! तुम स्वयं को समझते हो कि तुम निरोग हो?

वैद्य जी घबरा गए क्योंकि उसे पहले भी नानक जी

के बारे में काफी कुछ सुन रखा था। जब आप पण्डित जी के पास पढ़ने के लिए गए और पण्डित जी ने पहला ही अक्षर 'नमो सिद्धं' लिखा तो आपने पण्डित जी से उसके अर्थ पूछ लिए थे जिसके बारे में उसे कुछ भी ज्ञान नहीं था। फिर जब जनेऊ पहनाने लगे, यज्ञोपवीत संस्कार के समय, तो उस समय आपने जनेऊ का अर्थ पूछ लिया और वह उसके अर्थ को भी समझा नहीं पाया। हर जगह पर उनके सवाल का जवाब दे पाना यदि असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य प्रतीत होता है। इसी क्रम में आज वैद्य जी भी उत्तर को सोचते हुए उधेड़बुन में पड़े हुए हैं लेकिन उन्हें सवाल का जवाब नहीं आ रहा है। उधर गुरु जी उपदेश कर रहे हैं क्योंकि -

**परथाइ साखी महा पुरख बोलदे**

**साझी सगल जहानै ॥**

**गुरमुखि होइ सु भउ करे आपणा आपु पछाणै ॥**

अंग - 647

**खती ब्राहमण सूद वैस उपदेसु चहु वरना कउ साझा ॥**

**गुरमुखि नामु जपै उधरै सो कलि महि**

**घटि घटि नानक माझा ॥**

अंग - 748

श्री गुरु नानक देव जी के इस उपदेश को सारे संसार में फैलाने के लिए महापुरुषों ने रतवाड़ा साहिब के स्थान की तरफ से भरसक प्रयास किए। इन प्रयासों में एक प्रमुख प्रयास था 'आत्म मार्ग' मासिक पत्रिका की शुरुआत। पच्चीस साल पहले यह उपदेश संसार के कोने-कोने में पहुँचा जो कि पंजाबी, अंग्रेजी और हिन्दी भाषाओं में सुलभ करवाया गया। यह पत्रिका संसार के कोने-कोने में पहुँचाई गई। जन साधारण ने इसे बड़े ही प्रेमपूर्ण ढंग से अपनाया। रतवाड़ा साहिब पहुँचने वाले असंख्य प्रेमीजन इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। दरअसल यह पत्रिका ही प्रेम का प्रसार करने वाली है और इसका उपदेश विश्व बन्धुत्व की भावना को बढ़ाने वाला है। महापुरुषों की सोच भी यही थी। श्री गुरु नानक देव जी ने जो निर्मल पन्थ चलाया उसके ऊपर आप जी ने बखूबी पहरा दिया। यही कारण है कि जो स्थान रतवाड़ा साहिब के साथ सम्बन्धित है, वहाँ पर शब्द लंगर व गुरवाणी के प्रवाह निरन्तर चलते हैं और शरीर को स्वस्थ रखने के लिए अस्पतालों का निर्माण व संचालन हो रहा है क्योंकि गुरु जी के अनुसार -

**जो जो दीसै सो सो रोगी ॥**

अंग - 1140

'चलता'



## गुरु नानक आगमन (श्री गुरु नानक चमत्कार)

पद्म भूषण डा. भाई वीर सिंह जी

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक अक्टूबर, पृष्ठ - 50)

सारे ठग सतगुरु जी से विदा होकर अपनी बस्ती में पहुँच गए। वहाँ पर सारे लोग इस प्रतीक्षा में थे कि लूटमार करने के लिए गए सारे नवयुवक मोटे माल को लूटकर वापिस कब आते हैं। जब वे वापिस लौट आए तो पूछने पर उन्होंने कहा, हम सारी घटना को क्रमशः बताते हैं, पहले सभी लोग बड़े चबूतरे पर एकत्र हो जाओ।

यह बात सुनते ही सारे ठगों को आवाज दी गई, फलस्वरूप सारे ठग वहाँ पर एकत्र हो गए। इसके बाद उन ठग नवयुवकों ने सारी वार्ता को सिलसिलेवार ढंग से सुनाया। सभी ने सारी वार्ता को बड़े गौरपूर्ण ढंग से सुना। कुछ लोग तो इस वार्ता को सुनकर आश्चर्यचकित हो गए, कुछ भयभीत हो गए, जबकि कुछ लोग प्रश्नोत्तर करने लग पड़े।

1) कहीं ऐसा तो नहीं है कि तुम लोगों ने सारा लूट का माल स्वयं ही हड़प करके हम लोगों को ही ठगने की अथवा मूर्ख बनाने की योजना बना ली हो?

2) यह बात तो आसानी से ही हल हो जाएगी क्योंकि वे तो कुछ समय में ही यहाँ पहुँच जाएंगे। उन्हें जीवित देखकर और उनकी बात को सुनकर आप सभी लोग स्वयं ही सन्तुष्ट हो जाओगे।

इस सारी घटना को आँखों से देखने के बाद वापिस लौटे ठगों में से एक ठग ने कहा, वाह! हमारे नसीब भी गजब के हैं, यदि हम लोग सारे जगत को ठगने वाले हैं तो फिर हमारा आपस में भी विश्वास नहीं है। क्या हम लोग अपने भाइयों से ही ठगी करेंगे? यह तो पारस्परिक अविश्वास भावना की पराकाष्ठा है। ठीक ही है यदि हम लोगों ने बबूल के वृक्ष बोए हैं तो उन्हें शूलें (बड़े कांटे) ही तो लगेंगी। हम लोगों ने विश्वासघात के बीज बोए हैं, इसलिए हम सबके दिलों में भी अविश्वास भावना ही उत्पन्न होनी थी, वही हो गई है।

3) ठग - (जो सारे वृत्तान्त को सुनकर भयभीत हो गया था) अरे छोड़ो! इनकी बातों को छोड़ो! लेकिन यह

बताओ कि क्या तुम लोगों ने यह बात अपने कानों से सुनी थी कि वह गुरु परमेश्वर है?

सारी घटना को देखकर लौटे ठग - हाँ हमने आपने कानों से यह बात सुनी है।

4) ठग - (आश्चर्यचकित मुद्रा में) क्या तुम लोगों ने अच्छी तरह से तसल्ली भी कर ली थी, कहीं ऐसा न हो कि उन्होंने तुम्हारी नजरबन्दी ही न कर दी हो? क्या प्रत्यक्ष रूप से तुम लोगों ने यह घटना घटित होती हुई देखी थी?

घटना को आँखों से देखकर लौटे ठग - यदि एक व्यक्ति देखता फिर तो भ्रम की सम्भावना हो सकती थी, लेकिन हम तो जितने लोग भी आग लेने के लिए गए थे, उन सभी ने इस घटना को प्रत्यक्ष रूप से देखा और अच्छी तरह से अपनी तसल्ली की। हम लोगों ने रामगणों को उड़ते हुए और आकाश में जाते हुए देखा। हम लोग न तो बच्चे ही हैं और न ही ऐसे शहरी लोग हैं जो कि पण्डितों की कथा सुनने वाले नरम दिल लोग होते हैं तथा न ही हम लोग इस प्रकार के दान-पुण्य करने वाले लोग हैं जिन्हें कि दान-पुण्य करने के फल के रूप में परलोक के दर्शन हुए हैं बल्कि हम लोग तो खूनी, डाकू, लुटेरे व पत्थर दिल वाले पापी लोग हैं, इसलिए बिना प्रत्यक्ष देखे हम लोग कैसे मान सकते हैं?

सारे ठग - बात तो तुम्हारी ठीक है।

सारी घटना को देखकर लौटे ठग - अब तो बस एक ही रास्ता है। जो लोग हमारी बात को सच्ची मान रहे हैं, वे इस बात को समझ लें कि अब हमारे कल्याण का समय आ चुका है। यदि अब यह सुनहरा मौका गंवा दिया तो फिर न जाने कितने चक्कर में पड़ जाएँगे? यदि अब भी न जागे फिर तो वही बात होगी कि आग जलती रही और हम लोग सदी में ठिठुरते रहे। ज्यादा बातों का कोई फायदा नहीं है, जो लोग हमारी बात को मान रहे हैं, वे हमारे साथ गुरु जी की शरण में आ जाओ, जो नहीं मानते हैं, वे सब बस्ती को छोड़ जाओ और अन्य कहीं जाकर अपनी लूटमार व डकैती का अड्डा बना लो।

इस प्रकार की खरी-खरी बातें सुनकर सारे मान गए और कहने लगे, अपने भाइयों से हमने नहीं बिछुड़ना है।

घटना को देखकर लौटे ठग - फिर शरण लेने के लिए तैयार हो जाओ और जो वह हुक्म देगा उसे करना पड़ेगा, यदि वह दण्ड देगा तो उसे झेलना पड़ेगा। हम तो वास्तविकता को देखकर उसी के हो चुके हैं।

सारे लोग - जो हमारे भाई लोग करेंगे, हम भी वही करेंगे।

इसके बाद सभी ने एक साफ सुथरी जगह को गुरु जी के डेरे के लिए तैयार किया और सभी, उनकी आव-भगत के लिए तैयार हो गए। इतने में श्री गुरु जी भी वहाँ पर पहुँच गए। सभी ने उनके चरणों पर गिर कर मत्था टेका और उनके दर्शन किए। अब सभी को उनके चेहरे में एक अलौकिक आभा प्रतीत हुई और उस आभा के दर्शन करके सभी ने स्वयं को भाग्यशाली महसूस किया। अब गुरु जी सभी को फकीर प्रतीत हो रहे थे। सभी ने आपका डेरा करवाया और भांति-भांति प्रकार के उपहार लाकर रखने लगे तथा महिमा कथन की -

हुतो सथान जहाँ तिन नीका।  
तहिं बिठाइ बेदी कुलटीका।  
धरहिं उपाइन बंदन करिहीं।  
उसतुति बारंबार उचरिहीं। (गुर नानक प्रकाश)

ठग दर्शन कर आए -

जिस प्रकार हुइ भला हमारा। सिखवन सुउ सिखाइ  
उदारा। मानव सरब कुकरमन लागे। समझ परी तुम  
दरशन पागे। गुरु नानक प्रकाश

श्री गुरु जी - हे परमात्मा के मार्ग से भूले-भटके लोगो! यह जो सारे उपहार तुम लोगों ने हमारे पास रखे हैं, ये सब लूटमार व ठगी करके एकत्र किए हुए हैं, इसलिए ये सब हमने स्वीकार नहीं करने हैं।

ठग - हमारा भला किस प्रकार से होगा? आप कुछ न कुछ तो स्वीकार करें ताकि हमारा भी भला हो सके।

गुरु जी - तुम्हारा तो कुछ है ही नहीं, जो कुछ है वह सब अन्य लोगों का ही है, हम जो कुछ भी अपने मुँह में डालेंगे या स्वीकार करेंगे उसके द्वारा उन्हीं का भला होगा और तुम्हारा तो बुरा ही होगा। तुम्हें यह अधिकार किसने दिया है कि तुम विश्वासघात करके अथवा जोर-जबरदस्ती करके और लोगों को मौत के घाट उतार कर उनके धन-माल को

छीन लो और फिर उस धन का प्रयोग अपनी कमाई समझ कर करो। इसके विपरीत तुम्हारा अधिकार यह था कि तुम लोग उचित साधनों द्वारा अपनी जीविकोपार्जन करो तथा सत्य का व्यवहार करो।

यह कहकर श्री गुरु जी के नेत्रों के आगे संसार की बुरी तस्वीर सामने आ गई और आपने वैराग्य भावना में आकर सिरीराग में अधोलिखित शब्द का गायन किया -

सिरीरागु महला 1 ॥

लबु कुता कूडू चूहड़ा ठगि खाधा मुरदारु ॥

पर निंदा पर मलु मुखि सुधी अगनि क्रोधु चंडालु ॥

रस कस आपु सलाहणा डे करम मेरे करतार ॥ 1 ॥

बाबा बोलीअै पति होइ ॥

उतम से दरि उतम कहीअहि

नीच करम बहि रोइ ॥ 1 ॥ रहाउ ॥

रसु सुइना रसु रुपा कामणि रसु परमल की वासु ॥

रसु धोड़े रसु सेजा मंदर रसु मीठा रसु मासु ॥

एते रस सरीर के कै घटि नाम निवासु ॥ 2 ॥

जितु बोलिअै पति पाईअै सो बोलिआ परवाणु ॥

फिका बोलि विगुचणा सुणि मूरख मन अजाण ॥

जो तिसु भावहि से भले होरि कि कहण वखाण ॥3॥

तिन मति तिन पति तिन धनु पलै

जिन हिरदै रहिआ समाइ ॥

तिन का किआ सालाहणा अवर सुआलिउ काइ ॥

नानक नदरी बाहरे राचहि दानि न नाइ ॥ 4 ॥ 4 ॥

अंग - 15

इसकी मधुर ध्वनि तथा सच्चे भाव ने सभी के मनों को मोम की भांति पिघला दिया और वे लोग रो-रोकर बोले -

महाराज जी! हम लोग तो अब तक भूले ही रहे हैं। अब येन-केन-प्रकारेण हमारा भला करने की कृपा करें और हमारे पापों व गुनाहों के क्षमा करने की कृपा करें।

उनकी नम्रतापूर्वक व पाश्चाताप की दशा को देखकर श्री गुरु जी ने फुरमान किया - तुम्हारे द्वारा किए गए पापों का नाश तभी हो सकता है यदि तुम पाश्चाताप करो और अपने तथाकथित वर्तमान धन्धे का त्याग कर दो।

ठग - महाराज जी! हम पापी लोग हैं, लेकिन हमारा यह धन्धा पुश्तैनी है। माँ का दूध पीते-पीते ही हम लोग इस धन्धे को सीख जाते हैं। हम लोग इसी को अपना धन्धा समझकर पत्थर दिल हो चुके हैं। आपके द्वारा प्रस्तुत किए इस महान कौतुक को देखे बिना हमारे पत्थर दिल पिघल नहीं सकते थे। अब हम लोग आपकी शरण में आए हैं, इसलिए

हमारे ऊपर दया करो और हम लोगों को तो कोई भी आजीविका नहीं आती है, इसलिए हम लोग कौन सा कार्य करें? आपकी आज्ञा का हम लोग पालन करेंगे।

गुरु जी - तुम लोगों के पास में विशाल मात्रा में जमीनें खाली पड़ी हैं और कोई विरला खेत ही हमें फसलों से हरा-भरा दिखाई पड़ा है। कुछ ही दूरी पर सुन्दर वन है। किसानों का कार्य यानि कि खेतीबाड़ी का कार्य करो जमीनों को जोतो और बंजर जमीनों को लहलहाती फसलों में बदल लो। तुम लोगों के शरीर तो तगड़े हैं ही और तगड़े लोगों के लिए किसानों का कार्य कठिन नहीं होता है। इस प्रकार से जब तुम लोग धर्म की कमाई करके खाओगे तो फिर तुम्हारे मन भी प्रसन्न होंगे और जो कृपा हम करेंगे उसे भी तुम लोग सम्भालने के पात्र बन पाओगे। अन्यथा न तो तुम्हारे द्वारा किए गए पापों का ही नाश हो पाएगा और न ही भविष्य में तुम्हारे मनो में उत्तम बीज उग ही पाएँगे।

ठग - महाराज जी! आप जो भी हुक्म करोगे। हम उसका पालन करेंगे बस आप एक बार वचन कर दो कि हम सबके पिछले गुनाह माफ हो गए। हे नजरों के द्वारा ही पापों का नाश करने वाले। जिस प्रकार से आपने उस पापी को छोड़ा था, उस प्रकार से दया दृष्टि करके हम सबके पापों का भी नाश कर दो।

गुरु जी - तुम लोगों के पास जो धन बुरी कमाई का है, उसे गरीबों व जरूरतमन्दों को लुटा दो जिस किसी के बारे में प्रत्यक्ष रूप से पता है उसका धन, उसे लौटा दो। यह सुनकर सभी ने अपने-अपने घरों में से सारा धन माल लाकर गुरु जी के आगे रख दिया और गुरु जी के हुक्म को सिर-आँखों पर रख लिया। इसके बाद श्री गुरु जी ने सबकी विनती को स्वीकार कर लिया कि उन्हें नामदान दिया जाए। फलस्वरूप गुरु जी ने सबको नाम दान दिया तथा सारी बस्ती के ठगों ने अपने पुण्य-दान का त्याग करके अपने द्वारा एकत्र की गई पाप की कमाई को पुण्य-दान करके समाप्त कर दिया यानि कि सारी धन सम्पदा को जन कल्याणार्थ खर्च कर दिया -

**माने बचन गुरु के सबही।  
दरब लुटाई दीन तिन तबही।  
खेती करन लगयो सभ ग्रामाँ।  
पूरब को तजि दयो कुकामा।  
धरमसाल मिल सकल सवारी।  
भाउ भगति के भै अधिकारी।  
सिमरन लगे वाहिगुरु नामू।**

**सिखी रीति लीनि अभिरामू। (गुरु नानक प्रकाश)**

करामात दिखाने से संकोच करने वाले गुरु के नेत्रों की दृष्टि पड़ जाने से ऐसी आश्चर्यजनक घटना घटित हुई कि सारे पत्थर दिल लोग मोम की भाँति पिघल गए तथा शुभ मार्ग के अनुगामी हो गए। गुरु जी ने पहले सबकी पाप की कमाई को दूर किया और आगे के लिए धर्म की आजीविका पर लगा दिया तथा नामदान देकर सच्चे मार्ग पर डाल दिया। ज्यों-ज्यों उनके अन्दर नाम धँसता चला गया, उसी क्रम में उन्हें आत्मिक रस आने लग पड़ा। गुरु जी ने उस पाप-बस्ती में एक धर्मशाला बनवा दी। जिस बस्ती में पहले नरसंहार होता था, लोगों को ठगा जाता था उसी बस्ती में अब लोगों को आदर होने लग पड़ा। धर्मशालाओं का आरम्भ गुरु जी ने एक आश्चर्यजनक आश्रम के रूप में किया था। कुछ दिनों तक गुरु जी वहाँ पर ठहरे रहे और जब सारी बस्ती पुण्य कर्मों में दृढ़ हो गई तो उसके बाद गुरु जी वहाँ से प्रस्थान कर गए। यह इन्सानी दिल का करिश्मा ही है कि जब घोर पापी लोग पुण्य कर्मों की ओर अग्रसर होते हैं तो वे महान पुण्य करने वाले ही बन जाया करते हैं -

**कितक दिवस बस करि तिह आना।  
भाउ भगति बिधि नीक दिङ्गाना।  
बखशे सरब पाप तिन करे।  
बहुर चलाए पंथ भलेरे।  
बिदा भए मिन ते बरिआई।  
आगे कीनो गमन गुसाई।  
महाँ अधी जिन जगत उधारे।  
तिन दरशन पर कवि बलिहारे।**

## 28. भाई सूजा

यहाँ से प्रस्थान करने के बाद गुरु जी शनैः शनैः भागीरथी गंगा से पार चले गए तथा आप जी मुर्शिदाबाद पहुँच गए जिसे कि आम लोग मकसूदाबाद भी कहते हैं। यहाँ पर साधुओं के पहनने वाले कुछ वस्त्र तथा गृहस्थियों द्वारा पहने जाने वाले रेशमी दुपट्टे तथा साफे आदि का बहुत बड़ा बाजार है। यह काफी बड़ा नगर है और किसी समय में यह राजधानी भी थी। श्री गुरु जी ने कुछ दिनों के लिए यहाँ पर डेरा लगा दिया, फलस्वरूप बहुत सारे लोग सत्संग के माध्यम से परमात्मा के मार्ग के अनुसर्णकर्ता बन गए। अनेकों लोगों के बुरे कर्म छूट गए तथा अनेकों शुभ कर्म करने वाले और भी आगे बढ़ गए। इन सभी के बीच सर्वाधिक नाम का रंग एक जड़िए को चढ़ा, जिसका नाम था - सूजा। यह सज्जन अपने

(शेष पृष्ठ 52 पर)

## गुरु नानक देव जी सुल्तानपुर लोधी में ( 1487-1499 )

डा. जगजीत सिंह  
मुख्य सम्पादक

श्री गुरु नानक देव जी के 550 वें प्रकाश उत्सव के समय 'जिथे बाबा पैर धरे पूजा आसण थापण सोआ'। अनुसार जहाँ-जहाँ पर भी आप जी ने चरण डाले वही-वही स्थान या शहर पूजनीय हो गया और आज इस महोत्सव के समय संगत उन पावन स्थानों के विशेष तौर पर दर्शन-दीदार कर रही है। जन्म स्थान ननकाना साहिब तथा जीवन यात्रा के अन्तिम मुकाम करतारपुर साहिब की भांति सुल्तानपुर की धरती भी आप जी के चरणों का स्पर्श पाकर पूजनीय धरती बन गई, जहाँ पर आपने सन् 1487 ईस से लेकर 1499 ई. तक बारह वर्ष निवास किया। इस अवधि की दो विशेष घटनाएँ, गुरु नानक मिशन की दो अतिविशिष्ट घटनाएँ हैं जो कि गुरु जी के रूहानी सन्देश का अभिन्न अंग हैं -

पहली घटना है मोदीखाने के माध्यम से मानवता की सेवा यानि कि गरीबों और जरूरतमन्दों की सेवा और दूसरी घटना है - बेई नदी प्रवेश के बाद बाहर निकल कर 'ना को हिन्दू ना मुसलमान' की पुकार यानि कि सारी मानवता को बिना किसी भेदभाव के एक समान प्यार, सम्मान व रूहानी उपदेश। इन दोनों घटनाओं की संक्षिप्त जानकारी देने से पहले सुल्तानपुर में श्री गुरु नानक देव जी के निवास के समय के साथ जुड़े हुए कुछ विशेष गुरु स्थानों की जानकारी देनी जितनी आवश्यक है उतनी ही लाभकारी भी है। भाई कान्ह सिंह जी द्वारा रचित महान कोष ( पृष्ठ सं. 221 के अनुसार ) में यह ब्यौरा इस प्रकार से है -

कपूरथला राज्य में सफेद बेई नदी के तट पर एक नगर है, जो कि राजधानी से 16 मील दक्षिण में स्थित है। यह नगर ग्यारहवीं शताब्दी में सुल्तानखान लोधी ने ( जो कि महमूद गजनवी का फौजदार था ) द्वारा बसाया गया था। इस जगह बीबी नानकी जी जैराम दास को व्याही गई थी। गुरु नानक देव जी ने इसी जगह पर 'तेरा हॉ' 'तेरा हॉ' कहकर तराजू के द्वारा तौलते हुए दौलत खाँ लोधी के मोदीखाने में काम किया। वर्तमान समय में सुल्तानपुर दक्षिणी रेलवे स्टेशन है। इस पवित्र नगर में निम्नलिखित गुरुद्वारा साहिब स्थित हैं-

1) गुरुद्वारा सन्त घाट - बेई नदी का वह घाट जहाँ पर गुरु नानक देव जी डुबकी लगाकर अलोप हो गए थे

और तीसरे दिन बाहर निकलकर आपने उदासी भेष धारण कर लिया था। रियासत की तरफ से पाँच 'घुमा' जमीन इस गुरुद्वारा साहिब के नाम है।

2) गुरुद्वारा हाट साहिब - इस जगह पर गुरु नानक देव जी ने सरकारी मोदीखाने की दुकान खोली हुई थी, जिससे अनेक लोग लाभ प्राप्त किया करते थे। यहाँ पर श्री गुरु नानक देव जी के समय के 11 पत्थर के छोटे-बड़े बाँट पड़े हुए हैं। यहाँ पर 20 घुमा जमीन कपूरथला रियासत द्वारा गुरुद्वारा साहिब के नाम है।

3) गुरुद्वारा कोठड़ी साहिब - यह वह जगह है जहाँ नवाब के मुंशियों ने गुरु जी से हिसाब किताब यानि कि लेखा-जोखा लिया था, रियासत की तरफ से तीन घुमा जमीन इस गुरुद्वारा साहिब के नाम है।

4) गुरुद्वारा गुरु का बाग - यह स्थान बेबे नानकी जी का घर तथा गुरु नानक देव जी का रिहायशी मकान था। इस जगह पर बाबा श्री चन्द तथा बाबा लखमीदास जी का जन्म हुआ था। इस गुरुद्वारा साहिब के नाम पर रियासत द्वारा 13 घुमा जमीन लगवाई हुई है।

5) गुरुद्वारा धर्मशाल गुरु अरजन साहिब जी - गुरुद्वारा कोठड़ी साहिब के पास यह स्थान है। श्री गुरु हरिगोबिन्द साहिब जी का विवाह करने के लिए भल्ला गाँव की तरफ जाते हुए श्री गुरु अरजन देव जी यहाँ पर बिराजे थे। रियासत द्वारा गुरुद्वारा साहिब के नाम 12 घुमा जमीन है।

6) गुरुद्वारा बेर साहिब - शहर से पश्चिम की तरफ करीब आधे मील की दूरी पर यह वह स्थान है जहाँ पर बेई नदी में, श्री गुरु नानक देव जी नित्य प्रतिदिन स्नान करने जाया करते थे। गुरु साहिब के समय की बेरी यहाँ पर मौजूद है। इस स्थान को रियासत कपूरथला, पटियाला तथा नाभा द्वारा आर्थिक सहायता प्राप्त है। तीस घुमा जमीन गुरुद्वारा साहिब के नाम है।

गुरु नानक देव जी की बहिन बेबे नानकी जी सुल्तानपुर लोधी निवास रखते थे, जहाँ पर कि उनके पति जैराम जी, नवाब दौलत खाँ लोधी के पास आमिल

(उच्चाधिकारी) के तौर पर सेवारत थे। गुरु नानक देव जी तलवंडी में भी किसी काम में दिलचस्पी नहीं ले रहे थे, इसीलिए बेबे नानकी जी तथा जैराम जी की सलाह के माध्यम से उन्होंने सुल्तानपुर आना मान लिया। इसके साथ ही जैराम जी ने उन्हें विश्वास दिलवाया कि वे उनके लिए कोई अच्छा सा रोजगार ढूँढ देंगे। गुरु जी की इस प्रकार की इच्छा को सुनकर उनकी पत्नी श्रीमती सुलक्खनी जी उदास हो गए। इतिहासकारों के अनुसार श्रीमती सुलक्खनी जी कहने लगे, स्वामी जी! आप यहाँ तलवंडी में भी मेरा ध्यान नहीं रखते थे और सुल्तानपुर में जाकर तो आपने मुझे बिल्कुल ही भूल जाना है। गुरु जी बोले, भाग्यवान! मैं यहाँ पर कौन सा कोई धनोपार्जन करता था और फिर मेरा अपना भी तो कुछ पता नहीं है कि मैं वहाँ पर कौन सा कार्य करूँगा। इसके बाद सुलक्खनी जी बोले, लेकिन यहाँ पर आपके रहने से ही मेरी पातशाही थी। तुम्हारे बिना तो मेरा संसार ही सूना हो जाएगा। कृप्या आप मुझे भी अपने साथ ले चलो। यह सुनकर गुरु जी का हृदय भी द्रवीभूत हो गया। गुरु जी बोले, भाग्यवान! इस समय तो तुम मुझे जा लेने दो लेकिन मुझे जैसे ही कोई रोजगार मिल जाएगा तो फिर मैं तुम्हें जल्दी ही वहाँ पर बुला लूँगा। गुरु जी के मुख से इस प्रकार के वचनों को सुनकर श्रीमती सुलक्खनी जी को कुछ सांत्वना प्राप्त हुई और वे शान्त हो गए।

इस प्रकार से गुरु जी, बेबे नानकी जी तथा जैराम जी के पास सुल्तानपुर लोधी चले गए, जहाँ पर कि जैराम जी, गुरु जी को नवाब दौलतखान लोधी जी के पास ले गए। शान्त स्वभाव गुरु जी को मिलकर नवाब बहुत प्रसन्न हुआ और यह जान कर तो वे और भी बहुत खुश हो गए कि (गुरु) नानक जी फारसी, संस्कृत तथा पंजाबी भाषा के माहिर हैं तथा हिसाब-किताब व बहीखातों पर भी उनकी अच्छी पकड़ है। यह सब जानने के बाद नवाब साहिब ने गुरु जी को अनाज का स्टोर सम्भालने के लिए 'मोदी' के तौर पर नियुक्त कर लिया। गुरु जी ने भी इस कार्य को बहुत ही अच्छे ढंग से सम्भाल लिया। नानक जी साधुओं, सन्तों, गरीबों व जरूरतमन्दों का पूरा-पूरा ध्यान रखते थे और उनकी यथासम्भव मदद करते रहते थे और यही कारण था कि आप बहुत जल्दी ही सारे क्षेत्र में प्रसिद्ध होगए। थोड़े समय बाद ही भाई मरदाना जी भी विरह व्यथा से पीड़ित होकर अपनी रवाब लेकर गुरु जी के पास ही सुल्तानपुर लोधी आ गए, फलस्वरूप अब इलाही कीर्तन की भी शुरुआत हो गई और सुबह-शाम संगत एकत्र होनी शुरू हो गई। यह पहली संगत थी, जहाँ पर रूहानी शब्द कीर्तन तथा विचारें होतीं, आम लोगों की शंकाओं की निवृत्ति होती तथा वैर-विरोध

व ईर्ष्या को भूलकर लोगों को परमात्मा के प्रेम में जोड़ा जाता। इसी संगत में मलसीहां के भाई भगीरथ जी तथा भाई मनसुख जी के नाम विशेष तौर पर इतिहासकारों ने लिखे हैं। इन्होंने गुरु जी की आशीष प्राप्त करके गुरुमति का खूब प्रचार किया।

गुरु जी सुल्तानपुर में लगभग बारह वर्षों तक रहे। थोड़े समय बाद गुरु जी ने अपनी धर्मपत्नी सुलक्खनी जी को भी सुल्तानपुर बुला लिया था और इस प्रकार से आप जी ने अपनी पारिवारिक जिम्मेदारी को भी बखूबी निभाया। बाबा श्री चन्द जी तथा बाबा लखमीचन्द का जन्म भी सुल्तानपुर में ही हुआ।

### रूहानी अनुभव मिलाप

आप जी नित्य प्रति ब्रह्ममुहूर्त में बेई नदी में स्नान करते, ईश्वरीय रंग में, शब्द गायन तथा सिमरन में जुड़ते तथा सारा दिन कारोबार करते हुए, उसका गुणगान करते तथा ईश्वरीय मस्ती में समय व्यतीत करते। एक दिन स्नान करते समय आपने बेई नदी के अन्दर ऐसी डुबकी लगाई कि काफी समय बीत जाने के बाद भी आप बाहर नहीं आए। बाहर बैठे आपके सेवक भी इन्तजार कर करके थक गए। फलस्वरूप गुरु जी के नदी में गुम हो जाने की खबर चहुँओर फैल गई। नवाब के सेवकों ने बहुत अधिक तलाश की लेकिन कुछ भी पता न चल सका। तीसरे दिन आप जी शान्त चित्त और ईश्वरीय रंग में रंगे हुए बाहर आए। इतिहासकारों के अनुसार आप जी इतना समय प्रभु जी की हुजूरी में रहे। परमात्मा ने गुरु जी को अपना प्यार दिया और यह आशीष दी कि मैं सदैव ही तुम्हारे अंग-संग हूँ। जाओ! संसार के अन्दर नाम की दात बाँटों और संसार में निर्लिप्त होकर विचरण करो। ईश्वरीय प्रेम का अमृत प्याला प्रभु जी ने गुरु जी को पिलाया और आशीर्वादों के भण्डार देकर, संसार को ईश्वरीय नाम, ईश्वरीय प्रेम व सच्चा सुच्चा जीवन जीने की शिक्षा देने के लिए, अपनी कृपाओं से भरपूर कर दिया। ऐसी रूहानी अवस्था में गुरु जी ने इस शब्द का गायन किया -

**कोटि कोटी मेरी आरजा पवणु पीअणु अपिआउ ॥**

**चंदु सूरजु दुइ गुफै न देखा सुपनै सउण न थाउ ॥**

**भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥**

अंग - 14

इसके बाद गुरु जी ने यह आवाज सुनी कि तुम्हें सारा कुछ प्रत्यक्ष दिखाई पड़ गया है और तुमने सब कुछ अनुभव कर लिया है। गुरु जी बोले हाँ, आप जी की कृपा की बदौलत मैं इन सभी अनुभवों को सारे संसार के साथ सांझा

करूँगा। इसके बाद गुरु जी ने उच्चारण किया -

१९ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल  
मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि। जपु॥  
आदि सचु जुगादि सचु॥ हैभी सचु नानक होसी भी  
सचु॥

इसके बाद पुनः दिव्य आवाज आई, हे नानक! जिस पर तुम्हारी कृपा होगी उस पर मेरी कृपा होगी, जिस पर तुम्हारा आशीर्वाद होगा उस पर मेरा भी आशीर्वाद होगा, मेरा नाम परम परमात्मा और तुम्हारा नाम परम गुरु। इतनी असीम कृपा करने के बाद ईश्वरीय दरबार से परमात्मा ने आपको वापिस संसार में बेई नदी के माध्यम से भेज दिया।

इस रूहानी रंग से शरशार गुरु जी बेई नदी में से तीसरे दिन बाहर आए और सबसे पहले आप जी ने यह नारा दिया कि 'ना को हिन्दू ना मुसलमान'। सारे लोग इन शब्दों को सुनकर हैरान थे। उन्हें यह बात समझ में ही नहीं आ पाई कि गुरु जी क्या कह रहे हैं क्योंकि वे सोच रहे थे कि हमें तो चारों तरफ हिन्दू या मुसलमान ही दिखाई पड़ते हैं जबकि गुरु जी कह रहे हैं कि 'ना को हिन्दू ना मुसलमान' गुरु जी का तात्पर्य था कि सारे लोग इन्सान हैं, परमात्मा के पुत्र हैं, आपस में भाई-भाई हैं। वे अलग अलग नहीं हैं, बल्कि वे तो वैर, विरोध व नफरत से दूर हैं। लोगों के अन्दर विशाल स्तर पर चर्चा शुरू हो गई, विशेष रूप से मुसलमान शासकों के अन्दर। इसी प्रकार से उलमा और काजी रोष प्रकट करने लग पड़े। फलस्वरूप उन्होंने नवाब के पास शिकायत की। नवाब ने नानक को अपने पास बुलवा लिया। नवाब की मौजूदगी में काजी ने पूछा, नानक जी! आप क्या कर रहे हो? गुरु जी बोले, 'ना को हिन्दू ना मुसलमान'। काजी बोला, तुम दिल्ली के सुल्तान की और यहाँ के नवाब का अपमान कर रहे हो? मुसलमानों का तो यहाँ पर शासन है और तुम कह रहे हो कि यहाँ पर कोई भी मुसलमान नहीं है? गुरु जी बोले, तुम लोग कहने मात्र के लिए तो मुसलमान हो लेकिन वास्तव में नहीं हो। उस समय गुरु जी ने किसी अलौकिक रंग में रंग कर इस शब्द का गायन किया -

मुसलमाणु कहावणु मुसकलु जा होइ ता  
मुसलमाणु कहावै ॥ अवलि अउलि दीनु करि मिठा  
मसकल माना मालु मुसावै ॥ होइ मुसलिमु दीन  
मुहाणै मरण जीवण का भरमु चुकावै ॥ रब की  
रजाइ मंने सिर उपरि करता मंने आपु गवावै ॥  
तउ नानक सरब जीआ मिहरंमति होइ त मुसलमाणु  
कहावै ॥ अंग - 141

मिहर मसीति सिदकु मुसला हकु हलालु कुराणु

॥ सरम सुंनति सीलु रोजा होहु मुसलमाणु ॥  
करणी काबा सचु पीरु कलमा करम निवाज ॥  
तसबी सा तिसु भावसी नानक रखै लाज ॥ 1 ॥  
मः 1॥ हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ  
॥ गुरु पीरु हामा ता भरे जा मुरदारु न खाइ ॥  
गली भिसति न जाईअै छुटै सचु कमाइ ॥ मारण  
पाहि हराम महि होइ हलालु न जाइ ॥ नानक  
गली कूड़ीओ कूड़ो पलै पाइ ॥ 2 ॥ मः 1 ॥  
पंजि निवाजा वखत पंजि पंजा पंजे नाउ ॥ पहिला  
सचु हलाल दुइ तीजा खैर खुदाइ ॥ चउथी  
नीअति रासि मनु पंजवी सिफति सनाइ ॥ करणी  
कलमा आखि कै ता मुसलमाणु सदाइ ॥ नानक  
जेते कूड़िआर कूड़ै कूड़ी पाइ ॥ 3 ॥ पउड़ी ॥  
ईक रतन पदारथ वणजदे ईक कचै दे वापारा ॥  
सतिगुरि तुठै पाईअनि अंदरि रतन भंडारा ॥ विणु  
गुर किनै न लधिआ अंधे भउकि मुए कूड़िआरा ॥  
मनमुख दूजै पचि मुए ना बूझहि वीचारा ॥ इकसु  
बाझहु दूजा को नही किसु अगै करहि पुकारा ॥  
ईक निरधन सदा भउकदे इकना भरे तुजारा ॥  
विणु नावै होरु धनु नाही होरु बिखिआ सभु छारा  
॥ नानक आपि कराए करे आपि हुकमि सवारणहारा  
॥ 7 ॥ अंग - 140-141

काफी बातचीत के बाद काजी ने कहा यदि ऐसी बात है तो आप हमारे साथ नमाज अदा करने में शामिल होओ। गुरु जी मस्जिद में चले गए लेकिन नामज पढ़ने की बजाए आप एक तरफ होकर खड़े रहे। नमाज अदा करने की रस्म समाप्त होने के बाद काजी बोला, आपने हमारे साथ नमाज नहीं पढ़ी?

गुरु जी - मैं नमाज किसके साथ पढ़ता? आप तो घर गए हुए थे और घोड़े के नवजात शिशु का ध्यान कर रहे थे कि कहीं वह गड्ढे में ही गिर न जाए। यह सुनकर काजी चुप हो गया। इसके बाद नवाब जी बोले, मेरे साथ पढ़ लेते? गुरु जी बोले, आप तो काबुल में जाकर घोड़े खरीद रहे थे? दोनों लोग वास्तविकता को सुनकर चुप हो गए।

इस प्रकार के रूहानी मिलाप के बाद गुरु जी सुल्तानपुर मोदीखाने की नौकरी का त्याग करके परमात्मा की नौकरी में लीन हो गए और इस महान कार्य को सम्पन्न करने के लिए आपने चार उदासियाँ धारण कीं और सारी मानवता को सत्य का मार्ग, धारण करने का उपदेश दिया -

चड़िआ सोधन धरत लुकाई।

## गुरु बाबा जी के सात सिद्धान्त

डा. तारन सिंह

गुरु नानक साहिब जी का सन्देश मध्यकालीन भारतीय इतिहास की एक महान घटना है जिसकी महानता तथा सार्थकता कभी भी मद्धम नहीं पड़ेगी। यह सन्देश गुरु बाबा जी हमें सन् 1498 ई. से लेकर सन् 1521 ई. तक देश व परदेशों में घूम-घूम कर बाँटते रहे और भारत में चल रहे प्रत्येक फिरके व धर्म ने आपके सन्देश को बहुत ही गम्भीरता के साथ सुना और उस सन्देश का चहुँओर बहुत गहरा प्रभाव भी पड़ा। इसका प्रमाण एक यह भी है कि सन् 1521 ई. तक गुरु नानक साहिब को मुसलमानों ने 'हजरत बाबा नानक' कहना शुरू कर दिया था। हिन्दू जनता ने आपको 'नानक देव' कहकर प्यार करना शुरू कर दिया था तथा नाथों व योगियों ने आपको 'नानक नाथ' मान लिया था। इसके साथ ही आपके नाम के साथ पीर, फकीर आदि शब्द भी प्रयुक्त होने लग पड़े थे, जबकि सिक्ख समाज में आप 'गुरु नानक' थे।

यदि ध्यानपूर्वक विचार की जाए, तब इन सभी उपाधियों का अर्थ एक ही है। बाबा उस बुजुर्ग को कहते हैं जिसकी सयानप सर्वमान्य है और जिसके हृदय में कोई भेदभाव नहीं है। बाबा वह है जो सयानप और ज्ञान का भण्डारा है तथा जो प्यार का सागर है। ये दो तत्व ही 'बाबा' शब्द के परिचायक हैं और यही दो तत्व 'देव' के अर्थों में भी मौजूद हैं। डा. राधाकृष्णन ने 'देव' का अर्थ 'रौशनी देने वाला' तथा 'उपहार प्रदान करने वाला' किए हैं। रौशनी देने का तात्पर्य ज्ञान तथा सयानप का भण्डारा होना है। इसके साथ ही उपहार देना प्यार का सूचक है। यही दो भाव 'नाथ' शब्द के भी हैं। नाथ वही होता है जो कि सयानप और ज्ञान का भण्डारा होता है। नाथ वह है जो खजानों का मालिक है और सबको बाँटता है। गुरु पदवी अलौकिक है। पहले ज्ञानवानों तथा सयाने लोगों को ऋषि, मुनि, योगी, पीर व पैगम्बर आदि कहा जाता था लेकिन गुरु तथा जगत गुरु कम ही किसी को कहा है। गुरु वह है जो जगत ऋषियों, मुनियों, साधुओं, सिद्धों, बौद्धों, नाथों तथा योगियों आदि सभी का गुरु है। लेकिन 'बाबा' 'देव' तथा 'नाथ' शब्द भी उन लोगों ने अपनी-अपनी श्रद्धा व प्यार के अन्दर सराबोर होकर ही प्रयुक्त किए तथा वे इस बात के साक्षी हैं कि गुरु बाबा जी की सयानप तथा उनकी हमदर्दी व प्यार पर सबको

विश्वास था। 'बाबा' शब्द बहुत ही दृढ़ हुआ तथा भाई गुरदास जी तथा अन्य लेखकों ने भी बाबा नानक शब्द का ही प्रयोग किया है। यहाँ तक कि धीरे-धीरे श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के लिए भी बाबा शब्द ही प्रयोग किया जाने लग पड़ा। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी भी सचमुच 'बाबा' ही हैं जिनकी फिलासफी, ज्ञान व सयानप अलौकिक है। इसके साथ ही यह हृदय भी केवल इस 'बाबा' का ही है, जिसने कि बिना किसी ऊँच-नीच के, हिन्दू व मुसलमान की वाणी को किसी भी जाति, रंग, रूप, क्षेत्र, बोली व संस्कृति के भेदभाव के बिना सम्भाला हुआ है। ये बाबा के सभी प्यारे हैं और बाबा सभी का प्यारा है।

भाई गुरदास जी के तत्व और भी विशेष हैं। उन्होंने तो गुरु नानक सन्देश के बारे में यह भी बात कही है कि उनका सन्देश इस प्रकार का है मानो कि सूर्योदय हो गया हो और तारागण अलोप हो गए हों। दूसरी बात जो भाई गुरदास जी ने कही, वह यह थी कि गुरु नानक का सन्देश एक शेर की गर्जना थी, जिसे मृग झेल न सके और वे भाग खड़े हुए। 'सिंघ बुके मिरगावली भंनी जाए'। तीसरी बात उन्होंने जो कही वह बहुत ही महान है, उन्होंने कहा कि गुरु नानक ने ऐसा सन्देश दिया जिसने भारतीय लोगों के मन के ऊपर से अथरवणी बोझ को उतार डाला यानि कि गुरु नानक ने भारत की मन, बुद्धि व आत्मा के ऊपर से अथरवण का भार उतार दिया। 'गुरुमुखि भारि अथरवण तारा'।

भाई गुरदास जी के इन कथनों को संक्षेप रूप में समझना उचित है। इस प्रकार से प्रतीत होता है कि भाई गुरदास जी ने 'सूरज निकालिआ तारे छपहि' में सूर्य तो गुरु नानक के सन्देश को कहा है लेकिन तारे का अर्थ क्या हो सकता है? वैसे सूर्य के उदय होने से तारे छिपते नहीं हैं और प्रत्येक तारा सूर्य से बड़ा भी है लेकिन गुरु नानक का सन्देश सूर्य की भांति था। भारत के दूसरे दर्शन, चाहे वे कितने ही महान थे, वे तारों की भांति हो चुके थे। तारे चाहे बहुत बड़े हैं लेकिन वे हमारी धरती से इतने अधिक दूर हैं कि उनकी रौशनी हमारे रास्ते को रौशन नहीं कर पाती है। उनकी गर्मी हमें गर्माहट नहीं दे पाती है। उनकी गर्मी न तो हमारी फसलों को पका सकती है और न ही हमारे कपड़ों को सुखा सकती है। उस समय के सारे दर्शन निःशंक रूप से बहुत महान थे,

लेकिन उनका सम्बन्ध, जीवन के साथ से टूट चुका था। वे हमारे जीवन के मार्ग को रौशन कर पाने में असमर्थ थे, वे हमारे जीवन में गर्माहट उत्पन्न करके हमें सुखी नहीं कर सकते थे। दूसरी तरफ श्री गुरु नानक देव जी ने जो सन्देश दिया वह सूर्य की भांति था। वह जीवन की समस्याओं को रौशन करता था, मनुष्य की फसलों को पकाता था और वह बीमारी के कीटाणुओं का नाश करने में समर्थ था। भारत के अन्य दर्शन तारागणों के सदृश्य हो चुके थे, वे मनुष्य को सुन्दर तो लगते थे लेकिन वे किसी भी काम में आने वाले नहीं थे। इसके विपरीत श्री गुरु नानक साहिब की फिलासफी की रौशनी में मनुष्य अपने रास्ते को साफ देख रहा था और यह फिलासफी उसके जीवन के लिए इतनी लाभदायक थी जितना कि सूर्य हमारे जीवन के लिए है। यही, इस फिलासफी की महानता है।

भाई गुरदास जी ने दूसरी बात यह कही है कि गुरु की आवाज में सिंह की गर्जना थी, जिसे सुनकर हिरणों के समूह के समूह भाग खड़े होते थे। यह मृगों की डारें क्या थीं? प्रतीत होता है कि मृगावली ( मृग + अवलि ) का तात्पर्य धर्म के वे ठेकेदार थे जो रस्में, रीतियाँ, कर्मकाण्ड, शगुन, दान-पुण्य व पूजा-पाठ करवाते थे, लोगों के द्वारा कमाया हुआ धन खाते-पीते तथा मौज-मस्ती करते थे। यह 'मृगावली' वे हाकिम थे जो लोगों की खून-पसीने की कमाई पर पलते थे 'राजे सीह मुकदम कुते' बने हुए थे। इस मृगावलि में पण्डित, मौलाना, मौलवी व काजी आदि भी थे जो कि विद्या का गलत प्रयोग करते व करवाते थे। मृगावलि में वे सभी शामिल थे जो कि जनता का खून चूस रहे थे, वह भी, उन्हें गलत आडम्बरों में डालकर। गुरु बाबा नानक जी की आवाज में जागृति थी, न्याय के लिए चुनौती थी, न्याय लेने व देने के लिए तीव्रता थी, धर्म को पाखण्डों, रस्मों, रीतियों व कर्मकाण्ड से मुक्त करने की सामर्थ्य थी। यह सन्देश इतना दलीलपूर्ण व तर्कयुक्त था और भ्रम व पाखण्ड से इतना मुक्त था कि इन तथाकथित मृगों को भाग खड़े हो जाना पड़ा। इस सन्देश के इस पक्ष की करामात को 'आसा दी वार' के दृष्टिकोण से देखने की जरूरत है। वार आसा इस बात को अलग-अलग रूप में प्रस्तुत करती है कि धर्म क्या है और क्या चीज धर्म नहीं है। यह सिंह की आवाज है।

भाई गुरदास जी का यह कथन विशेष है कि गुरु नानक के सन्देश ने भारत की आत्मा के ऊपर से अथरवणी भार को दूर कर दिया।

निरंकार - पहले निरंकार था और बाद में ऐकंकार हुआ। पहले वह कोई सत्ता थी जो कि अप्रकट थी। वह सत्ता विचार, सिद्धान्त, संकल्प, विश्वास, प्रतीति का ही विषय है

न कि वह इन्द्रियों का विषय है। वास्तव में सत्ता या हस्ती, विचार, सिद्धान्त, संकल्प व प्रतीति का ही विषय है न कि वह देखने या सुनने वाली कोई चीज है। 'निरंकार' विचार, सिद्धान्त और संकल्प ही है। जिन्दगी, सुन्दरता, मिठास, पवित्रता, एकता, निर्भयता आदि महान तो हैं लेकिन किसी आकार वाली नहीं होती हैं बल्कि किसी आकार के अन्दर स्थित होती हैं, निरंकार चिन्ह है, किसी सत्ता को दर्शाने का आकार नहीं।

गुरु नानक को निरंकारी कहते थे और कहते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि नानक 'निरंकार' का उपासक है, इन दोनों कथनों का भाव एक ही है। 'निरंकारी' किसी आकार का पुजारी नहीं है बल्कि विचार, सिद्धान्त, संकल्प, विश्वास व प्रतीति का उपासक है। 'नानक निरंकारी है' का तात्पर्य है कि नानक सारे तत्व विचार संकल्प का उपासक है, ख्याल का उपासक है, भावना का उपासक है न कि वह किसी नाम, रूप व आकार या प्रकार का उपासक है।

गुरु नानक के सिद्धान्तों में से निरंकार सिद्धान्त मुझे सर्वाधिक महानता वाला प्रतीत होता है, इसलिए सांसारिक धर्मों का रूप व भाव ही बदल जाता है। यदि प्रत्येक धर्म यह मान ले कि वह 'निरंकार' का उपासक है तो सारे ही धर्म एक हो सकते हैं। इसी सिद्धान्त के अनुसार गुरु नानक साहिब ने सारे धर्मों को एक धरातल पर ही स्थापित किया। श्री गुरु नानक जी निरंकार के उपासक हैं, आकार के नहीं। विचार तथा भावना का आकार नहीं है, लेकिन हस्ती तो है। प्रत्येक विचार की हस्ती है।

सभी धर्मों में बहुत सारी आकार वाली चीजें पूजनीय हैं, जैसे कि गुरु व्यक्ति, धर्म ग्रन्थ, पूजनीय स्थान, पूजनीय चिन्ह, पूजनीय कर्म, धर्म-भेष, धार्मिक चिन्ह, धार्मिक जत्थेबन्दी आदि। इन आकारों वाले मूर्ति रूप हैं लेकिन ये धर्म नहीं हैं। धर्म तो किसी भावना, वृत्ति व कीमत का नाम है। गुरु बाबा जी ने कहा कि 'गुरु व्यक्ति' की उपासना धर्म नहीं है बल्कि शब्द की उपासना धर्म है। ग्रन्थ की उपासना धर्म नहीं, वाणी की उपासना धर्म है। कड़ा व कृपाण आदि की उपासना धर्म नहीं बल्कि इनकी भावना की उपासना धर्म है। कड़ा तथा अन्य ककार ( धार्मिक चिन्ह ) कुछ भावनाओं और संकल्पों के चिन्ह हैं, उस भावना, विचार या सिद्धान्तों की उपासना धर्म है। नाम सिद्धान्त भी यही है। प्रत्येक नाम राम, रहीम, दयालु, कृपालु आदि के पीछे भी भावना, विचार व संकल्प ही है और उनकी उपासना ही धर्म है। गुरु बाबा जी ने प्रत्येक जगह पर यही बताया है कि आकार के उपासक न बनो बल्कि विचार के उपासक बनो। यही निरंकारी वृत्ति है। धर्म आकार वाली चीजों की पूजा नहीं है बल्कि यह तो

विचारों व भावनाओं की उपासना है। श्री गुरु नानक देव जी की वाणी में मुंदा, सन्तोख, सरम, पत, झोली ध्यान की विभूति 'मन हाली किरसानी करणी' आदि सारे ऐसे संकेत हैं जो कि इस बात की गवाही दे रहे हैं कि गुरु नानक देव जी आकार के उपासक नहीं हैं बल्कि वे तो आकार के पीछे छिपी हुई विचार भावना के उपासक हैं और यह उपासना ही धर्म है। मुंदा, झोली, खिंधा, तग आदि धर्म की आकार वाली चीजें हैं। इनकी पूजा नहीं करनी है बल्कि इनकी भावना को समझना है और उस भावना की ही पूजा करनी है। वह भावना है सन्तोष, दया, ध्यान आदि।

गुरु नानक देव जी ने धर्मों के अन्दर उन चीजों को, जिन्हें कि पूजनीय समझा जाता था, पूजनीय नहीं रहने दिया। उन्होंने पूजनीय वस्तुओं से हटाकर पवित्र व पावन भावना को समझने पर जोर लगा दिया। पूजनीय तो कुछ भी नहीं है बल्कि भावना ही पवित्र है। पवित्र वाहिगुरु है, निरंकार है, पारब्रह्म है तथा ये विचार, संकल्प, विश्वास व प्रतीति के हैं। स्थान, चिन्ह, भेष आदि पवित्र नहीं हैं और इन्हीं को पूजनीय बना दिया गया है। 'वार आसा' का केन्द्रीय विचार यही है कि धर्म का आधार वह नहीं है जिसे कि 'पूजनीय' मान लिया गया है बल्कि धर्म का आधार तो उसके पीछे की पवित्र-पावन भावना है। धोती, टिक्का, जपमाली, दान-पुण्य, श्राद्ध, शरह, शरीयत, भेष आदि केवल पूजनीय हैं जबकि पवित्र व पावन तो केवल नाम है, निरंकार, एकंकार का अनुभव है। गुरु जी स्वयं को निरंकारी कहलवाते थे। 'निरंकारी' उनकी वृत्ति या स्वभाव का रूप है।

गुरु नानक साहिब ने धर्म का एक नवीन संकल्प दिया जो प्रस्तुत पंक्तियों में दर्ज है -

**पति विणु पूजा सत विणु संजमु जत विणु काहे जनेउ॥  
नावहु धोवहु तिलकु चड़ावहु सुच विणु सोच न होई॥  
अंग - 903**

इस पंक्ति में विचार यह है कि सम्पूर्ण तौर पर जिन बातों को धर्म कहा जाता है वह इज्जत, सत्य और ब्रह्मचर्य की रखवाली करने वाली होनी चाहिए। प्रस्तुत पंक्ति का प्रथम भाव यह है कि यदि कोई मनुष्य पूजा करता है या फिर कोई कौम पूजा-पाठ करती है और वह सम्पूर्ण तौर पर अपनी कौमी इज्जत या अपनी इज्जत को कायम नहीं रख सकती है तो वह धर्म निष्फल है। इज्जत का तात्पर्य प्रत्येक प्रकार की इज्जत से है, राजनैतिक इज्जत स्वतन्त्रता है और सामाजिक इज्जत शराफत है। जो कौम तथाकथित धर्म-कर्म करती है, पूजा-पाठ करती है लेकिन अपनी इज्जत, स्वतन्त्रता, स्वाभिमान और सम्मान को कायम नहीं रख पाती है, वह

धर्म नहीं है। इसलिए धर्म वही पूर्ण है जो कौम को सम्मान और स्वतन्त्रता का जीवन प्रदान कर सके।

प्रस्तुत पंक्ति का दूसरा भाव यह है कि धर्म का एक अंग संयम है। संयम का तात्पर्य आत्म नियन्त्रण से है और संयम का तात्पर्य व्रत भी है। अहिंसा भी व्रत है। अहिंसा परमोधर्मा माना गया है। यह उच्च कोटि का संयम है। कौम को सम्पूर्ण तौर पर अहिंसक होना चाहिए। किसी को मन या वचन द्वारा दुख देना अहिंसा की ही श्रेणी में आता है लेकिन अहिंसा की भी एक सीमा है। जब कोई कौम अहिंसा को कायम रखती है लेकिन उसके सामने अथवा उसकी अपनी स्थितियों में सच्चाई का खून हो रहा हो, न्याय का गला घोंटा जा रहा हो तो फिर वह व्रत ठीक नहीं है, उस समय तो अहिंसा का हिंसा बन जाना ही दुरुस्त है। उस समय सत्य व न्याय की रक्षार्थ शस्त्रों को धारण करना और आन्दोलन करना ही अहिंसा और न्याय करना है। सत्य, हिंसा और अहिंसा की बड़ी विचारों की अपेक्षा कहीं पावन व श्रेयस्कर वस्तु है। जो धर्म सत्य के सम्मान की रक्षार्थ साहस प्रदान नहीं कर सकता है, वह तो धर्म ही नहीं है।

इसी पंक्ति का तीसरा भाव यह है प्रत्येक धर्म के बाहरी चिन्ह तो पृथक-पृथक हैं लेकिन उनकी भावना तो एक ही होती है। जतु या ब्रह्मचर्य शब्द उस भावना का ही चिन्ह है, भाव यह है कि बाहरी चिन्ह, आन्तरिक आचरण का परिचायक है। अब मान लो जनेऊ तो धारण किया हुआ है लेकिन अन्दर ब्रह्मचर्य या मन, वचन व कर्म पर नियन्त्रण नहीं है तो फिर उस जनेऊ को धारण करना अर्थ हीन हो जाता है। इसलिए धर्म का तीसरा तत्व उच्च आचरण है।

प्रत्येक धर्म के पवित्र स्थान हैं वहाँ पर स्नान किए जाते हैं, लेकिन यदि स्नान करने वाले के अन्दर पवित्रता नहीं आ पाती है तो फिर बाहरी स्नान करने का क्या अर्थ रह जाता है?

अतः गुरु नानक के धर्म का संकल्प यह है कि धर्म ने कौम को स्वतन्त्रता और स्वाभिमान का जीवन देना है, उसके लिए सत्य की रक्षार्थ साहस पैदा करना है तथा कौम को ऊँचा आत्मिक उद्देश्य व आचरण प्रदान करना है, यह जीवन 'सति सुहाण सदा मनि चाउ' रूप परमात्मा की भक्ति के माध्यम से आता है।

गुरु बाबा जी ने मानवता के श्रेष्ठतम स्वरूप का चित्रण करते हुए उसके सात बिन्दु निर्धारित किए हैं जिनके ऊपर बाबा जी के धर्म और दर्शन का सारा संकल्प खड़ा है। ये बिन्दु बाबा जी के परमात्मा का स्वरूप हैं लेकिन वास्तव में परमात्मा का यह स्वरूप मानवता की गहरी

इच्छाओं और लगनों का ही एक रूप है। ये मानवता के सात सपने, आदर्श, संकल्प व विश्वास हैं कि किसी न किसी दिन मानवता इस आदर्श तक पहुँच जाएगी और फिर सारी मानवता परमात्मा का स्वरूप ही बन जाएगी। परमात्मा का जो स्वरूप है वह मानवता को प्राप्त हो जाना है यानि कि मनुष्य ने परमात्मा ही बन जाना है लेकिन यह तभी हो पाएगा जब परमात्मा के सारे गुण, मनुष्य के अन्दर प्रवेश कर जाएंगे सारी मानवता में प्रवेश कर जाएँगे।

वे सात बिन्दु हैं -

- |                                 |             |
|---------------------------------|-------------|
| 1 ओअंकार                        | - एकता      |
| सतिनामु                         | - सत्य      |
| करता पुरख                       | - किरत      |
| ( उचित साधनों से जीविकोपार्जन ) |             |
| निरभउ निरवैरु                   | - समानता    |
| अकाल मूरति                      | - सौन्दर्य  |
| अजूनी सैभं                      | - स्वाधीनता |
| गुर प्रसादि                     | - शीलता     |

उपर्युक्त सातों पक्षों की व्याख्या सारी गुरवाणी के अन्दर है। ये सातों बिन्दु मिलकर मूलमन्त्र हैं। मूलमन्त्र की व्याख्या जपु, वार, आसा, सिध गोसटि, ओअंकार आदि वाणियों में की गई है। यही गुरु बाबा जी का सन्देश है। आओ! इस सन्देश की ही सप्तांग रूप में विचार करने की कोशिश करते हैं -

## ऐकंकार

‘एक ओअंकार’ एक परम सत्य का परिचायक है लेकिन वास्तव में यह उस मानवीय स्वप्न का चिन्ह है जहाँ पर सारी मानवता और ब्रह्मांड एक हो जाते हैं। वैसे मानवता में भेदभाव व विभाजन है और यह धड़ों, फिरकों, जातियों, नस्लों, रंगों, पातियों, बोलियों, सभ्यताओं, संस्कृतियों आदि में विभक्त है। मनुष्यों के अन्दर भौगोलिक व ऐतिहासिक विभिन्नताएँ हैं लेकिन मानवता का सपना यह है कि एक दिन ये समस्त विभिन्नताएँ समाप्त हो जाएँगी और सारी मानवता में फिर कोई भी भेदभाव नहीं रह जाएगा। इन्हें बाहरी बातें समझा जाएगा तथा ऐकंकार को आन्तरिक वास्तविकता मानकर मानवता ‘एक’ ही मानी जाएगी भावार्थ एकता का आधार, सारी रचना के पीछे धड़क रही ऐकंकारी वास्तविकता होगी। नानक के रंगमंच की बजाएँ सूत्रधार को अधिक समझा जाएगा और वह सूत्रधार एक ही है। सोदरु का सन्देश ‘अनेकता में एकता’ है। ‘सोई सोई सदा सचु साहिब’ है - ‘ऐकंकारु’ वह ‘है भी होसी, जाइ न जासी’ है, वह रचना रचने वाला है - अनेकों रंगों व रूपों की रचना का सृजन

उसने किया है, रचना उसकी माया शक्ति है, वह सबकी सम्भाल करता है, वह रजा का स्वामी है। ऐकंकार की विशेषता यह है कि सब कुछ उसकी रजा में है। यथा ‘नानक रहण रजाई’।

‘सोदरु’ मानवता का हृदय है उसका सपना है। यह मानवीय हृदय में ही साकार हो रहा है। यह लगन है कि मानवता में ‘एकता’ शक्तिशाली हो ‘सोदरु’ को गाना करतारपुर का नितनेम था। ‘सोदरु’ आरती गोवीए - महान सन्देश है।

रावी के दाएँ तथा बाएँ तट पर बैठकर ही गुरु बाबा जी ने बाणी ‘ओअंकार’ की रचना की थी। गुरु बाबा जी शायद बाणी के आवेश के साथ डेरा बाबा नानक वाली जगह आकर बैठ जाते और गुरवाणी की फुहार लगा देते। ‘ओअंकार’ वाणी ‘ऐकंकार’ की ही व्याख्या है। गुरु बाबा जी की भारतीय आस्तिक मतों के साथ भी सारा जीवन चर्चाएँ होती रहीं, संवाद होते रहे। ब्राह्मण मत भी आस्तिक है और गुरमति भी आस्तिक है लेकिन दोनों के बीच बहुत बड़ा अन्तर है। ब्राह्मण मत शाखाओं से पेड़ की तरफ आया है जबकि गुरमति पेड़ से शाखाओं की तरफ गया है। ब्राह्मण मत अनेकता से एकता की तरफ आया है जबकि गुरमति ने एकता से अनेकता देखी है। ब्राह्मण कुदरत से कादर की तरफ गया है जबकि गुरमति कादर से कुदरत की तरफ गया है। ब्राह्मण मत विस्तार व विश्लेषण का मत है जबकि गुरमति एकता अखण्डता व अभिन्नता का मत है। ब्राह्मण मत छेदक है। वह ब्रह्मा, विष्णु, महेश को मानकर एक ब्रह्म की तरफ गया है, वह रज, सत व तम की तरफ से ‘एक’ की तरफ गया है लेकिन गुरमति के लिए ‘एक’ पहले है और ओअंकार बाद में है। ‘एक ओअंकार’ गुरमति में ब्रह्मा, विष्णु और महेश ‘ऐकंकार’ में से उत्पन्न हुए हैं -

**ओअंकारि ब्रहमा उत्पति ॥**

**ओअंकारु कीआ जिनि चिति ॥**

**ओअंकारि सैल जुग भए ॥**

**ओअंकारि बेद निरमए ॥**

**अंग - 929**

**ओनम अखर सुणहु बीचारु ॥**

**ओनम अखरु त्रिभवण सारु ॥ 1 ॥**

**अंग - 930**

‘ओनम अखरु त्रिभवण सारु’ गुरमति की आधारभूत वस्तु है। ‘सार’ ऐकंकार है, श्रोत ऐकंकार है और उसी से सारी रचना हुई है। गुरु बाबा जी ने ‘तीनि भवन इक जोती’ देखी, ‘ऐके भवर भवै तिहु लोड़’ देखा तथा ‘ऊरम धूरम जोति उजाला’ देखा। इसी कारण से ‘ऐकंकारी-एकता’ मानवीय होनी में है। मनुष्य के हृदय की तड़प ‘एकता’ है।

*‘चलता’*

## गुरु नानक देव जी की अरब फेरी के वृत्तान्त

सय्यद पृथीपाल सिंह

तारीखे अरब जिसके कर्ता ख्वाजा जैनुल आबदीन जी हैं, अपनी इस अरबी की किताब में गुरु नानक देव जी की अरब फेरी का उल्लेख इस प्रकार से अपने शब्दों में कलमबन्द करते हैं कि मैं गुरु नानक देव जी के साथ था, जिस समय गुरु जी की भेंट काजी रुकुनुद्दीन के साथ हुई।

परस्पर सामने होते हुए ही रुकुनुद्दीन ने सलाम अर्ज की, उत्तर मिला 'सति श्री अकाल। गुरबर अकाल' रुकुनुद्दीन ने सवाल किया कि आपका मजहब क्या है? (फला अला महजबहू, जवाब था अबदुला अल्ला ला महजबहू भावार्थ मैं परमात्मा का बन्दा हूँ, मेरा कोई महजब नहीं)।

सारा दिन उत्तर प्रश्न व उत्तर होते रहे। वहाँ पर 360 सवाल जवाब थे। गुरु जी ने गाने के बारे में बतलाया। तुम्हारे नबी करीम जी बारे हदीस में आया है कि नबी करीम मुहम्मद साहिब, कुरैश कबीले दीशादी में गए। लड़कियों के द्वारा गीत गाए जा रहे थे। हजरत मोहम्मद साहिब जी को देखकर वे लोक गीत छोड़कर भजन गाने लग पड़ीं तो मोहम्मद साहिब जी ने फुरमाया कि वे लोक गीत गाएं, परमात्मा उन्हें सम्मान प्रदान करेगा। रुकुनुद्दीन के पास इस बात का कोई जवाब नहीं था। वे कहने लगे, 'या रबी ताहरू फीअल कलूल-उल रब'। भावार्थ आप परमात्मा के द्वारा भेजे हुए आए हुए हो, मुझे पहचानने की शक्ति प्रदान करो।

फिर रुकुनुद्दीन ने तर्क की कि इस्लाम में बाल कटवाना जायज है लेकिन आप तो अपने बालों को साबूत रखते हो।

जवाब में गुरु जी ने कहा कि यह सब गलत है, आपका कुरान ही इसकी इजाजत नहीं देता है। उसने हैरान होकर कहा कि तो फिर क्या मैं कुरान के विपरीत चलता हूँ? या फिर कुरान शरीफ को पढ़ता तो हूँ लेकिन समझता नहीं हूँ? कृप्या मुझे यह बात समझाओ। इसके बाद गुरु जी ने कहा कि देखो पैरा 2 सूत बदर रकू 24, आयत 195 भावार्थ हज करने के लिए जाने वालों के लिए, जो कि आत्मिक जीवन जीने के लिए जा रहे हैं, बाल कटवाना मना है।

'रवाना काबा को खुदा का घर समझना' ऐसी धारणा

का भी कुरान खण्डन करता है। खुदा ने हजरत मोहम्मद साहिब को सम्बोधन करके फुरमाया 'नखन अकरब व अलाह मिन हबुलवरीद' भावार्थ मैं तो एक इन्सान की शाह रग से भी नजदीक हूँ। यह सुनकर उपस्थित सारे श्रोतागण पुकार उठे मरहब्बा! लबेंक! जजाक हुम अला ताअला! हम तुम्हारे ऊपर बलिहार जाते हैं और तुम्हारी सेवा में हाजिर हैं तथा परमात्मा तुम्हारा भला करे एवं तुम्हें नेकियाँ प्रदान करे।

गुरु जी के साथ कीर्तन और कथा वार्ता चलती रही। सत्य के खोजी व परमात्मा को चाहने वाले एकत्र होते रहे तथा कीर्तन व वचन सुनकर निहाल होते रहे। दर्शनार्थ आने वाले श्रद्धावान लोग खजूरें, दूध व शहद भेंट करते रहे जिसे कि सारी संगत में बाँट दिया जाता था। जब नानक शाह फकीर के प्रस्थान का समय आया तो सबने उपदेश की मांग की। उस समय श्री गुरु जी ने फुरमान किया, तुम्हें करतार याद आए, आप लोग हक का चिन्तन करें आपकी मुरीदगी गुरु के द्वार पर स्वीकृत हो गई है।

इस सारी एकत्रता में हाजी गुल मुहम्मद, शेखे अरब (खब्जा जैनुल आबदीन) तथा सरदार कबीला कुरैस अबन असवद, सरदार कबीला कुरैस अबन असवद, सरतार कबीला बसू शामिल थे। सारे मक्के में इस बात की चर्चा छिड़ गई कि काजी रुकुनुद्दीन ने नानक शाह को गुरु धारण कर लिया है तथा बैत स्वीकार कर ली है। आखिर एक दिन सजना ने अरज गुजारी की परम पद की प्राप्ति का तरीका बताओ ताकि हमारा आवागमन मिट जाए। लेखक के अनुसार उस समय गुरु नानक देव जी ने राग तिलंग में यह शब्द गायन किया -

यक अरज गुफतम पेसि तो दर गोस कुन करतार ॥  
हका कबीर करीम तू बेअैब परवदगार ॥ 1 ॥  
दुनीआ मुकामे फानी तहकीक दिल दानी ॥  
मम सर मूइ अजराईल गिरफतह  
दिल हेचि न दानी ॥ 1 ॥ रहाउ ॥  
जन पिसर पदर बिरादराँ कस नेस दसतंगीर ॥  
आखिर बिअफतम कस न दारद चूं सवद तकबीर ॥ 2 ॥  
सब रोज गसतम दर हवा करदेम बदी खिआल ॥  
गाहे न नेकी कार करदम मम ई चिनी अहवाल ॥ 3 ॥  
बदबखत हम चु बखील गाफिल बेनजर बेबाक ॥

नानक बुगोयद जनु तुरा तेरे चाकराँ पा खाक ॥4॥  
1॥ अंग - 721

अर्थ - मैं सत्य कहता हूँ, परमात्मा तुम कृपावान, निर्दोष व पालनहार हो तुम्हारे आगे एक विनती है कृपा करके तुम कान लगा कर यानि कि गौरवपूर्ण ढंग से सुनो कि हे करतार! दिल जानता है कि संसार नाशवान है लेकिन वह यह नहीं जान रहा है कि यमदूत उसे बालों से पकड़ कर बैठा हुआ है, जब वह जान को निकाल कर ले जाएगा तो उस समय स्त्री, पुत्र, भाई, पिता आदि कोई भी मददगार साबित नहीं होगा। मेरा दिल लोभ-लालच के बुरे विचारों में दिन-रात ग्रसित रहता है। मेरा इस प्रकार का हाल है कि मैंने कभी भी कोई शुभ कार्य नहीं किया है। मेरे जैसा मन्दभागी, चुगलखोर, कमीना, आलसी, मन्दबुद्धि व ढीठ अन्य कोई नहीं है। यह कहता है नानक तुम्हारे दासों के दास की चरण धूल बन जाऊँ।

इस सारे प्रसंग को 300 पन्नों के लेख में अंकित किया गया है। आगे लिखता है कि काजी रुकुनुद्दीन जी को इस समय जुमे की रात महीना साल हिजरी 917 को वसाल प्राप्त हुआ भाव अन्त हुआ। उसकी तासीर वही जानते हैं। हजरत गुरू नानक देव जी ने अपना अंगूठा धोने के लिए (चरण पाहुल के लिए) जब आगे किया तो काजी साहिब ने उसे चूस लिया और फिर धोने लग पड़ा। इसके बाद काजी रुकुनुद्दीन की समाधि लग गई। मैंने उठाने का यत्न किया लेकिन हुजूर ने मना कर दिया 'इसे रंग में रंग रहने दो।' श्री गुरू नानक देव जी की फेरी के बाद रुकुनुद्दीन जो कि परमात्मा के रंग में रंगे गए थे, परमात्मा के रंग में मस्त रहने लग पड़े तथा सिमरन करने लग पड़े। पर्वत की कन्दराओं में आप एकान्त में रसास्वादन करते रहते थे। जब अमीर मक्का को खबर हुई कि रुकुनुद्दीन ने नानक शाह को अपना मुरशद कबूल कर लिया है तो मौलानाओं ने उसे काफिर का फतवा दे दिया है। उसे तपस्या करते हुए को कन्दराओं में से बाहर निकाल कर लाया गया और उसे फतवे सुनाए गए।

1) वह स्वयं काफिर है और उसका मुर्शिद नानक शाह फकीर भी काफिर है।

2) 30 कोड़े मारने की सजा और 11 दिन भूखे प्यासे को कोठी में बन्द किया जाए।

3) उसके खवेश कबीले को देश निकाला दिया जाए। (ये लोग तीराह और अफगानिस्तान की पहाड़ियों में अब तक रह रहे हैं)

4) उसकी तमाम जायदाद जब्त कर ली जाए

5) मुँह काला करके मक्के में घुमाया जाए

6) उल्टा करके टांगा जाए

7) रेत में गले तक दबाकर संगसार (पत्थर मार-मार कर मार डालना) किया जाए। रुकुनुद्दीन जी, जेठ की गर्मी में सारी सजाओं को भुगतते हुए अडोल रहे और जब उन्हें जमीन में से निकाला जाता तो उनके रोम-रोम में से सत्य करतार की आवाज आती।

आखिर बाइसवें दिन जमीन में दबाकर संगसार करने का फतवा लगाया गया। रुकुनुद्दीन इलाही मस्ती में मग्न रहे और सिमरन जारी रहा।

अन्त में बाइसवें दिन शाह मक्का ने अन्तिम ब्यानों को कलमबन्द करने का हुक्म दिया और कलम-दवात मगवाई। रुकुनुद्दीन जी की सुरति टूटी, जब उसने देखा तो उसे अपने मुरशद के वचन याद आ गए कि 'जो कुछ तुमने अनुभव किया है तुम उसी का प्रचार करना।' इससे अच्छा समय क्या हो सकता था। वहाँ पर मक्का के सभी लोग एकत्र थे सबके सामने उसने अपना यह ब्यान दर्ज करवाया 'रुबानीआ खतीबा अल इमामै हजरत (गुरू) नानक मा, अलकामेहू इना हम फीहे मुसले मून' भावार्थ मेरा परमात्मा मेरा दीन इमाम नानक ही है जो सबसे बड़ी कलम व किताब का मालिक है। तहिकीम गोस नानक देव को मानने वाला हूँ। यदि तुम भी मुक्ति के चाहवान हो तो फिर नानक की शरण में आ जाना। जो इस बात को बिचारेगा वह स्वर्ग लोक में चला जाएगा। यह कहकर उसने अपने शरीर का परित्याग कर दिया। जो लोग पत्थरों की झोलियाँ भर कर लाए थे कि वे रुकुनुद्दीन को मारेंगे उनके पत्थर उन्हीं के पैरों पर गिर पड़े। इस समय उपस्थित सज्जनों में से बहुत सारे गुरू नानक पर अपने विश्वास को ले आए। अभी तक बुद्ध कबीले के लोग, जो कि बहुत ही शेर दिल हैं, गुरू नानक नाम लेवा की अंश है। मक्का तथा बैतूल क्षेत्र में सिक्ख ही रहते हैं जो कि जटाजूट हैं। जो चोगा पेश किया था, उसके ऊपर कुछ कुरान की आयतें तथा हुजूर बाबा जी की स्तुति लिखी हुई थी, पांच सेर खजूर तथा शहद भेंट किया था। दूसरा चोगा कारुं हामिद, जो उस समय अरब के साथ लगने वाले मिश्र के क्षेत्र का बादशाह था, द्वारा भेंट किया गया था। उसके ऊपर भी अरबी में लिखा हुआ था। डेरा बाबा नानक वाला इन्हीं में से एक था। अरब वाले चोगे की निशानी यह थी कि उसके ऊपर 'ला हिलाइला अलासुबहान काआनीकुन से मिन जालमीन।' (पूजा करने योग्य परमात्मा ही केवल है जो कि मेरे जैसे पापी पर भी कृपा करने वाला है) लिखा हुआ था।

अल हमदुल इल लाहे कबुल आलमीन

### अलरहिमानु रहीम मालिके योमुदीन।

मक्का से विदा होने के समय प्रेमियों ने वियोग का बड़ा दुख प्रकट किया, ताजदीन ऐसा लिखते हैं। गुरु साहिब नानकशाह ने अपना यादगारी आसा प्रदान किया और कहा-

आसा मन फजले रबीना दीदारुन फीरे  
हका रु वसिरा तुल मुसतकीम।

इस आसा को ईश्वरीय अनुकम्पा जानना, इसमें से परमात्मा के दर्शनों का मार्ग दिखाई पड़ेगा। इसलिए नानक नाम लेवा इसे निजात देने वाला समझते हैं।

मक्के की पश्चिमी तरफ तीन हुजरे (कोठे) (1) सुल्तान बाहू, 2) बाबा फरीद, 3) गुरु नानक शाह फकीर का बताए जाते हैं।

मक्का के पास में अमरा शहर के पेशवा इमाम जाफर के पुत्र जनाब इमाम गुलाम कादर का उद्धार किया। आपने प्रेम के कारण अपनी निजी मस्जिद गुरु नानक शाह के प्रचार के लिए दान कर दी जो कि आज तक मस्जिद वली हिन्द के तौर पर प्रसिद्ध है। शहरवासियों को एक अन्य मस्जिद बनानी पड़ी।

मदीना - मक्का से उठकर आप मदीना जा पहुँचे। इधर हजरत मोहम्मद साहिब का मजार तथा उनके खड़ाऊँ कब्र समेत आमद का हिल कर इजहार किया। आपने यहाँ पर बैठकर कीर्तन करना शुरू कर दिया और इस प्रकार से उच्चारण किया 'नीहुंम हफत चहार दा ह सलासा व रूबाया' (अरबी)

भावार्थ नौखण्ड सातद्वीप चौदह लोक तीन गुणों वाले हैं, हिन्दू मत के अनुसार जीवों के जीवन को चार भागों में बाँट दिया है। खुदा एक है जिसका कोई शरीक नहीं है।

जब इस्लामी जगत ने कीर्तन की आवाज सुनी तो वे सब भी हजरत मोहम्मद साहिब के मजार पर पहुँच गए। फिर क्या था, जोश और क्रोध की बाढ़ सी ही आ गई। जिसे जो कुछ भी मिला, वह हाथ में लेकर, उन्हें मारने के लिए दौड़ पड़ा लेकिन मारने के लिए उन्होंने जैसे ही अपने हाथ उठाए तो हाथ उठे ही रह गए। यह देखकर हजरत अली मोहम्मद साहिब के दामाद की सन्तान में जो खलीफा थे, ने कानों में अंगुलियाँ दे लीं। उनकी अंगुलियाँ कानों के साथ ही जुड़ गईं। चार इमाम जाफर सूफी, जमाल दीन तथा कमाल दीन साहिब, शक्ति को देखकर हैरान रह गए। उन्होंने विनती की कि हम लोगों के गुनाह माफ करो तथा जन साधारण पर दया करो। आपको पूर्ण सम्मान मिलेगा। उनकी विनती पर सबको माफ कर दिया गया, फलस्वरूप सबके शरीरों के अंग काम करने

लग पड़े, यहाँ पर आपकी दूसरी खड़ाऊँ निशानी के तौर पर पड़ी है।

भाई गुरदास जी की वार 1, पउड़ी 35, इसी पर आधारित है -

फिरि बाबा गइआ बगदाद नो  
बाहरि जाइ कीआ असथाना॥

इक बाबा अकाल रुप दूजा रबाबी मरदाना॥  
दिती बाँगि निवाजि करि सुनि समानि होआ जहाना॥

सुन मुनि नगरी भई देखि पीर भइआ हैराना॥

वेखै धिआनु लगाइ करि इकु फकीर वडा मसताना॥

पुछिआ फिरि कै दसतगीर

कउण फकीर किस दा घरिहाना॥

नानक कलि विच आइआ रबु फकीरु इको पहिचाना॥

धरति अकाश चहु दिस जाना॥

'चलता'



( पृष्ठ 41 का शेष )

काम-काज में व्यस्त रहने वाला था तथा मृत्यु के भय से भली भाँति भिन्न था तथा भलाई के कार्यों का खोजी था लेकिन पूर्ण तौर से मानसिक शान्ति इसे अभी प्राप्त नहीं हो पाई थी। जब इसे श्री गुरु जी के दर्शन हुए और सत्संग प्राप्त हुए तो इसके मन को अद्भुत मानसिक शान्ति प्राप्त होना शुरू हो गई। इस प्रकार से इसके ऊपर नाम का रंग उत्तरोत्तर बढ़ता ही चला गया और यह एक पूर्ण नाम प्रेमी या नाम रसिक हो गया। श्री गुरु का प्रेम इसके अन्दर ऐसा धँस गया कि वह एक कविता के माध्यम से प्रस्फुटित हो गया। गुरु स्तुति में रचे गए इसके छन्दों में से एक छन्द प्राप्य है, जो कि इस प्रकार से है -

सतिगुर नानक परसिआ सभ पाप बिनासे।

नाम अमोलक पाइआ कारज भइ रासे।

अगम निगम जिस गावते वहि सतिगुर एह।

जिनकी किरपा ते भइओ मै मुक्त संदेह।

क्चा रंग उतारिकै सुभ रंग चड़ाइआ।

सतिगुर नानक दइआ ते अमरापद पाइआ।

इस नगरी में सतिनाम का निशान गुरु जी ने गाड़ दिया। सूजा भक्त की संगत तथा उसकी सन्तान अभी भी वहाँ पर निवास करती है।

'चलता'

रतवाड़ा साहिब में दिनांक 30-31 अक्टूबर तथा 1-2-3 नवम्बर 2019 को हो रहे  
समागम के लिए सवारियों के रूट

मोहाली - महाँपुरुषों के निवास स्थान, कोठी नं: 781, 3बी1 से, जिंमेदार - भाई जरनैल सिंह (89687-22855)

क्षेत्र : धनास/तोगाँ - रूट - तोगाँ, धनौड़ाँ, मसतगड़, मिलख, सारंगपुर, धनास, डूमाजरा जिंमेदार - सुखविंदर सिंह तोगाँ (99151-47405)

क्षेत्र : सूंक, पड़छ - रूट 1. - बगीडी, करौदेवाल, काहीवाला, खोलमोला, कसौली, गूड़ा, माजरी जिंमेदार - हरजिंदर सिंह सरपंच सूंक (94177-78973), रविंदर सिंह सूंक (94642-91318) रूट 2. - सूंक, छोटी, बड़ी पड़छ, सिंगारी वाला, नाडा, खुड्डा लहोरा जिंमेदार - भाई हरजिंदर सिंह लाडी (95928-97195), भाई नाइब सिंह (98726-93380) रूट 3. - ककोराँ छोटी बड़ी, नया गांव, खुड्डा अली शेर, काँसल, कैबवाला जिंमेदार - बलविंदर सिंह काँसल (95929-13093), बलदेव सिंह बाजवा (98151-08168)

क्षेत्र : बलाक माजरी - रूट 1. - सलेमपुर, बरसालपुर ट्परीआँ, लुबाणगड़ह, खिदराबाद, झंडेमाजरा, मरहोली, गुनोमाजरा, सिआलवा माजरी, बलाक तों मुलाँपुर जिंमेदार - गुरजीत सिंह सलेमपुर (99153-35344) लाल सिंह गुनोमाजरा (94175-54759) रूट 2. - मीयाँपुर, अभीपुर, कुबाहेड़ी, संगतपुरा, माणकपुर सरीफ, बूथगढ से मुलाँपुर जिंमेदार - गुरनाम सिंह कुबाहेड़ी, जरनैल सिंह कुबाहेड़ी (98725-82851) रूट 3. - करतारपुर, कंसाला, ढकोराँ खुरद, ढकोराँ कलाँ, बजीदपुर, फाँटवाँ, नगलीयाँ, खैरपुर, सेखपुरा, फतिहगड़ जिंमेदार - दिलबाग सिंह ढकोराँ (95017-01045) मेवा सिंह ढकोराँ, रूट 4. - अभीपुर, दुलवाँ खदरी, पलणपुर, माजरा, होशियारपुर, तकीपुर, पड़ोल जिंमेदार - महिंदर सिंह अभीपुर (98762-17525)

5. इलाका : तिउड़ अते खरड़ - रूट 1. - माता गुजरी नगर, संनी इनकलेव, झुंगीआँ रूट 2. - जंडपुर, ठसका, चंदो, मनाणा, झामपुर रूट 3. - बूस सटैड खरड़, भुखड़ी, रडिआला, भजौली जिंमेवार- भाई सुखविंदर सिंह झुंगीआँ तथा दिलबाग सिंह जंडपुर (98151-66686) रूट 4.- बजहेड़ी, पीर सुहाणा, सिंमलमाजरा, भागोमाजरा, खानपुर जिंमेवार - भाई जसविंदर सिंह तथा भाई सतनाम सिंह पीर सोहाणा रूट 5. - सकरूलाँपुर, घडूआँ, मामूपुर। जिंमेवार - भाई बलविंदर सिंह बजहेड़ी रूट 6. - पंनूआँ, चोलटा खुरद, मलकपुर, बड़ा पिंड, मदनहेड़ी, बड़ाला रोड, खरड़ जिंमेवार - भाई नाजर सिंह पंनूआँ रूट 7. - पोपनिआँ, धड़ाँककला, खुरद, चोलटाकलाँ जिंमेवार - भाई रणजीत सिंह पोपनिआँ रूट 8. - बडाली, बडाला, नवाँ शहर, खरड़। जिंमेवार - भाई अवतार सिंह बडाली रूट 9. - मौजपुर, भागोमाजरा, बोरेपुर, लखनौर। जिंमेवार - भाई रतन सिंह मौजपुर। रूट 10. - बलौगी, बलौगी कलोनी, दाउ। जिंमेवार - भाई त्रिलोचन सिंह रूट 11. - देसूमाजरा, फरतूलापुर, मुंडीखरड़ जिंमेवार-भाई हरभाग सिंह देसूमाजरा। रूट 12. - रसनहेड़ी, मगर, तोलेमाजरा, खूनीमाजरा, संतेमाजरा जिंमेवार - भाई बाबू सिंह मगर रूट 13 - बडमाजरा असथान, जुझार नगर, राएपुर, बहिलोलपुर,

झाँमपुर, तीड़ा

6. इलाका : गुरद्वारा बाउली साहिब (जीरकपुर) - रूट 1. - कुंडी (सैक: 10), रैली, अभैपुर, बुढणपुर, सैकटर 15, सैकटर 7, सकेतड़ी, माड़ी वाला टाउन जिंमेवार - भाई सरवण सिंह ठेकेदार पंचकुला (198151-00644) जगमोहन सिंह रैली (94177-69178) रूट 2. - नाभा साहिब, सिंघपुरा, भूडा, जीरकपुर, भवात जिंमेवार - हरदीप सिंह सिधू जीरकपुर (98557-07279), मनमोहन सिंह (99888-08211) रूट 3. - गु. बाउली साहिब, ढकोली, नगला, सनौली जिंमेवार - जगदेव सिंह ढकोला (99155-21425), सोहण सिंह रंधावा जीरकपुर (95018-04205)

7. इलाका : डेरा बूसी - रूट 1. - जाँडली, अंब छपा, जौला, जौली, मीआँपुर, दंदराला, माहीवाला, डेरा बूसी तौ रतवाड़ा साहिब जिंमेवार - सुरजीत सिंह जाँडली (99140-03114), धरमपाल माहीवाला (99156-73720) रूट 2. - चड़िआला, अमराला, बरौली, कारकौर, सेखपुर, फतिहपुर, महिमदपुर, धनौनी, ईसापुर, जगाधरी वाइआ भाँखरपुर जिंमेवार - अमरीक सिंह महिमदपुर (98725-51816), जगा सिंह कारकौर (94175-78817) रूट 3. - बहोड़ा, बहोड़ी, इबराहीमपुर, परागपुर, जगाधरी, ईसापुर, भाँखरपुर जिंमेवार - जगदीस सिंह इबराहीमपुर (98724-50551), सुरमुख सिंह परागपुर (99140-75996) रूट 4. - डेराबूसी शहिर जिंमेवार - सरूप सिंह डेराबूसी रूट 5. - हसनपुर, लेहली, दपर, जनेतपुर, जवाहरपुर जिंमेवार - राजा सिंह दपर (98140-34381), गुरमेल सिंह जवाहर पुर (98152-31323)

8. इलाका : राजपुरा - रूट 1. - धमोली, गुरद्वारा सिंह सभा राजपुरा, गुरदुआरा जाप साहिब, इसलामपुर जिंमेवार - बहादर सिंह (99886-88953) रूट 2. - पुराणा राजपुरा, गुरद्वारा दूधा धारी, गुरद्वारा बाबा चूहड़ सिंह, गगन चौक जिंमेवार - भरपूर सिंह (94633-27041) रूट 3. - सैदखेड़ी, खराजपुर, गुरु नानक मुहला, गुरु अरजन देव कलोनी जिंमेवार - वलाइत सिंह (94638-91719) रूट 4. - ढीडसा, गंडिआ खेड़ी, खानपुर, रेलू, खंडोली जिंमेवार - बलकार सिंह ढीडसा - 98550-71427 रूट 5. - हरपालपुर, कुथाखेड़ी, खानपुर, भोगला जिंमेवार - बंत सिंह भोगलाँ (88725-91575) रूट 6. - अलूणा, धरमगड़, चंदूआँ जिंमेवार - जिंमेवार - अमीर सिंह (94175-73580) रूट 7. - भेडवाल, खानपुर, झूंगीआँ, उकसी सैणीआँ, पिलखणी जिंमेवार - साधू सिंह (98557-86482)

9. इलाका : घनौर - रूट 1. - बलहेड़ी, सलेमपुर जटाँ, रूड़की, रूड़का, बघौरा, माजरी फकीराँ जिंमेवार - रणजीत सिंह रूड़का (93171-30523), गुरमीत सिंह रूड़का (90235-81296) रूट 2. - घनौर, महिदूदाँ, कामी कलाँ, पिपल मंघौली, फरीदपुर जटाँ, धंदारसी, मरदाँपुर जिंमेवार - हरचंद सिंह घनौर (94175-91649), अमरजीत सिंह मरदाँपुर (98883-63021) रूट 3. - लाछडूकलाँ, चमारू, कामी खुरद, जंड मंघौली, उंटसर, राएपुर, बैलोपुर जिंमेवार - अमरीक सिंह कामी खुरद (98143-24886), दारा सिंह लाछडू (98149-60360) रूट 4. - तेजा, मोहड़ी, भानोखेड़ी, लखनौर साहिब, माजरी, रवालौ, सौडाँ, मटेड़ी जिंमेवार - गुरमीत सिंह भड़ी (93158-66990), जतिंदर सिंह बलाणा (098123-13901) रूट 5. - टिवाणा, सरहाला खुरद, सरहाला कलाँ, कपूरी, सौटा, रामपुर, मारीआँ, लोह सिंबली जिंमेवार - सुबा सिंह टिवाणा (98554-69282), हरमेस सिंह सरपंच सरहाला खुरद (98557-78864) रूट 6. - झाडूआँ, कुरबानपुर, महिमाँ, भड़ी, सूलर, बुलाणा जिंमेवार - जसमेर सिंह कुरबानपुर (97292-15833), गुरमीत सिंह भड़ी (93158-66990) रूट 7. - कोटला, बूता, बूती, करनपुर, मलकपुर जटाँ, मंझौली, हरीपुर झूंगीआँ, कतलाहर, चपड़ जिंमेवार - नसीब सिंह झूंगीआँ

(95925-61804), बलवीर सिंह करनपुर (94179-22972) रूट 8. - भूटमाजरा, सेखूपुर, लोदीपुर, बहादरगढ़, भटेड़ी, रसूलपुर जिंमेवार - हरबंस सिंह भूटमाजरा, लखविंदर सिंह भटेड़ी (99153-83689)

10. इलाका : मोरिंडा - रूट 1. - सिकंदर पुर, नानोवाल, बडवाला, जंवंदे, भटेड़ी, रतनगढ़, दातारपुर जिंमेवार - रजिंदर सिंह जवंदा (99149-22374) हरनेक सिंह दातारपुर (81461-51925) रूट 2. - बडवाली, साहपुर, ताजपुर, बहिलपुर, सुखो माजरा, चलाकी, मोरिंडा जिंमेवार - रणधीर सिंह बहिलबलपुर (92179-52077) रूट 3. - माजरा, कोटली, मानपुर, कजौली, डुमछेड़ी, मोरिंडा जिंमेवार - अजमेर सिंह कोटली (95924-62737) गुरप्रीत सिंह मानपुर रूट 4. - बड़ा समाणा, ओइंद, छोटा समाणा, मुंडीआँ, ढोलणमाजरा जिंमेवार - सुखविंदर सिंह मुंडीआँ (99140-07236) जसविंदर सिंह ढोलणमाजरा (94172-31983) रूट 5. - फतिहपुर, अरनौली, कोटला, बंगीआँ, सहेड़ी जिंमेवार - गुरमीत सिंह बंगीआँ (94172-30673) रणधीर सिंह अरनौली रूट 6. - कार्दैनौर, गोपालपुर, नथलपुर, ढंगराली, रंगीआँ जिंमेवार - रणधीर सिंह अरनौली रूट 7. - लठेड़ी, रामगढ़, चकलाँ, सराणा, कलाराँ, काँजला जिंमेवार - सुखविंदर सिंह मुंडीआँ (94175-87877) मलकीत सिंह चकलाँ (97819-83761)

11. इलाका : चमकौर साहिब - रूट 1. - मनैली, रतों, संधूआँ, सैदपुर, भुरड़े, पिपल माजरा जिंमेवार - जसवंत सिंह संधूआँ (98150-88236), केसर सिंह संधूआँ रूट 2. - चमकौर साहिब, सुलोमाजरा, मुंडीआँ, डहिर, गूगो गंधराव, दुगरी, गधराम, तालापुर, कोटली, साँतपुर, बूरमाजरा, मोरिंडा जिंमेवार - कंवलजीत सिंह (84372-04845), जगीर सिंह रूट 3. - बहिरामपुर बेट, इला, खोखराँ, बजीदपुर, मूकोवाल, बेला जिंमेवार - जोगिंदर सिंह, (94655-30155) सोहन सिंह इला (98781-51896) रूट 4. - फिरोजपुर, मुजाफत, भलिआण, भोजेमाजरा, भैरोंमाजरा, चमकौर साहिब जिंमेवार - मोहन सिंह चमकौर साहिब - 98159-13790 रूट 5. - मकड़ौना कलाँ, मकड़ौना खुरद, सलेमपुर, रोलू माजरा, पिपल माजरा, समरौली, रसूलपुर, मोरिंडा जिंमेवार - सुखविंदर सिंह सलेमपुर (89684-61232) तरनजीत सिंह सलेमपुर रूट 6. - बादेसाँ खुरद, बादेसाँ कलाँ, हवारा कलाँ, चूहड़माजरा, बरसालपुर, रूड़की हीराँ जिंमेवार - उजागर सिंह, बलवीर सिंह (94633-38107) रूट 7. - मकाराँपुर, खानपुर,, हाफिजाबाद, फतिहपुर, चमकौर साहिब जिंमेवार - गुरमुख सिंह (98152-51856) केसर सिंह, महिंदर सिंह

12. इलाका : कुराली - रूट 1. - नथलपुर, ढंगराली, पपराली, बमनाड़ा, भागोवाल, ककराली, धिआनपुरा। जिंमेवार - भाई समितर सिंह पपराली (99144-72499), रूट 2.-भागोवाल, बंन माजरा, सोतल बाबा, झरहेड़ी, अंधरेड़ा, सिंबल, चटोली, निहोलका, चिंतगड़। जिंमेवार - भाई बलजिंदर सिंह सिंबल (88724-85563) रूट 3. - हसनपुर, बरौली, कालेवाल, सिंघपुरा, कुराली जिंमेवार- करम सिंह बरौली (97817-30554, 89685-26212)

13. इलाका : रोपड़ अते परखाली - रूट 1.- कमालपुर, मनसूहा, माहलाँ झूलीआँ, भाउवाल, बुढा भोरा, खैराबाद, फूल खुरद, सामपुरा, छोटी हवेली, बेला चौक, हवेली कलाँ, सरकारी कालज, नवाँ बूस अडा, पुराणा बूस अडा, गुः श्री भूठा साहिब चौक, पावर कलौनी जिंमेवार - भाई राम सिंह छोटी हवेली (94638-63839) गुरदीप सिंह शामपुरा (94651-69982) रूट 2. - घनौली, थरमल पलाँट, नूंहो, रतनपुरा, लोहगड़ फिडे, गुनोमाजरा, लोदीमाजरा, मदोमाजरा, पतिआला, मिआणी,

बहादुरपुर, चंदपुर, डकाला, आलमपुर, कटली, खुआसपुर, पावर कलौनी, रंगीलपुर, वृडी गंधो, राजेमाजरा अते मीआँपुर जिंमेवार-भाई भुपिंदर सिंह घनौली (94174-65785) रूट 3. - ढाँगाँ, बिको, घनौला, थली कलाँ, सिंघपुरा, थलीखुरद, अहिमदपुर, मलकपुर, खुआसपुरा, लाडल, हुसैनपुर, नानकपुरा, पावर कलौनी, पपराला, रैलो जिंमेवार- भाई संत सिंह ढाँगा (94184-95417) भाई पूरन सिंह हुसैनपुर (94170-92492) रूट 4. - कोटला निहंग, ट्परीआँ, गरेवाल, माजरी जूटाँ, मगरोड़, अकबरपुर, बागबाली, फतहिपुर, भगालाँ, पुरखाली, ककौट, बिंदरख, खिजराबाद तथा बलाक जिंमेवार - भाई गुरदास सिंह अते भाई सकंदर सिंह फतहिपुर भंगाला (94171-57781) भाई पाल सिंह फतहिपुरा भंगाला (94780-45864) रूट 5 - गोबिंदपुरा, बंदे माहलाँ, पथरेड़ीआँ, सलौरा, खाबड़े, रेही माजरा, भगवंतपुरा जिंमेवार - भाई बलबीर सिंह गोबिंदपुरा-(81950-41372) रूट 6.- झूलीआँ, बालसंडा, बूरमाजरा, सालापुर, दुलची माजरा, रोड़माजरा, सीहों माजरा जिंमेवार - भाई जसवंत सिंह गोबिंदपुरा (99143-06431) भाई रणजीत सिंह पथरेड़ीआँ-75892-07290 रूट 7 - हिरदापुर खेड़ी, हरीपुर, बामणवाल, बरदार, हरनामपुरा, मीआँपुर, चंगर जिंमेवार - हाकम सिंह बामणवाल (95015-19946) भाई गुरमुख सिंह बरदार (75083-59725) रूट 8. - छोटी गंधो, लखमीपुर, झूलीआँ, माणकमाजरा, ठोणा, पड़ी, मादपुर, सैफलपुर, रामगड़ ट्परीआँ, संतोखगड़ ट्परीआँ, सराड़ी, भूदल जिंमेवार - भाई गुरबचन सिंह सैफलपुर (94783-84471) भाई गुरदेव सिंह छोटी गंधो - (98557-08635) रूट 9 - बुरजवाल, डेकवाला, मंदवाड़ा, काकरो, किशनपुरा, भूपनगर, अकालगड़, खिजराबाद जिंमेवार - भाई बखशीस सिंह काकरो (98721-15995) रूट 10. - काकरो, चैड़ीआ, सिंह, खाबड़िआँ, चकलाँ, लोहारी, बंन माजरा, झंजेड़ी जिंमेवार - भाई रजिंदर सिंह काँकरो (98155-94315) रूट 11. आसरोँ, प्रेमनगर, रैल माजरा, माजरा जटाँ जिंमेवार - भाई हरभजन सिंह, आसरो (78370-89858) भाई काला सिंह प्रेम नगर - 78376-91955) रूट 12 - पनिआली कलाँ, पनिआली खुरद, जमीतगड़, भले फतिहपुर (ताजोवाल), रैपुर, नंगल जिंमेवार - भाई अमरीक सिंह फतिहपुर (ताजोवाल) (94648-21423) भाई रणजीत सिंह पिंड पथरेड़ियाँ (75892-07290)

14. इलाका : खमाणो/रामगड़ - रूट 1. - चंडिआला, राएपुर राईआँ, नानोवाल कलाँ, नानोवाल खुरद, ककराला, मनसूरपुर, अमरगड़, मनैला, धनोला, समसपुर, सिंघाँ, रामगड़, लखनपुर, खमाणों (तिंने) जिंमेवार - भाई जरनैल सिंह, समसपुर (94631-16593) भाई गुरपीत सिंह मनैला 98782-40210 रूट 2. - सुहावी, बुरज, लुहार माजरा, उचा पिंड, पनैचाँ, पोहलोमाजरा जिंमेवार - भाई कुलविंदर सिंह, लोहार माजरा (94172-64725)

15. इलाका : दुआबा - रूट 1. - दुसाँझ, सरहाल मंडी, सरहाल काजीआँ, खानपुर, रसूलपुर, बंगाँ जिंमेवार - भाई जगजीत सिंह चक रामू (88725-37407) गिआनी सुखविंदर सिंह अनमोल (94170-78137) भाई कृपाल सिंह सरहाल मंडी (98150-62173) रणजीत कौर सरहाल काजीआँ - 94784-78013 रूट 2. - बहिराम, फराला, सूढ, संधवाँ, चकरामू जिंमेवार - औस.डी.ओ. अजैब सिंह (01823-270300)

16. इलाका : अबरावाँ/सनेटा - रूट - अबरावाँ, तसौली, ढेलपुर, गडावाँ, सनेटा- जिंमेवार - भाई जोगिंदर सिंह तसौली (98555-01571),

17. इलाका : धमोट - रूट 1. - जिमेवार जथेदार अमर सिंह, धमोट, रूट - 2. - मदनीपुरा, सिहौड़ा, अलूणा प्ला, मिआना। रूट - 3. निजामपुर, भाडेवाल, पाइल, नवाँ पिंड, बीजा जिंमेवार

- भाई हरदीप सिंह

18. इलाका : बलाचौर - रूट 1. - औलीआपुर, कंगणा बेट, मलकपुर, जूटपुर, धैंगड़पुर, सुधा माजरा, सृजोवाल, निआणबेट, जानीवाल, लालपुर, ट्परीआँ, गादड़ीआँ, आकलिआवाँ, रूट 2. - कुलेवाल, महितपुर, गड़ी, राएपुर, घमौर, सिआणा, बलाचौर, मजारी, सिबल माजरा, हुसैनपुर, गरलेढाहा, रकड़ा ढाहा, बछोड़ी, कोलगड़ रूट 3. - मुजफरपुर, रकासन, चलाण, महदीपुर, ताजोवाल, चक, चकली, मझूट, मीरपुर जूटाँ, बीरोवाल जिंमेवार - हरनाम सिंह बलाचौर (94637-40419)

19. अन्य पृथक-पृथक शहरों तथा क्षेत्रों के सम्पर्क नम्बर : - यू.पी. अते उतराखंड - खूबीआ नंगल असथान (96394-41313), भाई प्रीतम सिंह, बिलासपुर (098371-31140) सालापुर असथान (99278-75036) हरभजन सिंह, किछा, (98373-16924) जसवंत सिंह पलीआ (94154-29624) बावा सिंह मैगलगंज (97945-06751) बावा सिंह पंछी फारम, (99184-46336) हरपाल सिंह पंछी फारम (91987-15748) राजसथान - बाबा अमरीक सिंह बूंदी राजसथान 99833-97841 हरिआणा - रणजीत सिंह लाडवा (080531-000930) हरपाल सिंह पाली अंबाला (92157-45482), अंम्रितपाल सिंह बजाज यमुना नगर - (94181-16414) पाउंटा साहिब - बलविंदर सिंह पाउंटा साहिब (97361-00043) माझा - प्रगट सिंह पृटी - (94637-29915) बलजीत सिंह भिखीविंड (98151-25093) प्रमजीत सिंह, खडूर साहिब - (94652-52638) हरजिंदर सिंह फौजी बटाला - (99157-308077) बनूड़ - बाबा गुरदेव सिंह 98151-20373, सुखजीत सिंह (98154-62204) लुधिआणा - बाग सिंह (98143-21418) गुरबाज सिंह (98142-68041) संगरूर - भाई सुखजीत सिंह छाहड़ (98729-18506) पटिआला - सुचा सिंह (97801-30180, 99151-66501) माछीवाड़ा साहिब - गुरनाम सिंह (94645-00600) दिल्ली - प्रमजीत सिंह, (98730-11265) सतपाल सिंह (98104-30517), जगजीत सिंह (92664-03650), बलविंदर सिंह (98991-05205) श्री अनंदपुर साहिब - हरभजन सिंह, नूरपुर बेदी (98145-18602) राम सिंह, नंगल (94178-76243) फरीदकोट - भाई मकखन सिंह 98153-80902, मुंबई - गुरदेव सिंह बाँसल, (98678-77056)

## आवश्यक निवेदन

\* समस्त जिम्मेदार प्रेमीजनों को निवेदन है कि वे अपने-अपने नगरों में गुरमति समागम से तीन दिन पहले घोषणा/सूचित करवाएं तथा संगत को नगर या गाँव में सवारी आने के बारे में बतलाया जाए। सम्बन्धित रूट का जिम्मेदार प्रेमीपुरुष दूध की सम्भाल हेतु एक ड्रम रख ले। \* सम्बन्धित रूट का जिम्मेदार प्रेमी समागम वाले स्थान पर संगत को लाने के बाद ट्रान्सपोर्ट टेंट में प्रबन्धकों को रिपोर्ट करने की कृपा करें। \* जिम्मेदार प्रेमी समागम से पहले सवारियों के लिए आवश्यक बैनर, प्रबन्धकों से प्राप्त कर ले। \* क्षेत्रीय जिम्मेदार प्रेमीजन प्रबन्धकों के साथ मिलकर अपने क्षेत्र में गणमान्य व्यक्तियों को कार्ड (निमन्त्रण पत्र) देने की सेवा करें तथा 20 अक्टूबर के बाद किसी सवारी के द्वारा सूचित करने का प्रबन्ध करें।

समागम के दौरान सवारी सम्बन्धी किसी भी प्रकार की समस्या आने पर निम्नलिखित नम्बरों पर सम्पर्क करें -

भाई रजिन्दर सिंह ईंचार्ज- समागम ट्रान्सपोर्ट दफ्तर रतवाड़ा साहिब - फोन नं. 98155-94315,  
94635-86024

## आवश्यक निवेदन

आत्म मार्ग मैगज़ीन की मेंबरशिप/रिन्यूवल या दसवंद पंजाब एंड सिंध बैंक की किसी भी शाखा द्वारा निम्नलिखित बैंक खातों में भेजी जा सकती है।

### भारत (INDIA)

आत्म मार्ग मैगज़ीन की मेंबरशिप/रिन्यूवल भेजने के लिए -

VGRMCT / Atam Marg Magazine

S/B A/C No. 12861000000003

RTGS/IFSC Code - PSIB0021286

Branch Code - C1286

दसवंद भेजने के लिए -

Vishav Gurmat Roohani Mission Charitable Trust

SB A/C No. 12861100000005

RTGS/IFSC Code - PSIB0021286

Branch Code - C1286

### विदेश (ABROAD)

Vishav Gurmat Roohani Mission Charitable Trust

Punjab National Bank

SB A/C No. 0779000100179603

RTGS/IFSC Code - PUNB0077900

Branch Code - 077900

यदि चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा राशि भेजनी हो तो ऊपरलिखित खातों अनुसार Gurdwara Ishar Parkash Ratwara Sahib, P.O. Mullanpur Garibdas. Distt S.A.S. Nagar (Mohali) - 140901 पर भेजने की कृपा करें। यदि Online राशि भेजनी हो तो राशि की जानकारी देते समय अपना नाम व पूरा पता मोबाइल नं. +91-98889-10777 पर SMS भेजें जी।

### रतवाड़ा साहिब में महापुरुषों के प्रवचनों का कार्यक्रम

प्रत्येक रविवार रतवाड़ा साहिब - 12.00 बजे से 3.30 बजे तक

प्रकाश पर्व श्री गुरु नानक देव जी, पूर्णमाशी - 12 नवम्बर, दिन मंगलवार। ( 12.00 बजे से 3.30 बजे तक )

मंघरि, संक्रान्ति - 16 नवम्बर, दिन शनिवार। ( प्रातः 5.30 बजे से 8.00 बजे तक )

अमृत संचार - 1-2 नवम्बर को वार्षिक समागम के समय।

### INTERNET MEDIA AND LIVE TELECAST

Website : [www.ratwarasahib.in](http://www.ratwarasahib.in)

Website : [www.ratwarasahib.org](http://www.ratwarasahib.org)

Instagram : RATWARA SAHIB (<https://instagram.com/ratwara.sahib/>)

You Tube : <https://www.youtube.com/user/babalakhbirsingh>

Facebook : <https://www.facebook.com/ratwarasahib1>

Twitter : <https://mobile.twitter.com/ratwarasahib13>

Live Audio Link 1 - [https://www.awdio.com/Ratwara Sahib](https://www.awdio.com/Ratwara%20Sahib)

Live Audio Link 2 - <https://mixlr.com/ratwara-sahib>

E-mail :- [sratwarasahib.in@gmail.com](mailto:sratwarasahib.in@gmail.com)

Contact - 9569455861, 9417912900, 9814612900

## विश्व गुरुमत रूहानी मिशन चैरिटेबल ट्रस्ट

के मुख्य संस्थापक प्यारे महापुरुष सन्त बाबा वरियाम सिंह जी द्वारा लिखित व प्रकाशित पुस्तकें

यह पुस्तकें श्री गुरु ग्रन्थ साहब जी के गूढ़ सिद्धान्तों को सरल रूप में स्पष्ट करके जिज्ञासुओं के समक्ष प्रस्तुत करती हैं। इनकी विषय वस्तु के रूप में नाम, सेवा व स्मरण की विधियों को प्रस्तुत करते हुए जन साधारण की भाषा का अत्यन्त सरल, मार्मिक व हृदयस्पर्शी प्रयोग किया गया है। यह दुर्लभ पुस्तकें, प्रत्येक जिज्ञासु व साधक के लिए एक अमूल्य निधि के रूप में हैं। अध्यात्मिक सुख व शान्ति प्राप्त करने हेतु आप इन्हें प्राप्त करके स्वयं पढ़ें तथा अन्य श्रद्धालुजनों को भी पढ़ने के लिए प्रेरित करें। यह सभी पुस्तकें गुरुद्वारा ईशर प्रकाश रतवाड़ा साहब में आपकी सेवार्थ उपलब्ध हैं -

हिन्दी		English Version	Price
1. सुरति शब्द मार्ग	70/-	1. Baisakhi	Rs. 5/-
2. किव कुड़ै तुटै पालि	35/-	2. How Rend The Veil of Untruth	Rs. 70/-
3. बात अगम की - सात भागों में	400/-	C. Discourses on the Beyond -1	Rs 50/-
4. किव सचिआरा होइए - भाग पहला	35/-	4. Discourses on the Beyond -2	Rs. 50/-
5. किव सचिआरा होइए - भाग दूसरा	65/-	5. Discourses on the Beyond -3	Rs. 50/-
6. किव सचिआरा होइए - भाग तीसरा	100/-	6. Discourses on the Beyond -4	Rs. 60/-
7. होवै आनन्द घणा	30/-	7. Discourses on the Beyond -5	Rs. 60/-
8. बाबाणियाँ कहानियाँ	50/-	8. The way to the imperceptible	Rs. 80/-
9. सुरतिआं उपजै चाउ	40/-	9. The Lights Immortal	Rs. 20/-
10. सर्व प्रिय गुरु गोबिंद सिंह जी	10/-	10. Transcendental Bliss	Rs. 70/-
11. भक्त प्रहलाद	10/-	11. How to Know Thy Real Self-(Vol-1)	Rs. 80/-
12. अमृत फुहार	10/-	12. How to Know Thy Real Self-(Vol-2)	Rs. 80/-
13. अगम अगोचर का मार्ग	70/-	13. How to Know Thy Real Self-(Vol-3)	Rs. 110/-
14. जपुजी साहिब सटीक	15/-	14. The Dawn of Khalsa Ideals	Rs. 10/-
15. अमर ज्योतियाँ	15/-	15. A Glimpse of His Holiness - Baba ji	Rs. 5/-
16. अमर गाथा	100/-	16. Divine Word Contemplation Path	Rs. 150/-
17. वैशाखी	10/-	17. The Story of Immortality	Rs. 260/-
18. साजन चले प्यारिआ	10/-	18. Why not Contemplate the Lord	Rs. 200/-
19. अविनाशी ज्योति - भाग 1	90/-		
20. रूहानी गुलदस्ता	70/-		
21. चउथै पहरि सबाह कै	60/-		

ऊपरलिखित पुस्तकें आप जी मनीआर्डर, चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा रतवाड़ा साहिब से मंगवा सकते हैं या ट्रस्ट के अकाउंट में राशि जमा करवा कर मोबाइल नं. 9417214391, 9592009106, 9417214379 पर सूचित कर सकते हैं। **Bank Name : Pb & Sind Bank, A/c Name. VGRMCT/Atam Marg Magazine, S/B A/C No. 12861000000003, RTGS/IFSC Code - PSIB0021286, Branch Code - C1286**

# The Ideology of Guru Nanak

Kharak Singh

The teachings of Guru Nanak are enshrined in his *bani*, and find demonstration in his life. The *bani* deals with every aspect of life, individual as well as collective, and provides guidance in all situations. The Guru's views constitute a comprehensive system of religious beliefs and practices, which covers both spiritual as well as material or temporal aspects of human activity. It rejects dichotomy of life which views the two aspects as incompatible. The Guru also treats the world as real and not as an illusion, as preached by some earlier religious teachers of the east. Also, the Guru does not share the belief that the world is a place of suffering and that birth or life is a punishment for evil deeds of previous births. On the contrary, he considers human life as a rare opportunity to meet the Lord and enjoy His blessings, and the world as a 'dharamsal' to practise dharma (noble deeds).

Major elements that distinguish the Guru's system from other religious systems and give it a distinct identity, are:

The concept of God; Meta-physics; Nature of the World; Views on Life; Goal of Life; The Spiritual Discipline; Role of a Mystic after Achievement of Enlightenment; Attitude towards Social and Political Life.

The above issues find a comprehensive treatment in the *bani* enshrined in the 1430 pages of *Guru Granth Sahib*. The views expressed therein are very briefly reproduced in the following paragraphs:

## The Concept of God

The Guru's creedal statement (*Mul Mantra*) with which *Guru Granth Sahib* opens, lists some of the major attributes of God: "The Sole One, Self-existent and Immanent, the Creator Person, Without Fear, Without Enmity, the Timeless One, the Unincarnated, Self-created and Enlightener." **ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ॥ (ਅੰਗ - 1)** The Guru is uncom-promisingly mono-theistic, and does not recognise any other gods or goddesses, saying, "My God is only One. He is the only One." **ਸਾਹਿਬ ਮੇਰਾ ਏਕੋ ਹੈ॥ ਏਕੋ ਹੈ ਭਾਈ ਏਕੋ ਹੈ॥ (ਅੰਗ - 350)** Brother, He is the only One. God never takes birth, and does not change with time. The theory of incarnation of God is not only rejected, but condemned. The universe is His creation. It is not His emanation, nor is it identical with Him.

## Transcendent and Immanent

God is transcendent, i.e., existing apart from and not subject to the limitations of the material universe. He is also immanent (present within or throughout) in His creation. Even before creation He permeated the void'. **ਆਦਿ ਕਉ ਬਿਸਮਾਦੁ ਬੀਚਾਰੁ ਕਬੀਅਲੇ ਸੁੰਨ ਨਿਰੰਤਰਿ ਵਾਸੁ ਲੀਆ॥ (ਅੰਗ - 940)** He is not subject to limitations of time and space. Nobody can define His limits. He is Infinite, Unfathomable, Unknowable, Ineffable and Immeasurable by human faculties of thought and perception. Ecstatic

over His greatness and indescribable beauty, the Guru simply exclaims 'Waheguru' or the 'Wondrous Lord'."

The Guru frequently refers to the immanence of God, or His Will that directs the universe. It is also described as the 'Sabad', the Word, which informs the universe, or Naam that not only creates the universe, but also sustains it and governs it:

"God. creates the universe, takes His abode in it and sustains it." ਆਪਿ ਖੜੋਵਹਿ ਆਪਿ ਕਰਿ ਆਪੀਣੈ ਆਪਾਹੁ॥ (ਅੰਗ - 788)

- "He that permeates all hearts, is transcendent, too." ਸਭ ਕੈ ਮਧਿ ਅਲਿਪਤੋ ਰਹੈ॥ (ਅੰਗ - 294)

- "He pervades the body, and is yet detached." ਕਾਇਆ ਅੰਦਰਿ ਆਪਿ ਵਸਿ ਰਹਿਆ ਆਪੇ ਰਸ ਭੋਗੀ॥ ਆਪਿ ਅਤੀਤੁ ਅਲਿਪਤੁ ਹੈ ਨਿਰਜੋਗੁ ਹਰਿ ਜੋਗੀ॥ (ਅੰਗ - 514)

- "He is in the midst of all, and is yet distinct." ਘਟਿ ਘਟਿ ਗੁਪਤਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੁਕਤਾ॥ (ਅੰਗ - 939)

- "Having created the world, He stands in the midst of it, and is separate too." ਜੰਤ ਉਪਾਇ ਵਿਚਿ ਪਾਇਅਨੁ ਕਰਤਾ ਅਲਗੁ ਅਪਾਹੁ॥ (ਅੰਗ - 937)

God's immanence indicates that He loves His Creation also, while it gives relevance, authenticity, direction and sanction to the entire moral and spiritual fabric of man and his values. It also explains God's capacity for revelation and indicates His nearness to man, and an abiding interest in the world.

## God has Attributes

God has been described as the "Ocean of attributes, values and virtues." He has been addressed in the bani as Father,

Mother, Brother, Enlightener, Protector, Shelter of the shelterless, with all the love and benevolence attending these relationships. ਤੂੰ ਮੇਰਾ ਪਿਤਾ ਤੂੰ ਹੈ ਮੇਰਾ ਮਾਤਾ॥ ਤੂੰ ਮੇਰਾ ਬੰਧੁ ਤੂੰ ਮੇਰਾ ਭ੍ਰਾਤਾ॥ ਤੂੰ ਮੇਰਾ ਰਾਖਾ ਸਭਨੀ ਥਾਈ ਤਾ ਭਉ ਕੇਹਾ ਕਾੜਾ ਜੀਉ॥ (ਅੰਗ - 103) "He is referred to as Helper of the poor and the weak, as well as Destroyer of the evil." ਦੈਤ ਸੰਘਾਰਿ ਸੰਤ ਨਿਸਤਾਰੇ॥ (ਅੰਗ - 224) He is also described as Succour of the succourless, Eyes to the blind, Riches to the poor, and an Ocean of virtues. ਅੰਧੁਲੇ ਟਿਕ ਨਿਰਧਨ ਧਨੁ ਪਾਇਓ ਪ੍ਰਭ ਨਾਨਕ ਅਨਿਕ ਗੁਨੀ॥ (ਅੰਗ - 830)

## God has a Will

God's Will is also referred to as hukam or raza in the Guru's bani. Everything happens within the ambit of His Will." ਹੁਕਮੈ ਅੰਦਰਿ ਸਭੁ ਕੋ ਬਾਹਰਿ ਹੁਕਮ ਨ ਕੋਇ॥ (ਅੰਗ - 1) His Will is altruistic and is exercised to give the world an aim, so that it moves in an orderly manner. This shows His love and benevolence for man and the universe.

## God's Grace is Limitless

In Gurbani, God has been called gracious. It has been repeatedly mentioned that all final approval of man is an act of God's Grace. "O Nanak, intellect alone is of no avail; one is approved only by His Grace." ਨਾਨਕ ਮਤੀ ਮਿਥਿਆ ਕਰਮੁ ਸਚਾ ਨੀਸਾਣੁ॥ (ਅੰਗ - 467) His grace is limitless and He is ever willing to shower it on those who aspire to it. God's Will is free and is not subject to any empirical laws, applicable to the empirical world.

## God has a Personality

Guru Granth Sahib refers to God as a Person, and not as a vague concept or a law.

In the hymn *So Purukh* (That Person) God is described as a Person, pure, fathomless and limitless. ਸੌ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਹਰਿ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਹਰਿ ਅਗਮਾ ਅਗਮ ਅਪਾਰਾ ॥ (ਅੰਗ - 15) Attributes like Will, Freedom, Grace, etc., can exist only in a personality. The emphasis on prayer and love towards God in almost all the hymns of the *Guru Granth Sahib* also means that God is a Being with a Personality to whom prayer can be addressed, and devotion and love expressed. However, this personality aspect of God is not to be conceived in anthropomorphic terms or confused with the limited personality of man, who is only a finite being in a becoming universe.

## Metaphysics

Unlike some other Indian systems, like *Yoga*, *Sankhya* and *Jainism* which believe in two kinds of Reality, material and spiritual, the Guru's religion believes strictly in only One Reality, God. The theology of Sikhism is monotheistic: Hymns quoted earlier clearly show the Creator-creation relationship between the One Sole God and His creation – man. "The universe is not accepted as His emanation or extension. God is not the material cause of the world. Nor is separate and independent existence of matter accepted in any form. ... The Guru has clearly emphasized the transcendental character of God by saying that the world was created in time and space. The transcendental God has been there even while the world was uncreated and God's immanent character was unexpressed. The expression of *Naam* was prior to the creation of the Universe. "God manifested Himself into *Naam* and, at the second place, the world was created. Settling in it, He beheld it in joy." ਆਪੀਨੈ ਆਪੁ ਸਾਜਿਓ ਆਪੀਨੈ ਰਚਿਓ ਨਾਉ ॥ ਦੁਯੀ ਕੁਦਰਤਿ

ਸਾਜੀਐ ਕਰਿ ਆਸਣੁ ਡਿਠੋ ਚਾਉ ॥ (ਅੰਗ - 16)

## Nature of The World

Unlike earlier religious traditions in India which believed the world to be illusory, the Guru holds that the world is real. There are numerous verses in the *Guru Granth Sahib* to affirm this belief. Some of these may be reproduced below:

- "True is He, True is His creation." ਆਪਿ ਸਤਿ ਕੀਆ ਸਭੁ ਸਤਿ ॥ (ਅੰਗ - 294);

"True are Thy worlds and Thy universes, True are the forms Thou createst. True are Thy deeds..... This world is the abode of the True One: He resides in it."

ਸਚੇ ਤੇਰੇ ਖੰਡ ਸਚੇ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ॥ ਸਚੇ ਤੇਰੇ ਲੋਅ ਸਚੇ ਆਕਾਰ ॥ ਸਚੇ ਤੇਰੇ ਕਰਣੇ ਸਰਬ ਬੀਚਾਰ ॥ ਸਚੀ ਤੇਰੀ ਕੁਦਰਤਿ ਸਚੇ ਪਾਤਿਸਾਹ ॥ ਇਹੁ ਜਗੁ ਸਚੈ ਕੀ ਹੈ ਕੋਠੜੀ ਸਚੇ ਕਾ ਵਿਚਿ ਵਾਸ ॥ ਅੰਗ - 463)

"The body is the temple of God, created by Himself. Within it He resides." ਕਾਇਆ ਹਰਿ ਮੰਦਰੁ ਹਰਿ ਆਪਿ ਸਵਾਰੇ। ਤਿਸੁ ਵਿਚਿ ਹਰਿ ਜੀਉ ਵਸੈ ਮੁਰਾਰੇ ॥ (ਅੰਗ - 1059)

"Nanak, the whole world is in bloom like a garden." ਨਾਨਕ ਫੁਲਾ ਸੰਦੀ ਵਾੜਿ ਖਿੜਿਆ ਹਭੁ ਸੰਸਾਰੁ ਜਿਉ ॥ (ਅੰਗ - 1095)

Not only the earth, everything on it is a blessing by God. "Human birth is a precious privilege." ਮਾਣਸ ਜਨਮੁ ਦੁਲੰਭੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਇਆ ॥ (ਅੰਗ - 751)

"Earth is the true abode of righteousness." ਹੁਕਮੇ ਧਰਤੀ ਸਾਜੀਅਨੁ ਸਚੀ ਧਰਮਸਾਲਾ। (ਅੰਗ - 785)

"Body is the horse on which one rides to God." ਦੇਹ ਘੋੜੀ ਜੀ ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਰਾਮ (ਅੰਗ - 576)

These verses and many more in *Guru Granth Sahib* affirm the view that the world is not an illusion; it is real.

## View on Life

While some religious systems, particularly the ascetic ones, view life as a bondage, a suffering or a punishment for past sins, the Guru takes an opposite view. Human life is regarded as an opportunity to meet the Lord. **ਭਈ ਪਰਾਪਤਿ ਮਾਨੁਖ ਦੇਹੁਗੀਆ॥ ਗੋਬਿੰਦ ਮਿਲਣ ਕੀ ਇਹ ਤੇਰੀ ਬਰੀਆ॥ (ਅੰਗ - 12)**

It is an opportunity to do noble deeds which form the basis for final assessment. It has been repeatedly stressed that human birth is extremely rare and may not be available again, and that it should not be allowed to go in vain. **ਮਾਨਸ ਜਨਮੁ ਅਮੋਲਕੁ ਪਾਇਓ ਬਿਰਥਾ ਕਾਹਿ ਗਵਾਵਉ॥ (ਅੰਗ - 219)**

## Goal of Life

In the *Guru Granth Sahib*, the following doctrines have been repeatedly emphasized:

a) Righteous deeds are the basis of final assessment of man. "Deeds determine whether one is close to or far from God." **ਕਰਮੀ ਆਪੋ ਆਪਣੀ ਕੇ ਨੇੜੇ ਕੇ ਦੂਰਿ॥ (ਅੰਗ - 8)**

"With God, only the deeds one does in this world, count." **ਫਰੀਦਾ ਅਮਲ ਜਿ ਕੀਤੇ ਦੁਨੀ ਵਿਚਿ ਦਰਗਹ ਆਏ ਕੰਮਿ॥ (ਅੰਗ - 1383)**

b) Mere knowledge (*gyan*) of Truth is not enough, it has to be practised in life. "Truth is higher than everything. Higher still is truthful living". **ਸਚਹੁ ਓਰੈ ਸਭੁ ਕੋ ਉਪਰਿ ਸਚੁ ਆਚਾਰੁ॥ (ਅੰਗ - 62)**

c) To the specific question: "How to become a *sachiara* and how to demolish the dividing wall of falsehood," the Guru answers: "By carrying out the Will of God." **ਕਿਵ ਸਚਿਆਰਾ ਹੋਈਐ ਕਿਵ ਕੂੜੈ ਤੁਟੈ ਪਾਲਿ॥ (ਅੰਗ - 1)**

d) Man is born self-centered. He suffers from *haumain* (ego). His activities, under its influence, are the cause of all evils, social or individual. One should shed *haumain* to become a *gurmukh* or a God-centered person with a new consciousness inculcating all the virtues attributed to God.

e) Link with *Naam*: There is so much emphasis on *Naam* in Gurbani, that Sikh religion is often called *Naam Marg*. *Naam* expresses God Himself in His immanent form. "He reaches the highest state whom God benevolently yokes to His *Naam*." **ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਜਿਸੁ ਆਪਣੈ ਨਾਮਿ ਲਾਏ॥ ਨਾਨਕ ਚਉਥੇ ਪਦ ਮਹਿ ਸੌ ਜਨੁ ਗਤਿ ਪਾਏ॥ (ਅੰਗ - 284)**

Hence the prayer, "Pray, link me to God." **ਕੋਈ ਜਨੁ ਹਰਿ ਸਿਉ ਦੇਵੈ ਜੋਰਿ॥ (ਅੰਗ - 701)**

From the above, it should be clear that the ideal or goal of man should be to become a *sachiara* (abode of truth) or *gurmukh* (the ideal man), imbued with *Naam*, attuned to His Will, carrying it out as His instrument. Since His Will is creative and altruistic, the *gurmukh* engages continuously in altruistic deeds and service of his fellow beings. Liberating himself from *haumain*, he proceeds to liberate others likewise. **ਆਪੁ ਮੁਕਤੁ ਮੁਕਤੁ ਕਰੈ ਸੰਸਾਰੁ॥ (ਅੰਗ - 295)** This is all out of love for His lotus feet." **ਰਾਜੁ ਨ ਚਾਹਉ ਮੁਕਤਿ ਨ ਚਾਹਉ ਮਨਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਚਰਨ ਕਮਲਾਰੇ॥ (ਅੰਗ - 534)**

The Guru also does not seek or prescribe as a goal, merger with God in the sense of *nirvan*, which involves loss of identity and amounts to anti-creative annihilation or a kind of spiritual suicide.

To sum up, the *gurmukh*, according to the Guru, has the following characteristics :

a) He is godly and has all His virtues,

and no *haumain*

b) He carries out God's Will, as His instrument.

c) He is the servant of God and man.

d) He participates actively in all fields of life.

e) He aims at making all others God-oriented.

## The Spiritual Discipline (Methodology)

In the discipline prescribed for attaining the status of *gurmukh*, the Guru lays stress on company of God-oriented persons (*sadh sangat*), moral life and service of man, besides prayer and remembrance of God. This discipline is to be practised not as an ascetic, but while leading a normal householder's life. In fact, asceticism is decried as escapism and parasitism. He says:

"Others, incapable of earning a living, get ears slit like Yogis;

Practise mendicancy, losing their caste respect.

One claiming to be a religious teacher, and going out to beg,

Touch not his feet ever.

Those that eat the bread of their labour

And gives away something in charity,

Saith Nanak, truly recognize the way."

ਮਖਟੁ ਹੋਇ ਕੈ ਕੰਨ ਪੜਾਏ॥ ਫਕਰੁ ਕਰੇ ਹੋਰੁ  
ਜਾਤਿ ਗਵਾਏ॥ ਗੁਰੁ ਪੀਰੁ ਸਦਾਏ ਮੰਗਣ ਜਾਇ॥  
ਤਾ ਕੈ ਮੂਲਿ ਨ ਲਗੀਐ ਪਾਇ॥ ਘਾਲਿ ਖਾਇ ਕਿਛੁ  
ਹਬਹੁ ਦੇਇ॥ ਨਾਨਕ ਰਾਹੁ ਪਛਾਣਹਿ ਸੇਇ॥ (ਅੰਗ -  
1245)

The popular formula *Naam Japo, Kirat Karo, Vand Chhako* conveys the essence of

the Guru's discipline. *Naam Japna* includes, meditation in early ambrosial hours of the morning, recitation of *nitnem banis*, listening to and/or participation in *Gurbani kirtan*, and remembering God all the time. In fact, it amounts to living in the consciousness of His presence. That however would be difficult on a hungry stomach. One must also engage in productive work (*Kirt Karo*) to earn a living to meet the requirements of life. The Guru's followers are also enjoined to attend to the needs of others around them. Hence the edict, *Vand Chhako*.

Similarly, *Naam Daan Ishnan* is another common expression or a household phrase among followers of the Guru. While *Naam* refers to constant remembrance of God, *Daan* means charity or altruistic deeds, and *Ishnan* signifies purity of body and mind through moral conduct.

Company (*sangat*) of a *gurmukh* is of inestimable value in the spiritual effort of man, to serve as a model and guide, and to provide constant inspiration and strength. "Just as castor plant imbibes the fragrance of the *chandan* tree in the latter's company, the fallen are emancipated in the company of saints." ਜਿਉ ਚੰਦਨ ਨਿਕਟਿ ਵਸੈ ਹਿਰਛੁ ਬਪੁੜਾ ਤਿਉ ਸਤਸੰਗਤਿ ਮਿਲਿ ਪਤਿਤ ਪਰਵਾਣੁ॥ (ਅੰਗ - 861)

Exemplary truthful and moral conduct is an indispensable constituent of the discipline for spiritual progress. Truth is indeed rated very high. "Higher still, however", says Guru Nanak, "is truthful living". *Guru Granth Sahib* is replete with tips on morality of the highest level. A seeker never inflicts pain on others. His guiding forces are love and spirit of service and sacrifice.

The seeker must remember that while the above discipline is necessary, the

ultimate blessing will come from His Grace, when one sheds one's ego. He must, therefore, constantly pray in all humility as a part of the discipline.

## Role of An Enlightened person

According to the Guru's theory of evolution, the life of a *Sikh* is a march from the *manmukh* (self-centred) stage to *gurmukh* (God-centred) stage. The *gurmukh*, through practice of the prescribed discipline, attains liberation in this very life (*Jiwan mukta*). His role, however, is not over, as would be the case if one aspires for *moksha* or *nirvaan*. The ideal for the Guru's followers is 'Liberation for oneself and liberation for all. ਆਪਿ ਮੁਕਤੁ ਮੁਕਤੁ ਕਰੈ ਸੰਸਾਰੁ ॥ (ਅੰਗ - 295)

So the *gurmukh*, the mystic on the Guru's path, continues his altruistic activities in the service of humanity.

"Brother! the Master by a particle of the *Naam* for millions brings liberation." ਗੁਰਮੁਖਿ ਕੋਟਿ ਉਧਾਰਦਾ ਭਾਈ ਦੇ ਨਾਵੈ ਏਕ ਕਣੀ ॥ (ਅੰਗ - 608)

## Attitude towards Social and Political Life

The Guru is not concerned with the individual alone. His concern covers the society as a whole. Based on the gospel preached by him, Guru Nanak founded a settlement towards the end of his mission, at Kartarpur, which was open to all, and in which everybody worked and ate together. This provided a model for corporate living. However, people oppressed under the rigours of the caste system, alien rule, and religious bigotry, could not be expected to take over the social responsibilities and adjust to the liberation offered in the new society, overnight. This infant society had to be

nurtured for some time, and it had to spread geographically. So the Guru introduced the system of succession under which nine succeeding Gurus carried the mission forward up to the time when Guru Gobind Singh created the *Khalsa*, and declared the *Granth Sahib* as Guru for all times to come.

## Some Special Features of the Guru's System

Besides the above, there are some other features and values in the Guru's system that need to be highlighted. Sikhism is a life-affirming faith with a positive attitude towards the world. It is a religion of activism, noble actions and altruistic deeds. It is a religion of hope and optimism with rich traditions of *Charhdi Kala* or ever-rising spirits. Pacifism and pessimism have no place in the Guru's thought. Sikh discipline is a conscious effort to live in harmony with nature and to carry out the altruistic Divine Will. Some special features of the Guru's system are:

### Universalism

Guru Nanak's teachings are universal in the broadest sense. These are applicable and valid in all situations - social, political or geographical, and at all times. Stress is only on lasting or eternal values, with freedom to adjust to change in environment within the framework of Laws of nature or Lord's *Hukam*.

### Brotherhood of Mankind

The Guru preached that there is one Father: We are all His children." Guru Gobind Singh also, later affirmed: "Recognise ye, all mankind as one race." Thus, there is no place for casteism in the Guru's value system, like *Khattris*, *Brahmins*, *Shudras*, or

*Vaishas*. All are subject to the same religious discipline, and are equally entitled to pursuit of religion and liberation. There are no privileged classes, nations or races, or chosen ones' on the basis of birth. This is a corollary of the doctrine of Fatherhood of God.

## Equality and Justice

Equality is only a corollary of the doctrine of universal brotherhood. No discrimination is therefore, permitted, on the basis of caste, colour, creed, or gender. Gurus' follower is enjoined to defend justice even with his life, if necessary. Exploitation in any form, religious, political, social or economic, is condemned. The institutions of *dharamsal*, *sangat* and *pangat*, introduced by the Guru to ensure perfect equality, are firmly established among followers of the Guru.

## Freedom

Guru Nanak demolished all barriers in the way of progress of man, whether these were social, political, or religious. Later Guru Gobind Singh also reaffirmed these freedoms at the time of the creation of the *Khalsa*, through his Nash doctrine:

- i) Dharam Nash: freedom from restrictions of the *varan-ashram dharma*.
- ii) Karam Nash: freedom from rituals of Karam-Kand
- iii) Bharam Nash : freedom from superstition.
- iv) Kul Nash: freedom from vanity or limitations associated with birth or lineage.
- v) Krit Nash: freedom from restrictions connected with choice of occupation.

## Life-Affirmation

In contrast to earlier life-negating systems, the Guru preached a positive approach to life aimed at a full and balanced development of the individual as well as society.

"Through the Master is the way of living perfected,

And in a life of smiling playfulness

And enjoyment of wear and food, Is attained liberation."

ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰਿ ਭੇਟਿਐ ਪੂਰੀ ਹੋਵੈ ਜੁਗਤਿ ॥  
ਹਸੰਦਿਆ ਖੇਲੰਦਿਆ ਪੈਨੰਦਿਆ ਖਾਵੰਦਿਆ ਵਿਚੇ ਹੋਵੈ  
ਮੁਕਤਿ ॥ (ਅੰਗ - 522)

Again,

"My self ! in joy abide by endeavouring  
And working in the way of God).

By meditation obtain union with the Lord.

Thus, saith Nanak, shall thy anxiety be removed."

ਉਦਮੁ ਕਰੇਦਿਆ ਜੀਉ ਤੂੰ ਕਮਾਵਦਿਆ ਸੁਖ  
ਭੰਚੁ ॥ ਧਿਆਇਦਿਆ ਤੂੰ ਪ੍ਰਭੁ ਮਿਲੁ ਨਾਨਕ ਉਤਰੀ  
ਚਿੰਤ ॥ (ਅੰਗ - 522)

## Miri-Piri

The Gurus' religion is a whole life religion, and aims at full and balanced development of the individual as well as society physically, mentally, morally and spiritually. The Guru rejects the dichotomy of spiritual (*piri*) and temporal (*miri*) life, and stresses the primacy of spiritual values in temporal activities. Later on Guru Hargobind reaffirmed the above principle and to implement it established the institution of *Akal Takht*.

## Status of Women

The Guru's concept of equality for women is absolute. How can she be considered inferior, when she gives birth to kings?" He asks. He elaborates: "From woman is man born, inside her is he conceived; To woman is man engaged, and woman he marries. With woman is man's companion-ship. From woman originate new generations. Should woman die, is another sought; By woman's help is man kept in restraint. Why revile her of whom are born great ones of the earth? From woman is born woman, no human being without woman is born." Saith Nanak: The holy Eternal alone with woman can dispense. The tongue by which is the Lord praised, is fortunate and rendered beautiful. Saith Nanak: Such a face in the court Divine is found radiant.

ਭੰਡਿ ਜੰਮੀਐ ਭੰਡਿ ਨਿੰਮੀਐ ਭੰਡਿ ਮੰਗਣੁ  
ਵੀਆਹੁ॥ ਭੰਡਹੁ ਹੋਵੈ ਦੋਸਤੀ ਬੰਡਹੁ ਚਲੈ ਰਾਹੁ॥  
ਭੰਡੁ ਮੁਆ ਭੰਡੁ ਭਾਲੀਐ ਭੰਡਿ ਹੋਵੈ ਬੰਧਾਨੁ॥ ਸੋ  
ਕਿਉ ਮੰਦਾ ਆਖੀਐ ਜਿਤੁ ਜੰਮਹਿ ਰਾਜਾਨ॥ ਭੰਡਹੁ  
ਹੀ ਭੰਡੁ ਉਪਜੈ ਭੰਡੈ ਬਾਝੁ ਨ ਕੋਇ॥ ਨਾਨਕ ਭੰਡੈ  
ਬਾਹਰਾ ਏਕੋ ਸਚਾ ਸੋਇ॥ ਜਿਤੁ ਮੁਖਿ ਸਦਾ ਸਾਲਾਹੀਐ  
ਭਾਗਾ ਰਤੀ ਚਾਰਿ॥ ਨਾਨਕ ਤੇ ਮੁਖ ਉਜਲੈ ਤਿਤੁ  
ਸਚੈ ਦਰਬਾਰਿ॥ (ਅੰਗ - 473)

## Dignity, Self-respect, and Honour

Life is a great gift of God. It should not be debased. It should be lived with honour. Says the Guru about a person without honour:

- "Such a one, if alive, in ignominy lives;

All his gains are illegitimate."

ਜੇ ਜੀਵੈ ਪਤਿ ਲਥੀ ਜਾਇ॥ ਸਭੁ ਹਰਾਮੁ ਜੇਤਾ  
ਕਿਛੁ ਖਾਇ॥ (ਅੰਗ - 142)

"What is the value of worship without honour; Self-restraint without purity, And the sacred thread without continence?"

ਪਤਿ ਵਿਣੁ ਪੂਜਾ ਸਤ ਵਿਣੁ ਸੰਜਮੁ ਜਤ ਵਿਣੁ  
ਕਾਹੇ ਜਨੇਉ॥ (ਅੰਗ - 903)

## Oecumenism

The Guru claims no exclusive authority to liberation, Guru Amar Das, the third Master prays to the Lord:

"The world is aflame. Shower Thy Grace,

And save it through whatever door it be possible. "

ਜਗਤੁ ਜਲੰਦਾ ਰਖਿ ਲੈ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ॥  
ਜਿਤੁ ਦੁਆਰੈ ਉਬਰੈ ਤਿਤੈ ਲੈਹੁ ਉਬਾਰਿ॥ (ਅੰਗ -  
853)

The Guru recognises that there could be different doors for entry into God's Court/Kingdom. He does not claim for himself or his system any exclusive privilege in this respect. Anybody who follows the spirit of true religion, can earn His closeness. Label or the Name of one's denomination does not matter. One's deeds will decide one's acceptance or rejection in His Court. Multi-culturalism is inherent in Sikh values. Sikhs do not merely tolerate other cultures and religious traditions, they have genuine respect for them.

## Summary

There is only One God, who created the universe, which, like Him, is infinite and real, and not an illusion. He is benevolent and loving Father of all human beings, who are all, therefore, equal. No discrimination on the basis of caste, colour, creed, nationality, gender, etc., is justified. All human beings are considered a universal brotherhood under the Fatherhood of God. The goal of life is to become a *gurmukh/sachiara*, who is to linked

(Contd. on P. 70)

# Eternal Relevance of the Guru's Ideology

*Kharak Singh*

Basically, the Guru's teachings lay stress on love. In fact, the Guru views life as a 'game of love and says, "If the game of love excites you, enter my lane with your head on your palm. And if required, do not hesitate to sacrifice it." This rules out injustice, aggression or usurpation of rights of other people, which the Guru strictly prohibits, saying, 'what belongs to others is like pork to a Muslim and beef to a Hindu.' He preached brotherhood of entire mankind with God as Father, so that all are equal as brothers and sisters. There are no high or low on grounds of caste, creed, race or gender in the eyes of God. In fact, the Guru identified himself with the 'lowliest of lowly', for the 'Lord showers His grace where the lowly are looked after.'

These are the basic values essential for peace and harmonious relationship among individuals, societies, nations or peoples belonging to different civilizations. The Guru found these values missing during his times. Hatred, intolerance, aggression and injustice were at their height. Invasions from across the northwest borders were a regular feature. The Indian people were completely demoralized and emaciated. They lost all hopes. It is amazing that in such an environment, the Guru rose above all this, and preached love as panacea of all ills. Equally amazing, he undertook such extensive travels and managed to sell his message not only in the Indian sub-continent, but far beyond its frontiers, establishing

sangats wherever he went. In his own lifetime, he had become a legend, and when he finally settled at Kartarpur, people flocked around him to listen to and follow his message of love, equality, service and sacrifice. He had initiated the movement, which he made sure would continue. The malady was deep rooted and could not be cured in a day. Eventually however, after a prolonged struggle and tremendous sacrifices, the Guru's dream materialized, and the followers of the Guru succeeded in establishing in the north of India, the *Sarkar-i-Khalsa*, as a model of secular state, in which all communities shared power and responsibility, and enjoyed equal rights, peace and prosperity, for a period of nearly half a century. The bliss, however, did not last longer, and ended when the Guru's values were forgotten, showing again that these were indispensable for enduring peace and progress.

## International Scenario

Peace has eluded mankind ever since the dawn of history or even earlier. The twentieth century we have just left behind, witnessed two world wars. Huntington', a political scientist and Professor at Harvard University, who has made comprehensive study of the prevailing world situation, says:

"World War I was the 'war to end wars' and to make the world safe for democracy. World War II, as Franklin Roosevelt put it would end the system of unilateral action,

the exclusive alliances, the balances of power, and all the other expedients that have been tried for centuries – and have failed. Instead we will have a universal organization' of 'peace-loving Nations' and the beginnings of a 'permanent structure of peace.' World War I, however, generated communism, fascism, and the reversal of a century-old trend toward democracy. World War II produced a Cold War that was truly global. The illusion of harmony at the end of that Cold War was soon dissipated by the multiplication of ethnic conflicts and ethnic cleansing, the breakdown of law and order, the emergence of new patterns of alliance and conflict among states, the resurgence of neo-communist and neo-fascist movements, intensification of religious fundamentalism, the end of the 'diplomacy of smiles and policy of yes in Russia's relations with the West, the inability of the United Nations and the United States to suppress bloody local conflicts, and increasing assertiveness of a rising China. In the five years after the Berlin wall came down, the word 'genocide' was heard far more often than in any five years of the Cold War. The one harmonious world paradigm is clearly far too divorced from reality to be a useful guide to the post-Cold War world."

In the present changed environment, culture appears to play a dominant role in determination of relationships. "In the post-Cold War world, states increasingly define their interests in civilizational terms. They cooperate with and ally themselves with states with similar or common culture and are more often in conflict with countries of different culture... .."

A "global war involving the core states of the world's major civilizations is highly

improbable, but not impossible. Such a war, we have suggested, could come about from the escalation of fault line wars between groups from different civilizations, most likely involving Muslims on one side and non-Muslims on the other."

"At the micro level, the most violent fault lines are between Jem and its Orthodox, Hindu, African, and Western Christian neighbours. At the macro level, the dominant division is between the West and the Rest'."

Should, unfortunately, such an escalation trigger a conflict between two civilizations, it will surely engulf the whole world, and with the huge stocks of nuclear weapons available with major powers, the outcome will be catastrophic. Mankind may be completely annihilated, marking the end of its history.

### Role of Religion

To put an end to clashes between religions, some well-wishers of humanity would like a common universal religion or a global civilization to emerge. Prof Ninian Smart, pioneer in the field of secular religious studies, says:

"So long as humans are brought up in different paths, so they will see the world differently, and for each path some things will seem natural and right and others not. But the paths cross. We can benefit from that. Social justice, which Marxists struggle for; human freedom, which liberals emphasise; love of God and fellow humans, which Christianity preaches; brotherhood, which Islam promotes calm and mysticism, which go with Buddhism; devotion and pluralism, which Hinduism points to;

harmony with nature, which Taoism commends; the cultivation of interpersonal behaviour, which is a lesson from Confucianism; holism in life, which we find in Africa: finding meaning through suffering, which Judaism has had to emphasise; the importance of inner sincerity, which we find among the Sikhs: these and many other spiritual and moral values are not of course mutually incompatible. In that respect, though we may not achieve a global religion, we may achieve a global civilization in which values from the great traditions are woven together in a glittering net. Perhaps it will turn out like the jewel net of Indra, of which Hua-yen so eloquently speaks: each stone reflecting every other."

This pious wish, however, is unlikely to be fulfilled at least in the foreseeable future. No faithful follower of a religion will shed his belief in his own religion in favour of any new syncretic system. What is required is respect for other religious systems side by side with faith in one's own, or a philosophy of multiculturalism.

This is exactly what Guru Nanak preached. Although his system includes all the elements of a universal religion listed by Ninian Smart, the Guru never called for conversion. He laid emphasis only on the basic values and firmly held that no label of a religious denomination or rituals prescribed by it, can lead to salvation. The salvation of an individual as well as the human race can only come from an understanding of God's Will and carrying it out in life. God is the Creator. He is immanent in the universe. He is the Father of us all. He is benevolent and looks after and loves His creation. In fact, He is all love,

and it is through love alone, that He can be realised. One's love for God can be expressed only through altruistic deeds in the service of mankind.

## Inter-Faith Movement

The movement was, infact, started by Guru Nanak, when he set out on his famous *udasis*. His avowed aim was dialogue with different schools of thought and to bring about an understanding among them. The recent initiative on the part of some leaders of different faiths, should, therefore, be regarded as a revival of the Guru's movement, and given every encouragement. Care should, however, be taken, that politicians in the garb of religious leaders, do not take over the movement, with the clever intention of hegemony of any one particular religion. The aim should be a better understanding of and respect for all faiths, and to highlight the fact that the aim of any true religion is, as it ought to be, to bring about the Kingdom of God on earth, in which everybody breathes the air of freedom, justice and equality. The Guru calls it *Sarbat da Bhala* (peace and prosperity for all). Let us adopt this slogan.

## Terrorism

Although terrorism has always been a part of history of mankind, it has assumed serious proportions in the recent times. The threat of terrorism looms large all the time, almost everywhere. Innumerable innocent lives have been lost. Billions of dollars are being spent on anti-terrorism measures, without success. Tension is mounting and people, particularly leaders, are having sleepless nights. Nobody feels secure, since terrorism has reached the human bomb stage,

against which no defence appears possible. Rajiv Gandhi, a former Prime Minister of India, and Beant Singh, a former Chief Minister of Punjab fell victims to human bombs. The memory of the destruction of the New York Trade Towers continues to shake the world. The Iraq war was the result of fear of terrorism.

Terrorism does not come from individuals or small groups functioning underground alone. State terrorism is also very much there, causing much more destruction. Not infrequently, it is the cause of individual or group terrorism.

It must be realized that terrorism cannot be controlled with terrorism. It demands a radical treatment. The cause or causes which lead to terrorism, must be identified and removed. Almost always, it is the result of injustice and the tendency of the stronger individuals or parties or governments towards undue domination, which leaves no other option for the affected weaker groups, except desperate acts of terrorism.

The basic cause of terrorism is always injustice or usurpation of others' rights, which is strictly forbidden, in Guru Nanak's system. He says, "Usurpation of rights of others is forbidden as pork to Muslims and beef to Hindus. The Guru or the pirs will come to your rescue only if you shun the carrion of greed."

So if we are serious about putting an end to terrorism, let us heed the Guru's warning and put an end to injustice, the real cause. That is the only way to ensure peace and tranquility in the world or to bring about the Kingdom of God on earth.

To sum up, the things have not changed much from the times of Guru Nanak. We

notice the same prejudices, mistrust, hatred, intolerance and strife. Only the methods have changed and the scale of operations has become much bigger, engulfing the whole world, so that the threat of total destruction is real. Guru Nanak's panacea of love and tolerance worked in his times. Guru Nanak stood between two warring communities. Both listened to him and claimed him. He is here even today. His message is relevant, and will always be.

---

(... continued from P. 66)

spiritually to God and achieves liberation in this life itself, and not any heaven or paradise after death. This can be achieved through noble deeds and service of mankind, and not through asceticism or monasticism. In practice, it means a life as a householder, following the trinity *Kirt Karo, Vand Chhako, and Naam Japo*. Side by side, one must be prepared to fight injustice and tyranny, and not invoke doctrines like ahimsa to evade one's responsibilities. The Guru calls life as a 'game of love', and beckons his followers thus:

"Shouldst thou seek to engage in the game of love,

Step into my street with thy head placed on thy palm;

While on to this stepping,

Ungrudgingly sacrifice your head."

ਜਉ ਤਉ ਪ੍ਰੇਮ ਖੇਲਣ ਕਾ ਚਾਉ ॥ ਸਿਰੁ ਧਰਿ  
ਤਲੀ ਗਲੀ ਮੇਰੀ ਆਉ ॥ ਇਤੁ ਮਾਰਗਿ ਪੈਰੁ ਧਰੀਜੈ ।  
ਸਿਰੁ ਦੀਜੈ ਕਾਣਿ ਨ ਕੀਜੈ ॥ (ਅੰਗ - 1412)



# Creation of Universe

## Philosophy of Guru Nanak Dev Ji

S. Baljeet Singh  
Email: baljeets1402@gmail.com

The Earth, Moon, Sun and billions and billions of stars have baffled the mankind since ages. Human beings have tried to find answers to the questions such as, how big is the universe? How many stars are there? Who created the universe? How and when the universe came into existence? Scholars, philosophers, scientists and spiritual persons have tried to unfold the mystery, giving different, sometimes conflicting versions. There have been illogical and vague explanations as well, but, nevertheless the mystery remained, inspite of various facts which came to the knowledge of mankind.

Different religions have also come out with various explanations/theories, as here under:

In Christianity, as per the 'Old testaments', God brings the Universe into being in a series of creative acts over six days and places the first man and woman (Adam and Eve) in a divine garden (the garden of Eden). However, main line Protestants and Catholic Church, reconcile modern science with their faith in Creation through forms of theistic evolution, which holds that God purposefully created through the laws of nature and accept the evolution.

Hinduism includes a range of viewpoints about the origin of life, creationism and evolution. There is no single

theory of creation due to dynamic diversity of Hinduism and these are derived from various sources like Vedas, Puranas and other religious books. Brahma is considered creator God in Hinduism, as per the 'Puranas'. However, the mythology which is widely accepted in Hinduism could not withstand the modern scientific research.

Islam believes that the Universe, including humanity, was directly created by God as explained in the 'Quran'. The creation myths in the 'Quran' are vague and allow for wider range of interpretations.

According to Buddhism, the Universe has no ultimate beginning to it and thus sees no need for a creator God.

Jainism believes that the Universe has always existed and will always exist. It is regulated by cosmic laws and kept going by its own energy processes.

However, all these theories and declarations came crumbling down with modern day scientific research.

Scientifically, the most acceptable theory so far has been, the Big Bang Theory. A Belgium priest Georges Lemaitre, in the year 1927 came out with a highly logical & scientific explanation regarding creation of the Universe. According to him, around 13.8 billion years ago our Universe was a

singularity, which in normal parlance can be said to be an infinitely dense mass of matter. Then all of a sudden, there was an explosion. Moments after explosion the temperature of the expanded Universe, as we see now, was expected to be billions of degrees. Ever since, the Universe has been expanding and cooling down. Just after the explosion, the Universe was dense plasma. Even if a human being wanted to look inside of the dense plasma, it would not have been possible to do so. Slowly, as the Universe expanded and cooled, fundamental particles combined. Some of the energy from within our Universe slowly started to convert into matter. Much later, when the Universe's temperature sufficiently cooled, we had hydrogen, helium form. Hence, while the Big Bang happened more than 13 billion years ago, matter started to form much later. Further, the Universe continues to expand at different speeds in different directions even today.

Now, we would attempt to throw some light what Guru Nanak Dev has said on the subject; through Gurbani. Before we dwell on what the Guru Nanak has said, it is pertinent to mention that Gurbani is 'revealed', not an outcome of thought process. Moreover Guru Nanak himself penned it, to ensure that the truth is passed on to the humanity without being altered in the time to come. The following Gurbani quotes vividly, logically, scientifically and beautifully explains the concept:

ਅਰਬਦ ਨਰਬਦ ਧੁੰਧੁਕਾਰਾ॥ ਧਰਣਿ ਨ ਗਗਨਾ ਹੁਕਮੁ  
ਅਪਾਰਾ॥ ਨਾ ਦਿਨੁ ਰੈਨਿ ਨ ਚੰਦੁ ਨ ਸੂਰਜੁ ਸੁੰਨ  
ਸਮਾਧਿ ਲਗਾਇਦਾ॥ ਅੰਗ - 1035

For endless eons, there was only utter darkness. There was no earth or sky; there

was only the infinite Command of His Hukam. There was no day or night, no moon or sun; God sat in primal, profound Samaadhi.

ਸਾਚੇ ਤੇ ਪਵਨਾ ਭਇਆ ਪਵਨੈ ਤੇ ਜਲੁ ਹੋਇ॥ ਜਲੁ  
ਤੇ ਤ੍ਰਿਭਵਣੁ ਸਾਜਿਆ ਘਟਿ ਘਟਿ ਜੋਤਿ ਸਮੋਇ॥  
ਅੰਗ - 19

From the True Lord came the air, and from the air came water. From water, He created the three worlds; in each and every heart He has infused His Light.

ਆਪੀਨੈ ਆਪੁ ਸਾਜਿਓ ਆਪੀਨੈ ਰਚਿਓ ਨਾਉ॥  
ਦੁਯੀ ਕੁਦਰਤਿ ਸਾਜੀਐ ਕਰਿ ਆਸਣੁ ਡਿਠੋ  
ਚਾਉ॥ ਅੰਗ - 463

He Himself created Himself; He Himself assumed His Name. Secondly, He fashioned the creation; seated within the creation, He beholds it with delight.

ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਸਭ ਉਪਾਈ ਜੀ ਤੁਧੁ ਆਪੇ  
ਸਿਰਜਿ ਸਭ ਗੋਈ॥ ਅੰਗ - 11

You Yourself created the entire universe, and having fashioned it, You Yourself shall destroy it all.

ਜੁਗ ਥਕੀਹ ਕੀਓ ਗੁਬਾਰਾ॥ ਤੂ ਆਪੇ ਜਾਣਹਿ  
ਸਿਰਜਣਹਾਰਾ॥ ਹੋਰ ਕਿਆ ਕੋ ਕਹੈ ਕਿ ਆਖਿ ਵਖਾਣੈ  
ਤੂ ਆਪੇ ਕੀਮਤਿ ਪਾਇਦਾ॥ ਓਅੰਕਾਰਿ ਸਭ ਸ੍ਰਿਸਟਿ  
ਉਪਾਈ॥ ਸਭੁ ਖੇਲੁ ਤਮਾਸਾ ਤੇਰੀ ਵਡਿਆਈ॥  
ਅੰਗ - 1061

For thirty-six ages, utter darkness prevailed. Only You Yourself know this, O Creator Lord. What can anyone else say? What can anyone explain? Only You Yourself can estimate Your worth. The One Universal Creator created the entire Universe. All the plays and dramas are to Your glory and greatness.

ਆਪਿ ਸਤਿ ਕੀਆ ਸਭੁ ਸਤਿ॥ ਤਿਸੁ ਪ੍ਰਭ ਤੇ ਸਗਲੀ  
ਉਤਪਤਿ॥ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਕਰੇ ਬਿਸਥਾਰੁ॥ ਤਿਸੁ  
ਭਾਵੈ ਤਾ ਏਕੰਕਾਰੁ॥ ਅੰਗ - 294

He Himself is True, and all that He has made is True. The entire creation came from God. As it pleases Him, He creates the expanse. As it pleases Him, He becomes the One and Only again.

ਕੀਤਾ ਪਸਾਉ ਏਕੋ ਕਵਾਉ ॥  
ਤਿਸ ਤੇ ਹੋਏ ਲਖ ਦਰੀਆਉ ॥ ਅੰਗ - 3

You created the vast expanse of the Universe with One Word! Hundreds of thousands of rivers began to flow.

ਆਪੇ ਕਾਰਣੁ ਕਰਤਾ ਕਰੇ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਦੇਖੇ ਆਪਿ  
ਉਪਾਇ ॥ ਸਭ ਏਕੋ ਇਕੁ ਵਰਤਦਾ ਅਲਖੁ ਨ ਲਖਿਆ  
ਜਾਇ ॥ ਅੰਗ - 37

The Creator Himself created the Creation; He produced the Universe, and He Himself watches over it. The One and Only Lord is pervading and permeating all. The Unseen cannot be seen.

ਬਿਤਿ ਵਾਰੁ ਨਾ ਜੋਗੀ ਜਾਣੈ ਰੁਤਿ ਮਾਹੁ ਨਾ ਕੋਈ ॥  
ਜਾ ਕਰਤਾ ਸਿਰਠੀ ਕਉ ਸਾਜੇ ਆਪੇ ਜਾਣੈ ਸੋਈ ॥  
ਅੰਗ - 4

The day and the date are not known to the Yogis, nor is the month or the season. The Creator who created this creation-only He Himself knows.

ਹੁਕਮੀ ਹੋਵਨਿ ਆਕਾਰ ਹੁਕਮੁ ਨ ਕਹਿਆ ਜਾਈ ॥  
ਅੰਗ - 1

By His Command, bodies are created; His Command cannot be described.

ਜਾ ਤਿਸੁ ਭਾਣਾ ਤਾ ਜਗਤੁ ਉਪਾਇਆ ॥  
ਬਾਬੁ ਕਲਾ ਆਡਾਣੁ ਰਹਾਇਆ ॥ ਅੰਗ - 1036

When He so willed, He created the world. Without any supporting power, He sustained the universe.

ਇਹੁ ਜਗੁ ਆਪਿ ਉਪਾਇਓਨੁ ਕਰਿ ਚੋਜ ਵਿਡਾਨੁ ॥  
ਅੰਗ - 786

He Himself created this world, and staged this wondrous play.

ਕਈ ਕੋਟਿ ਸਸੀਅਰ ਸੂਰ ਨਖਯਤੁ ॥ ਅੰਗ - 275

Many millions are the moons, suns and stars.

ਕਈ ਕੋਟਿ ਅਕਾਸ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ॥ ਅੰਗ - 276

Many millions are the etheric skies and the solar systems.

ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਪੈ ਕੀਤਾ ਆਕਾਰੁ ॥  
ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਪੈ ਪਾਰਾਵਾਰੁ ॥ ਅੰਗ - 5

The limits of the created universe cannot be perceived. Its limits here and beyond cannot be perceived.

The above are some of the quotes from Gurbani which lucidly, logically, scientifically and in a highly convincing way describe creation of Universe. Billions of years ago, God sat in primal, profound Samadhi and there was no day or night, no moon or Sun, no Earth or Sky; and there was complete darkness. It was only his infinite command.

An endless mass of gases and energy paved way for the billions of stars & billions of galaxies, billions of years ago; says Guru Nanak in the Gurbani. This vast expanse of the Universe was created with one word- 'ONKAR'. No one except the God Himself knows about the creation. He fashioned the creation and seated Himself in it. It was His own will and only He knows about it. Scientist all over the world are still struggling to unfold the mysteries, which have been so clearly explained in the Gurbani, by Guru Nanak.

This is the ultimate knowledge and the highest truth. The need of the hour is to spread this message of Guru Nanak to the entire mankind.



## The Discourse of Sant Ji - Part 3

Sant Waryam Singh Ji

(Continued from P. 77, issue Oct., 2019)

This Nam has infinite power. No one in the world can know its full value. In this Name are concentrated all the super natural powers. These powers of the occult are eager to be willing slaves of the man in whose heart dwells the Name Divine of God, they willingly put all their services at his disposal, but the man of God does not covet them and does not even eye them casually. Because Occult is the last of the deluding and captivating powers of the world of *Maya*, which has the power to entice and trap the seekers of the Divine who want to rise from the mundane spheres of the phenomenal world to the Timeless sphere of the Infinite. These powers have been condemned as a curse by the great Gurus. Whereas the devotee of the Nam has been praised and applauded. Therefore, my beloved friend! we do not require any silver or gold. You keep this recipe for making gold to yourself. The *Yogi* was averse to listen to such words and did not make any effort to understand these words of the *Sadhu*. There and then and in no time by using some chemicals like mercury and tin he made some silver, he went to the market and sold the silver, and tried to offer the money realised from its sale at the feet of the great man, Budhu Shah. The great soul stopped him and said, we accept only that money that has been earned by the sweat of the brow of the giver. Only the tithe, the tenth part of the earning made

by one's physical labour can fructify. That ascetic wrote down the formula on a piece of paper and asked Buddhu Shah to guard the secret formula well. Sant Buddhu Shah made him to put that formula in the almirah; he paid no special heed to it, nor did he lock that almirah; nor did he conceal it anywhere. That ascetic, after urging Buddhu Shah to keep the formula under lock and key, departed. After he had hardly covered a couple of miles, an idea struck him lest that valuable formula should fall into wrong hands; and this one man produce silver and spend it on vices & sinful enjoyments. So he came back to the great Sant Buddhu Shah. He found that the almirah where the silver making formula was kept was unlocked and open. So he approached the great saint and after pointing out the worth of that formula, appealed to him to take very good care of that. At that time Sant Buddhu Shah was engaged in service of sweeping the outer part of the Gurdwara. He guessed the money-making ability of that ascetic. In order to break his cupidity for money, Buddhu Shah said, O Beloved one, kindly bring me one brick from the heap lying there. Accordingly the *sadhu* removed one brick and when he carefully looked at it, he noticed that the brick was all gold. He was totally surprised at the thought that such a very costly thing had been carelessly kept over the heap of bricks. It is valued at thousands and lakhs of rupees. Sant Buddhu Shah took that gold brick and told the ascetic, if you

don't mind the labour, kindly get me four or five bricks from the heap. As he approached the heap he was wonder-struck to notice that the whole heap consisted of shining gold bricks. As he looked at the Gurdwara his wonder knew no bounds when he noticed that whole building was made of gold bricks, which sparkled with bright yellow sheen in the light of the setting sunshine. He fell at the feet of the great man (Buddhu Shah) and said. Great sir, I was filled with pride at my possessing the formula to convert baser metal into silver. Today I have come to my senses and have realised that it is only God's Name as you have mentioned which is beyond, any value. No one can describe the greatness of its worth, it is invaluable. Kindly bestow on me the gift of that *Nam* and let me live in the shadow of your feet.

Such great souls were blessed with the stock of unending patience in their heart. As *Guru Maharaj* has ordained :

*The knower of God has even patience, like the earth, which one man digs and another smears with sandal.*

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੇ ਧੀਰਜੁ ਏਕ॥

ਜਿਉ ਬਸੁਧਾ ਕੋਉ ਖੋਦੈ ਕੋਉ ਚੰਦਨ ਲੇਪ॥

ਅੰਗ - 272

Keeping in mind, the way-farers who passed that way, Buddhu raised a small hut at the road-crossing and set up a *tandoor* (oven to bake chapatis), to run a *langar* always. For the needy way-farers he prepared the food and served it to them. One day some proud Moghul soldier came there and shouted, O Buddhu, bring the dinner for us. With all love, he served *chapatis* and vegetables to the guest. On one chapati, there was a slight burn, due to overbaking. He shouted at the top of his voice, you have brought me burnt chapati. Don't you know

who I am? Saying so, he gave a sharp slap on the cheek of Buddu Shah. Buddhu Shah turned the other cheek to him and submitted, Khan Sahib, I am very deficient in wisdom; hence my mother gave me the name of Buddhu. Do teach me some wisdom.' The soldier gave another slap on Buddhu's other cheek, with his other hand and also hit him with his leg with all his force. Buddhu once again prepared the food with all care and made him eat it. After partaking of food, the soldier rode on his horse and went away. He hardly had traversed a distance of 100 yards when his horse went berserk; he fell down from his horse and fractured his thigh bone, and he shouted for help. Hearing his hue and cry, Buddhu Shah reached there, carrying a bed on his head. With the help of one or two volunteers, he was made to lie on the bed, and Buddhu Shah took the trouble of calling a bone setter from somewhere. He got his thigh bandaged and with love served him for many months at a stretch. When he was cured, he felt deeply repentant over his misbehaviour. Before departing from there, the soldier said, O godly mendicant, I have received the punishment for my misdeed, but I will broadcast one fact in the world, namely that the *sadhus* of Guru Nanak's faith are pure angels; for them all are dear and no one is stranger. Their hearts are pure without any thought of revenge. Their hearts shine bright like the sun. From today onward, I will give all respect to the disciples of Guru nanak. You have taught me a lesson of good sense.

Thus there are many instances in the lives of countless saints to show that the saints never forsake their cool (patience), even if the arrogant and proud treat them with ill will and malice. It is ordained

thus :

*Cool is not the moon-god,  
Nor is cool the white sandal tree.  
Cold is not the winter-season.  
O Nanak, cool are only the friendly saints.*  
ਨਹ ਸੀਤਲੰ ਚੰਦ੍ਰ ਦੇਵਹ ਨਹ ਸੀਤਲੰ ਬਾਵਨ  
ਚੰਦਨਹ॥  
ਨਹ ਸੀਤਲੰ ਸੀਤ ਰੁਤੇਣ ਨਾਨਕ ਸੀਤਲੰ ਸਾਧ  
ਸੁਜਨਹ॥ ਅੰਗ - 1357

Therefore Guru Maharaj has ordained that we should keep company with such saints, as are strangers to jealousy and attachment. Keeping company with such persons whose contact produces attachment and animosity, who mislead the world with false preachings for the fulfillment of their selfish ends, is completely forbidden by Guru Maharaj :

*True is the society of those, in whose company, the Name is meditated upon.  
Nanak, associate not with those, who have their own self-interest.*

ਸਚੀ ਬੈਸਕ ਤਿਨਾ ਸੰਗਿ ਜਿਨ ਸੰਗਿ ਜਪੀਐ  
ਨਾਉ॥  
ਤਿਨ ਸੰਗਿ ਸੰਗੁ ਨ ਕੀਚਈ ਨਾਨਕ ਜਿਨਾ  
ਆਪਣਾ ਸੁਆਉ॥ ਅੰਗ - 520

But such noble saints are extremely rare. One meets such men of God, only when one's virtuous deeds bear fruit.

*They, a sight of whom banishes, evil-inclination, are my friends.  
I have searched the whole world through, but Serf Nanak says very rare are such persons.*

ਜਿਨਾ ਦਿਸੰਦੜਿਆ ਦੁਰਮਤਿ ਵੰਵੈ ਮਿਤ੍ਰ ਅਸਾਡੜੇ  
ਸੇਈ॥  
ਹਉ ਢੂਢੇਦੀ ਜਗੁ ਸਥਾਇਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਵਿਰਲੇ  
ਕੇਈ॥ ਅੰਗ - 520

These liberated souls are sent to the world, under orders of Waheguru, to show the straight path to the world; but they are very rare. In one of his verses, Bhai Nand Lal says, that whatever men of God come to

the world, they are sent by God to put on the right path those who have lost their way. In other words if your eyes are keen to have a glimpse of God, know it that devotees of God come into this world to infuse the faith of God in mankind :

*Whenever the pious godly men come into the world,  
They come to guide those who have lost their way,  
'Goya avers', if these eyes ardently long for God,  
The God men come to give them the glimpse of The Divine.*

ਦਰ ਦਹਰ ਕਿ ਮਰਦਾਨਿ ਖੁਦਾ ਆਮਦਹ ਅੰਦ॥  
ਬਰ ਗੁਮ ਬੁਦਗਾਂ ਰਾਹਨੁਮਾ ਆਮਦਹ ਅੰਦ॥  
'ਗੋਯਾ' ਅਗਰ ਈ ਚਸ਼ਮਿ ਤੋ ਮੁਸ਼ਤਾਕਿ ਖੁਦਾ  
ਅਸਤ॥  
ਮਰਦਾਨਿ ਖੁਦਾ ਖੁਦਾਨੁਮਾ ਆਮਦਹ ਅੰਦ॥  
(ਦੀਵਾਨਿ ਗੋਯਾ ਭਾਈ ਨੰਦ ਲਾਲ ਜੀ)

The word 'Sant' occurs in Guru Granth Sahib more often than in the scriptures of any other religions of the world. And it has been made fully clear that for the seekers the company of a saint had been ordained. Also identity marks of one whom to call the saints have been given in detail; namely his mode of life, his behaviour with others, the way he talks and how he lives his life. This is the commandment of Guru Maharaj :

*Who with every breath and morsel of food, forget not God's Name and within whose mind is this spell, they alone are the blessed and they alone are the perfect saints, O Nanak.*

ਜਿਨਾ ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ਨ ਵਿਸਰੈ ਹਰਿ ਨਾਮਾਂ ਮਨਿ  
ਮੰਤ੍ਰ॥  
ਯੰਨੁ ਸਿ ਸੇਈ ਨਾਨਕਾ ਪੂਰਨੁ ਸੋਈ ਸੰਤੁ॥  
ਅੰਗ - 319

Another command is :

*God's saint is the embodiment of the Lord God, he, who within his mind enshrines the Name of God.  
He, on whose forehead his destiny is writ,*

through the Guru's instruction he contemplates within his mind God's Name.

ਹਰਿ ਕਾ ਸੰਤੁ ਹਰਿ ਕੀ ਹਰਿ ਮੁਰਤਿ  
ਜਿਸੁ ਹਿਰਦੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੁਰਾਰਿ॥  
ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ ਹੋਵੈ ਜਿਸੁ ਲਿਖਿਆ  
ਸੋ ਗੁਰਮਤਿ ਹਿਰਦੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਰਿ॥

ਅੰਗ - 1135

Bhagat Ravidas says this about the *Sants* - "O Waheguru, I have recognised those *Sants*, who are your form and spirit, whose company is your life and breath, and who have been imparted True Knowledge, given by the *Satguru* (True Teacher). O God of all gods, bless me with the company of such *Sants*, also teach me to feel bliss in the sayings of the those saints and teach me the love of the great saints. Let me have the knowledge of the activities of the *Sants*, and of their preachings, about the spiritual path; also do me the favour so that I may serve the servants of such *Sants*. Another thing I beg of Thee - O Waheguru, keep me far aloof from meeting those who are sinners and who are forgetful of you. That person alone is wise who realises that there is no difference between the *Sants* and the Absolute and Formless God :

*Thine saints are Thy body, and their association is my life.*

*By the True Guru's given gnosis, I deem the saint as god of gods.*

*The society of saints, the relish of saints' converse and the love of saints, Grant unto me, O Lord of the gods. Pause.*

*Saints' character, the way of life of the Saints and the service of the servant of the saints, I ask for. I pray for one thing more, the desire-fulfiller gem of Thine devotion.*

*Show me not the wicked and the sinner.*

*Ravidas says, "He alone is wise who knows this.*

*That between the saints and the Infinite Lord, there is no difference.*

ਸੰਤ ਤੁਝੀ ਤਨੁ ਸੰਗਤਿ ਪ੍ਰਾਨ॥

ਸਤਿਗੁਰ ਗਿਆਨ ਜਾਨੈ ਸੰਤ ਦੇਵਾ ਦੇਵ॥

ਸੰਤ ਚੀ ਸੰਗਤਿ ਸੰਤ ਕਥਾ ਰਸੁ

ਸੰਤ ਪ੍ਰੇਮ ਮਾਝੈ ਦੀਜੈ ਦੇਵਾ ਦੇਵ॥

ਸੰਤ ਆਚਰਣ ਸੰਤ ਚੋ ਮਾਰਗੁ

ਸੰਤ ਚ ਓਲੁਗ ਓਲੁਗਣੀ॥

ਅਉਰ ਇਕ ਮਾਗਉ ਭਗਤਿ ਚਿੰਤਾਮਣਿ॥

ਜਣੀ ਲਖਾਵਹੁ ਅਸੰਤ ਪਾਪੀਸਣਿ॥

ਰਵਿਦਾਸੁ ਭਣੈ ਜੋ ਜਾਣੈ ਸੋ ਜਾਣੁ॥

ਸੰਤ ਅਨੰਤਹਿ ਅੰਤਰੁ ਨਾਹੀ॥ ਅੰਗ - 486

For meeting such saints, we bow in a prayer at the feet of Waheguru.

*Be Thou merciful, O my Lord that I may pass my life in the society of saints.*

*They, who forget Thee, are born to die again and again and their sorrows end not ever.*

ਹੋਹੁ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਸੁਆਮੀ ਮੇਰੇ ਸੰਤਾਂ ਸੰਗਿ ਵਿਹਾਵੇ॥

ਤੁਧਹੁ ਭੁਲੇ ਸਿ ਜਮਿ ਜਮਿ ਮਰਦੇ

ਤਿਨ ਕਦੇ ਨ ਚੁਕਨਿ ਹਾਵੇ॥ ਅੰਗ - 961

At another place, it is stated that the Sant is a person, by contacting whom one can swim across the worldly ocean. The angels of death do not come near him, and one is saved from getting into the cycle of eighty four lakh births and deaths. This great ocean, which we call the world, is full of poison and in it when we forsake and forget God we suffer. One can cross this sea of poison only by interacting with men of God. As is said :

*The person who seeks the shelter of the saints, that person is saved.*

*By slandering the saints, O Nanak, the one is born again and again.*

ਸੰਤ ਸਰਨਿ ਜੋ ਜਨੁ ਪਰੈ ਸੋ ਜਨੁ ਉਧਰਨਹਾਰ॥

ਸੰਤ ਕੀ ਨਿੰਦਾ ਨਾਨਕਾ ਬਹੁਰਿ ਬਹੁਰਿ ਅਵਤਾਰ॥

ਅੰਗ - 279

Guru Ji also proclaims that those who are caught in the web of attachment and jealousy, love & enmity, who think in terms of mine and thine, due to their not having the knowledge of God, and those who talk ill of others, in be-little their; only waste

(... to be continued)

# ਆਤਮ ਮਾਰਗ ਦੀ ਨਵੀਂ ਮੈਂਬਰਸ਼ਿਪ ਅਤੇ ਰਿਨੀਊਵਲ ਅਤੇ ਪੁੱਛਗਿਛ

ਸ਼੍ਰੀ ਮਾਨ ਸੰਤ ਬਾਬਾ ਵਰਿਆਮ ਸਿੰਘ ਜੀ ਮਹਾਰਾਜ ਰਤਵਾੜਾ ਸਾਹਿਬ ਵਾਲਿਆਂ ਦੁਆਰਾ ਲਿਖਤ ਪੁਸਤਕਾਂ, ਗਾਇਨ ਕੀਤੀਆਂ ਸ਼ਬਦ ਗੁਰਬਾਣੀ ਕੀਰਤਨ ਦੀਆਂ ਕੈਸਟਾਂ, CD.'S, VCD.'S, DVD.'S MP3 ਦੇ ਆਪ ਜੀ ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਐਡਰੈਸਾਂ ਤੋਂ ਮੰਗਵਾ ਸਕਦੇ ਹੋ ਜੀ।

For all enquiries about 'Atam Marg' viz. renewal, new membership, non-receipt of the magazine etc. and also for procuring audios, videos & CDs; and books authored by Sant Waryam Singh Ji, please contact the following

## England (U.K.)

For U.K. renewal of Atam Marg Magazine please forward cheque £ 40.00 payable to A.M.S.S.E.C.T. (U.K.) 9 Elizabeth Road, Walsall, West Midlands WS5 3 PF

**Atam Marg Spiritual Scientific  
Educational Charitable Trust (U.K.)**

**9 Elizabeth Rd.,**

**Walsall West Midlands, WS5 - 3PF U. K.**

Contact : Mrs. Gurbax Kaur,  
Mr. Jagtar Kulair : Tel : 0044-1212002818  
Fax : 0044-1212002879  
Voicemail : 0044-8701654402  
Raj Mobile : 0044-7968734058  
Email : info@atammarguk.com

## U.S.A.

**Vishav Gurmat Roohani Mission  
Charitable Trust,**

Contact : Bhai Amardeep Singh Atwal,  
2755, Guildhall Dr., San Jose,  
Ca - 95132, U.S.A

Phone :- 001-408-263-1844,  
vgrmctusa@yahoo.com

**S. Baldev Singh Grewal**

**Fremont, U.S.A - 001-510-249-9456**

## Canada

**Bhai Sarmukh Singh Pannu**

Phone - 001-604-433-0408

**Bhai Parmjit Singh Sandhu**

Cell: 001-250-600-3072

**Bhai Tarsem Singh Bains**

Cell : 001-604-862-9525, Phone : 001-604-599-5000

## IN INDIA

09417214391, 09417214379 09814612900, 9417214378

Email: atammarg1@yahoo.co.in

## Australia

**Bibi Jaspreet Kaur**

Cell : 0061-406619858

Email :- jaspreetkaur20@hotmail.com

## Foreign Membership

	Annual	Life
U.S.A.	60 US\$	600 US\$
U.K.	40 £	400 £
EUROPE	50 Euro	500 Euro
AUS.	80 AUD\$	800 AUD\$
CANADA	80 CAN\$	800 CAN\$

क्षेत्र सुल्तानपुर लोधी तथा लोहियाँ में रतवाड़ा साहिब ट्रस्ट के वर्तमान मुखी, सन्त बाबा लखवीर सिंह जी की अगुवाई में वाइस चेयरमैन बाबा करनैल सिंह जी तथा सेवादार बाढ़ पीड़ितों को गर्म बिस्तर वितरित करते हुए।

**बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों के लिए रवाना होने से पहले गर्म बिस्तरों से भरे हुए ट्रक**



# महान गुरमति रूहानी समागम

30-31 अक्टूबर 1-2-3 नवम्बर 2019



आओ! दर्शन  
प्रदान करो जी

बाबा लखबीर सिंह जी, वर्तमान मुखी  
विश्व गुरमति रूहानी मिशन चैरिटेबल ट्रस्ट

रतवाड़ा साहिब, डाकखाना - मुल्लांपुर गरीबदास, तहसील - खरड़,  
जिला - साहिबजादा अजीत सिंह नगर ( मोहाली ), न्यू चण्डीगढ़

सम्पर्क नम्बर : 96461-01996, 98551-32009, 98889-10777, 98146-12900

Website : [www.ratwarasahib.in](http://www.ratwarasahib.in) E-mail : [sratwarasahib.in@gmail.com](mailto:sratwarasahib.in@gmail.com)